व्रत वैभव

भाग-1

(व्रत विवरण एव मत्र)

निर्देशन

प गुलाबचन्द्र 'पुष्प'

सकलन/सयोजन

ब्र जयकुमार 'निशात'

सम्पादक

ब्र विनोद जैन, पपौराजी

प विनोद कुमार, रजवास

- प्रकाशक -

प मन्नूलाल जैन प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट्रस्ट

पुष्पभवन, टीकमगढ (म०प्र०) 472001

फोन- 07683-243138

ग्रन्थ- **व्रत वैभव**
आशीर्वाद- आचार्य विद्यासागर जी महाराज
प्रेरणा- उपाध्याय श्री 108 ज्ञानसागरजी महाराज
निर्देशन- प गुलाबचन्द्र पुष्प
सकलन/सयोजन- ब्र जयकुमार निशान्त
सम्पादक- ब्र विनोद जैन पपौराजी प विनोदकुमार रजवास
अवसर- श्रीमज्जिनेन्द्र पचकल्याणक जिनबिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव
श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बडागाँव (खेकडा) उ प्र
सान्निध्य- सराकोद्धारक उपाध्याय श्री 108 ज्ञानसागरजी महाराज ससघ
आवृत्ति- प्रथम-1100
प्राप्तिस्थान

1 **ब्र जयकुमार निशात ,**
प मन्नूलाल जैन प्रतिष्ठाचार्य स्मृति ट्रस्ट
पुष्प भवन टीकमगढ (म0प्र0) 472001 फोन- 07683-243138

2 **अरिहत साहित्य सदन**
4 रेनवो विहार मुजफ्फरनगर(उ0प्र0) फोन 0131-2433257

3 **गजेन्द्र ग्रन्थमाला**
2578 गली पीपल वाली धर्मपुरा दिल्ली- 110006 फोन-9810035356

4 **श्री दिगम्बर जैन पञ्चबालयति मन्दिर**
विद्यासागर नगर सत्यम गैस के सामने एम जी रोड इन्दौर-10
फोन- 0731-2571851

5 **सतोषकुमार जयकुमार बैटरी वाले**
कटरा बाजार सागर (म प्र) फोन-07582-243736 244475

लागत मूल्य- 80 00
आवरण तथा शब्द सज्जा-
ए व्ही एस कम्प्यूटर टीकमगढ (म0प्र0) फोन-07683-240047

मुद्रक - **एन एस इन्टरप्राईजिस**
2578, गली पीपल वाली धर्मपुरा, दिल्ली-**110006**
मॉ० **9810035356, 9312200580**

जैन विद्या प्रशिक्षण शिविर

5 जून से 12 जून 2005

सान्निध्य -

उपाध्यायरत्न श्री गुप्तिसागर जी महाराज

सप्रेम भेट

श्रीमती कमला देवी जैन

धर्म चन्द जैन कु रमा जैन

पुष्पा जैन मा अशुल जैन

रुचिका ध प श्री कपिल जैन

नित्या

पं गुलाबचन्द्र 'पुष्प' प्रतिष्ठाचार्य
को प्राप्त सम्मान राशि का
ग्रन्थ प्रकाशन में सदुपयोग

1 पुष्पाञ्जलि ग्रन्थ प्रकाशन समिति
2 ऋषभाञ्चल ध्यान योग केन्द्र
3 दशलक्षण पर्व 2004 ऋषभाञ्चल
4 श्रीमज्जिनेन्द्र पचकल्याणक पचगजरथ महोत्सव सिद्ध क्षेत्र पावागिरी
5 पार्श्वनाथ पूजा समिति मन्दिर क्रमाक 14 पपौरा जी
६ श्रीमज्जिनेन्द्र पचकल्याणक गजरथ महोत्सव पिपलानी भोपाल
7 श्रीमज्जिनेन्द्र पचकल्याणक गजरथ महोत्सव करगुवाजी झासी

आवरण पृष्ठ का परिचय

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सीरौन जी (ललितपुर) उ प्र मे स्थापित आचार्य परमेष्ठी बिम्ब जिसमे मुनि आर्यिका श्रावक एव श्राविका भी दृष्टिगोचर है।

व्रत वैभव की विषय वस्तु

व्रत वैभव भाग 1- (व्रत विवरण एव मत्र)

व्रत वैभव भाग 2- (व्रत पूजा एव कथाएँ)

व्रत वैभव भाग 3- (व्रत उद्यापन विधान)

व्रत वैभव भाग 4- (व्रत उद्यापन विधान)

* व्रत के दिन व्रत मत्र की 3 माला अवश्य करे।
* व्रत का उद्यापन व्रत के दिन ना करके पारणा के दिन करे अथवा एक व्रत अतिरिक्त करके करे।

व्रत क्यो ?

* व्रत मानसिक शाति के प्रबल निमित्त है।
* व्रत मोक्ष महल की सीढी हैं।
* व्रत मन वचन काय की पवित्रता के साक्षात् कारण है।
* व्रत ही शाश्वत लक्ष्य की कुजी हैं।
* व्रत मानवपर्याय के लिए उपहार हैं।
* परिणाम विशुद्धि व्रताचरण से ही सभव है।
* व्रतो का पूर्णफल सम्यक्विधि से ही प्राप्त होता है। मात्र उपवास (लघन) से नही।
* व्रतों के बिना मानव जीवन अधूरा है।
* व्रत साधना है मनौति नहीं।
* व्रतो के प्रति अरुचि/प्रमाद/अवमानना का भाव नही करना चाहिए।

अनुक्रमणिका

परिशिट

विशिष्ट जाप मत्र

प्रकाशकीय

गृहस्थ जीवन में होने वाले दोषों से श्रावक चाहकर भी नहीं बच पाता है उससे दोष/पाप होते रहते हैं। उनके निराकरण के लिए तीर्थंकरों ने अपनी देशना में श्रमण धर्म के साथ श्रावक धर्म का भी विवेचन किया है। जिसके आधार से श्रावक अपनी शक्ति अनुसार गृहस्थ धर्मों का निर्वहन कर व्रतों का पालन करके मुनि धर्म की ओर अग्रसर होने के भाव से धर्माचरण करें इसलिए आचार्यों ने श्रावको के लिए व्रत करने का निर्देश दिया है। जिसमें व्रतों का स्वरूप अवधि जापमन्त्र कथा उद्यापन आदि का विवेचन किया है। किन्तु विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रीय परम्परा अनुसार व्रत किये जाने से व्रतों की विधि आदि में विकृति एव शिथिलाचार आ जाने के कारण आचार्यों को समय-समय पर क्षेत्र एव परिस्थितियों के अनुरूप व्रतों के स्वरूप में परिवर्तन करना पडा फिर भी व्रतों का पालन नगन्य हो गया था। अनेक व्रतो का सृजन भी समयानुसार हुआ। आचार्यो ने हमे अनेक व्यवस्थायें अवस्था के अनुसार प्रदान की है। यह परिवर्तन काल के लम्बे-लम्बे अन्तरालों में हुआ है अत इन व्रतों की एक साथ उपलब्धि दुरूह हो गई थी। जिससे भिन्न-भिन्न क्षेत्र के भिन्न-भिन्न काल के श्रावकों को शास्त्रानुसार व्रत विधि की समग्र जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती थी। जिससे श्रावक व्रतों का पालन एव उद्यापन आदि नहीं कर पाते थे। गृहस्थ धर्म के पालन की सुविधा के लिए व्रतों के समग्र विवेचन की आवश्यकता थी।

इसके लिए पडित प्रवर प्रतिष्ठाचार्य श्री गुलाबचन्द्र जी के निर्देश से ब्र जय निशान्त ने 475 व्रतों के नाम अवधि विधि जापमन्त्र पूजा आदि को सकलित किया है। प पुष्प जी जैन जगत के सर्वमान्य प्रामाणिक एव निर्दोष क्रिया को स्वीकारने वाले सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठाचार्य हैं। उनके इन गुणों का ब्र निशात जी ने शब्दश अनुसरण किया है। इनके

द्वारा जिन व्रतो का सकलन/सयोजन किया गया है वे निर्दोष प्रामाणिक एव शास्त्र सम्मत हैं। इसमे किसी प्रकार की शका आदि की आशका नहीं रह जाती है क्योंकि आपके द्वारा जितने साहित्य का सृजन हुआ हो रहा है वह साधु/विद्वान एव समाज मे सर्वमान्य रहा है।

अक्षर-अक्षर पिरोकर शब्द-विन्यास करके साहित्य सृजन और सम्पादन के दुरूह कार्य को समर्थ विद्वान ही कर सकता है। कई लोगों के श्रम से ही इस ग्रन्थ की सयोजना हो सकी है। सम्पादक द्वय का श्रम श्लाघनीय है।

इस प्रामाणिक व्रत वैभव नामक ग्रन्थ को प्रतिष्ठाचार्य प मन्नूलाल जैन स्मृति ट्रस्ट प्रकाशित कर गौरवान्वित हुआ है। इस ट्रस्ट की स्थापना सन 1995 मे सर्वोपयोगी सत् साहित्य के सृजन/प्रकाशन एव प्रचार-प्रसार के लिए हुई थी। इस ट्रस्ट मे अत्यल्प कार्यकाल में प्रतिष्ठा रत्नाकर प्रतिष्ठा पराग आदि सात जनोपयोगी ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके है। जो ट्रस्ट का गौरव हैं। इसी श्रृखला में व्रत वैभव को प्रकाशित करके इसे नगर नगर गाँव-गॉव तक पहुँचाने का सकल्प ट्रस्ट ने लिया है। ट्रस्ट का उद्देश्य है कि इस ग्रन्थ से व्रतो का स्वरूप जानकर श्रावक गृहस्थ जीवन के दोषों से अपने आत्म कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे।

हम मगल भावना के साथ ग्रन्थ के निर्देशक सकलक/सयोजक सपादक मुद्रक आदि समस्त सहयोगी जन का आभार मानते हुए इनसे दीर्घ साहित्य सेवा की कामना करते है।

प्रतिष्ठाचार्य प मन्नूलाल जैन स्मृति ट्रस्ट

टीकमगढ

सम्पादकीय

मानव जीवन का चरम लक्ष्य दु ख की निवृत्ति और सुख की प्राप्ति है। यही कारण है कि समस्त ग्रन्थों में दु ख के कारण और सुख प्राप्ति के उपायों का बृहद् निरूपण प्राप्त होता है। प्राय सभी शास्त्रों को पढकर अथवा सुनकर आत्मसात करने का प्रयास करते हैं किन्तु कोई विरले ही व्यक्ति ऐसे होते हैं जो यथार्थ में आत्मसात करने में सक्षम हो पाते हैं। उन्हीं व्यक्तियों में यदि प गुलाबचन्द्रजी 'पुष्प' का नाम लिया जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। प गुलाबचन्द्रजी पुष्प एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी हैं। जिस व्यक्तित्व की प्रतिभा मे दूसरे अपने प्रतिबिम्ब सहजता से देख लेते हैं जिस विराट व्यक्तित्व मे ऐसी क्षमता विद्‌यमान हो उसका शब्दों के द्वारा मूल्याकन करना निरर्थक सा प्रतीत होता है। प्रश्न ये है कि प गुलाबचन्द्र 'पुष्प' जी का यह व्यक्तित्व क्या जन्मजात था यदि इस प्रश्न के गवाक्ष में अन्वेषण किया जाये तो उत्तर प्राप्त होता है नहीं। उन्होंने अपने जीवन में उस पुरुषार्थ को क्रियान्वित किया है जिससे उनका यह व्यक्तित्व देखने में आ रहा है।

प जी एक ऐसे वैज्ञानिक एव जिज्ञासु मानव हैं जिन्होंने अपने जीवनकाल में रूढिवादिता से समझौता नहीं किया यदि उनके पास कोई समस्या आई तो उन्होंने आगम के पक्ष विद्वानों के दृष्टिकोण वर्तमान प्रसग एव यथार्थ मूल्याकन कर उसे सुलझाने का प्रयास किया। यही कारण है कि यदि उनकी हस्तलिखित प्रतिष्ठा विषयक डायरियाँ ज्योतिष सम्बन्धी कॉपी दिविध सदर्भों से समाहित रहती हैं। आज भी यदि उनके अध्ययन कक्ष में उनसे यदि कोई चर्चा करना चाहता है तो पूर्वाग्रह हठाग्रहिता को छोड्कर धैर्यता के साथ आगम के सदर्भों से प जी सदैव वार्ता के लिए तत्पर रहते हैं। यह तो प जी के बाह्य पक्ष का एक सामान्य आकलन हो सकता है किन्तु यदि उनका अभ्यतर जीवन देखा जाये तो वे प्रति समय अपने परम ध्येय के प्रति श्रद्धावान होते हुए पर्व दिवसों में उपवास समय पर सामायिक हित मित प्रिय भाषण सतुलित आहार-बिहार

एव निषिद्धयाशन में सदैव प्रयत्नरत रहते हैं। श्रावक के व्रत जितनी निष्ठा के साथ पालन करना चाहिए प्राय वह निष्ठा उनमें दृष्टिगोचर होती है। अतिचार और अनाचारों के पति निरन्तर जागृत रहे हैं और रहते हैं।

व्रत वैभव नामक कृति का प्रकाशन इसलिए हुआ कि श्रावक बहुत से व्रतों को अपने जीवन में आचरित करना चाहते हैं। जैन ग्रन्थों में व्रतों के यथा कनकावलि एशोनव आदि का नामोल्लेख तो प्राप्त होता है किन्तु उनके स्वरूप आदि के विषय में विविध मान्यताएँ हैं तथा व्रत सम्बन्धी सागोपाग विषय का किसी भी ग्रन्थ में पूर्ण विवरण उपलब्ध नहीं होता है। पूर्व में इस विषय में बहुतेरे प्रयास भी हुये हैं यथा व्रत विधान सग्रह आदि। किन्तु ये ग्रन्थ सरलता से व्रत विधि के निरूपण में पूर्णत सक्षम नहीं हुए हैं इसी कारण से दीर्घकाल से प जी के मन में यह भाव था कि व्रतों का एक सागोपाग विवेचक ग्रन्थ सग्रहीत किया जाए जो व्रत अनुष्ठान करने वालों के लिए सेतु का कार्य करे। इसी भावना को साकार करने के लिए प जी साहब चिरकाल से व्रत सम्बन्धी सामग्री का सग्रह करते आ रहे हैं। जिसके फलस्वरूप यह ग्रन्थ आपके सामने प्रस्तुत है। इस ग्रन्थ के सयोजन में प जी के सुपुत्र चि ब्र जय कुमार निशान्त ने इस प्रकार से कार्य किया है जिस प्रकार कि मन्दिर के निर्माण के पश्चात् मन्दिर पर कलशारोहण का कार्य होता है। उन्होंने दिगम्बर परम्परा में मान्य व्रतों का उल्लेख उन अभिलेखों के साथ में किया है जो व्रतों की उपयोगिता विधि सावधानियाँ इत्यादि को इस प्रकार से प्रस्तुत करता है कि पाठक सहज ही उनके स्वरूप को उपलब्ध कर लेता है।

यह ग्रन्थ चार भागों में विभक्त है प्रथम भाग व्रत विषयक विशिष्ट सामग्री से सयुक्त है। इसी भाग में पाठकों की सुविधानुसार प्रत्येक मासों में करणीय व्रत तथा व्रत से सम्बन्धित तिथि एव अकारादि क्रम में 475 व्रतों का अवधि विधि पूजन जाप उद्यापन आदि का निरूपण उपलब्ध है।

इसी ग्रन्थ के द्वितीय ाग म सयोजक ने बडी कुशलता से परिशिष्ट सहित दैनिक उपलब्ध सक ा व्रतों की लगभग 27 पूजाएँ एव उपयोगी भक्तियाँ

समाहित की हैं। इसी भाग में उन अभिलेखों को समाहित किया गया है जो व्रतों की ऐतिहासिकता वैज्ञानिकता इत्यादि सामग्री को प्रस्तुत करते हैं।

इस ग्रन्थ के तृतीय एव चतुर्थ भाग में व्रतों के उद्यापन हेतु अकारादि क्रम से उपयोगी विधानों का सकलन करके इस ग्रन्थ को सर्वांगीण एव सर्वोपयोगी बनाया गया है।

ग्रन्थ वैशिष्टय

-व्रत विषयक उपलब्ध ग्रन्थों में 475 व्रतों का निरूपण करने वाला यह प्रथम ग्रन्थ होगा।

- मासों में करणीय व्रत एव अकारादि क्रम से व्रतों का नामोन्लेख इस ग्रन्थ के अलावा अन्यत्र देखने में नहीं आता है।

- प्राचीन दिगम्बर परम्परा का निर्दोषता से पोषण करने वाले व्रतों के नामोल्लेख और स्वरूप सहित विवरण अन्यत्र दुष्प्राप्य है।

- व्रतों में अनुष्ठेय मत्र जाप पूजन उद्यापन विधान इस ग्रन्थ के अलावा अन्यत्र सुलभ नहीं हैं।

किसी भी ग्रन्थ का विशिष्ट रूप तब तक पूर्ण नहीं होता जब तक कि परम गुरुओं का आशीष न हो इस ग्रन्थ के प्रेरणास्रोत आचार्य गुरुवर विद्यासागर जी एव आचार्य मुनि विद्यानदजी हैं। प गुलाबचन्द्रजी पुष्प एव ब्र जय कुमार निशान्त' ने समय-समय पर परम गुरुओं/ मुनिराजों का परामर्श भी लिया है जो इस विषय के पारगत एव निष्णात् विद्वान हैं उनके प्रति हृदयाभार के साथ परम पूज्य राष्ट्रसत विद्यानद जी सराकोद्धारक उपा ज्ञानसागर जी मुनि श्री सुधासागर जी मुनि श्री प्रमाणसागर जी मुनि श्री विशुद्धसागर जी मुनि श्री सौरभसागर जी मुनि श्री अभयसागर जी मुनि श्री प्रसादसागर जी एव ऐलक श्री सिद्धातसागर जी का नाम विशिष्ट रूप से उल्लेखनीय है।

साहित्य सयोजना करना और उसे जन सामान्य तक पहुँचाना कितना कठिन कार्य होता है यह तो साहित्य सेवी ही जानते हैं। इस ग्रन्थ के सयोजन में अर्चना जैन(पम्मी) को किस रूप में स्मरण किया जाये उसे शब्दों में सयोजित

करना सभव नहीं है क्योंकि उन्होंने अपने व्यस्ततम क्षणों में पूर्ण समर्पण के साथ ग्रन्थ को आकार देने में जो सहयोग दिया अद्वितीय है। मनीष जैन(सजू) एक ऐसे युवा होनहार समर्पित मनीषी हैं जिन्होंने सदैव निष्ठा के साथ कार्य किया है साथ ही अनेकान्त परिवार की बहिनो ने प्रत्यक्ष परोक्ष रूप से इसकी सयोजना में अपना बहूमूल्य समय दिया है। अक्षर सयोजन में दीपक जैन (ए व्ही एस कम्प्यूटर) एव मुद्रण में श्री नीरज जैन (दिगम्बर) का सहयोग सराहनीय है जिन्होंने अल्प समय में अथक श्रम करके ग्रन्थ जन सामान्य तक सुलभ कराया है।

इसके साथ ही हम डॉ सुरेन्द्र जैन पठा अभिनन्दन साधेलिय के हृदय से आभारी है क्योंकि उन्होने अपने उपयोगी क्षणों से भी समय निकालकर हमे कृतार्थ किया है। आशा है कि यह ग्रन्थ श्रावको को मुक्तिपथ में पाथेय बनेगा।

–ब्र विनोद जैन (पपौरा)
प विनोद जैन (रजवास)

आमुख

सकल्प पूर्वक सेव्ये नियमोऽशुभ कर्मव ।
निवृत्तिर्वा व्रत स्याद्वा प्रवृत्तिः शुभ कर्मणि।।

अर्थात् सेवन योग्य विषयों में सकल्प पूर्वक नियम करना अथवा हिसा असत्य चौर्य कुशील और परिग्रह इन अशुभ कर्मों से सकल्प पूर्वक विरक्त होना या शुभ कार्यों में प्रवृत्ति होना व्रत कहलाता है। यहाँ तत्त्वार्थसूत्र के सप्तम अध्याय के अनुसार शुभाश्रव रूप अहिसा सत्य अचौर्य ब्रह्मचय परिग्रह परिमाणाणुव्रत तथा दान आदि शुभ कार्यों मे प्रवृत्त होने से शुभ कर्मों का आश्रव होता है। यह श्रावक के कर्तव्यों मे शामिल है। असत् कार्यो से निवृत्ति और सत्कार्यों मे प्रवृत्ति दोनों का ही अभिप्राय एक है। व्रत के स्वरूप का यह स्पष्टीकरण है। तत्त्वार्थ सूत्र के नवम अध्याय मे सवर के अन्तर्गत वारह भावना में सवर भावना का लक्षण इस प्रकार है।

जिन पुण्य पाप नहि कीना, आतम अनुभव चित दीना।
तिन ही विधि आवत रोके, सवर लहि सुख अवलोके।।

पुण्य पाप दोनों के आश्रव निरोध को सवर कहते हैं। द्रव्य सग्रह गाथा 35 मे सवर के भेद एव व्रत का लक्षण शुभाशुभ रागादि विकल्पों से रहित बताया है।

भावार्थ यह हे कि व्रत श्रावक के लिए प्रवृत्तिरूप शुभाश्रव का कारण हैं और पापाश्रव निवृत्ति रूप सवर भी है जो शुभोपयोग के अतर्गत है। वही व्रत पुण्य-पाप निवृत्ति रूप शुद्धोपयोग के होने पर निश्चय रत्नत्रय रूप हो जाता है। विषय-कषाय के साथ किया गया उपवास सार्थक नहीं होता है।

कषाय विषयाहारो त्यागोयत्र विधीयते।
उपवास सु विज्ञेयो शेष लघनक विदु ।।

अर्थ- कषाय और इद्रिय विषयो का जहाँ त्याग किया गया है उसे

उपवास कहते हैं। इसका उददेश्य यह है कि हमारी इद्रियाँ हमारे वश में बनी रहें हम इद्रियो के अधीन न हो जावें और आत्म सन्मुख रहते हुऐ सामायिक स्वाध्याय आदि सत् प्रवृत्तियों में सलग्न रह सकें। किसी रोगादि या शारीरिक कारण से केवल आहार छोडना उपवास न होकर लघन कहलाता है। एक दिन-रात की अवधि में दिन मे एक बार शुद्ध आहार लेना एकाशन कहलाता है। विधि पूर्वक किया गया व्रत ही महाव्रत की भूमिका बनाता है जो परम्परा से मोक्ष को प्राप्त कराता है।

इस ग्रन्थ में 475 व्रतो का उल्लेख है। इन सबके उद्यापन की विधि भी है जो अन्यत्र उपलब्ध नही है। कहीं है भी तो सस्कृत में है हिन्दी में सरल रूप मे नही है।

दशलक्षण नदीश्वर णमोकार मत्र कर्म निर्झर लब्धि विधान रविव्रत आदि हिन्दी पद्यो मे विस्तृत उद्यापन विधि प्रस्तुत ग्रन्थ मे प्रकाशित की गई है। सभी व्रतो की ऐसी विधि प्रथम बार प्रकाशित हो रही है।

श्री राजवैद्य प बारेलाल जी जैन ने सन 1952 में जैन व्रत विधान पुस्तक मे अनेक उपयोगी व्रतों के साथ 170 व्रतो का उल्लेख किया है। परतु इसमे 475 व्रतो का वर्णन है। अनेक नए व्रत भी है।

व्रतो की उद्यापन विधि आवश्यक थी जिसे इस ग्रन्थ में लिखकर कमी की पूर्ति कर दी गई है। उद्यापन न कर सकें तो व्रत को दुगना करने पर उसकी पूर्ति मानी जाती है।

व्रतोद्यापन में जो पूजा के साथ किन्ही वस्तुओ के वितरण का रिवाज है उसके सबध मे हमारा सुझाव है कि अपनी शक्ति के अनुसार ही व्यय करना चाहिए। उसका सकेत भी हमने उद्यापन विधि मे पढा है। शक्ति से बाहर प्रदर्शन करना उचित नहीं है।

व्रत के दिनों मे निश्चित मत्र का जप पूजा स्वाध्याय और धर्माराधन तथा आरभ त्याग के साथ शातिपूर्वक दिवस व रात्रि व्यतीत करना चाहिए।

ब्रह्मचर्य पूर्वक रहना आवश्यक है। भोजन भी ऐसा गरिष्ट न हो जो

रात्रि को पिपासा आदि बाधाएँ उत्पन्न कर पीडा पहुँचाए। जहाँ तक सभव हो व्रत का सकल्प किसी दिगम्बर गुरु के समक्ष करना चाहिए।

व्रतों को करने के पूर्व कुछ बिन्दुओ पर मुख्यत से विचार करना चाहिए, जो निम्न हैं-

1 त्याग यम और नियम रूप होता है। मद्य माँस मधु एव पाँच पाप आदि का त्याग यम (जीवन पर्यन्त) रूप होता है। नियम रूप त्याग ये व्रत आदि हैं।

2 उपवास में जल से मुख शुद्धि नही की जाती है।

3 मदिर में विराजमान प्रतिष्ठित जिनेन्द्र प्रतिमाएँ अर्हत्परमेष्ठी की है अत उनका अभिषेक हिन्दी या सस्कृत अभिषेक पाठ बोलकर करना चाहिए जन्म कल्याणक का पाठ बोलकर नहीं। अभिषेक जल मस्तक व आखों के ऊपरी भाग मे लगाना चाहिए। अभिषेक जल पीना या शरीर पर चुपडना दोष है अभिषकजल कूप में नही डालना चाहिए।

4 जैन धर्मानुसार सूर्योदय से 6 घडी का दिनमान माना है। उससे कम ग्राह्य नहीं है।

अष्टमी चतुर्दशी आदि व्रत भी उसी दिन किये जाते है। षोडशकारण दशलक्षण आदि भी इसी प्रकार किये जाते है। पचागो से ही हम अपने धर्मानुसार नियमों का पालन करते हैं। यदि पचाग की अष्टमी या दशलक्षण षोडशकारण का प्रथम दिन 6 घडी कम होता है तो एक दिन पहले से हमें ये व्रत आरभ करना चाहिए। बीच में दो तिथियाँ भी शामिल हो सकती हैं। ऐसी स्थिति में उक्त पूर्व दिन का हिसाब ठीक बैठ जाता है। दो तिथि भी हो तो व्रत पहली तिथि में करना चाहिए। अतिम दिन तो प्रत्येक व्रत का पूर्व से ही निश्चित रहता है। जैन धर्मानुसार जिसदिन छह घडी से कम हो तो आगे का दिन ही माना जाता है। षोडशकारण में कुल 32 दिन होते हैं। बीच में दिन घट गया हो तो प्रारभ दिन से एक या दो दिन पूर्व से प्रारभ करना चाहिए। यह व्रत मासिक नहीं मानना चाहिए। इसमें 32 दिन ही होते

है 16 उपवास और 16 पारणा या एकाशन करके यह व्रत पूर्ण होता है।

इस ग्रन्थ मे जो व्रत एव उद्यापन विधि का स्पष्ट और विशद् वर्णन किया गया है उन सबका अन्वेषण कर एक बडी कमी को पूर्ण करने वाले ब्र जय निशात जी का समाज आभारी है। वे श्री दिग जैन पचबालयति मदिर के विशाल आयोजन एव निर्माण के सूत्रधार है। उनका परिश्रम सराहनीय है। धार्मिक प्रवृत्ति वाले साधर्मी बन्धु इससे लाभ उठावे।

इन्दौर **नाथूलाल जैन शास्त्री**

प्रस्तावना

सयमोऽपि सदारक्ष्यो निज-कोष-समो बुधै ।
ततोऽधिक यतो नास्ति निधान जीवेन परम्।।

-कुरल काव्य 13/2

आत्म सयम की रक्षा अपने खजाने के समान ही करना चाहिए क्योंकि सयम से वढकर इस जीवन में और कोई निधि नहीं है। मानव जीवन इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि मानव जीवन में ही उत्कृष्ट सयम साधना हो सकती है।

यदि सयम-व्रत पालन न करें तो मनुष्य और पशुओं में अन्तर नही होता है। नरक गति में माधन हीनता है और स्वर्गो मे भोगाभिलाषा की अधिकता है वहाँ देव असयमी जीवन जीते है। पशु पर्याय में आगमानुसार अणुव्रत(देश सयम) धारण करने की पात्रता तो है परन्तु सकल सयम ग्रहण करने में पशु असमर्थ हैं। प द्यानतराय जी ने सयमधर्म की पूजा में स्पष्ट किया है- नरक सुरग पशुगति में नाहि । सयम के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कविवर द्यानतराय जी ने लिखा है- जिस बिना नहीं जिनराज सीझ, तू रुल्यो जग कीच में अर्थात् बिना सयम धारण किये जब तीर्थंकर को मोक्ष नहीं मिलता तब हम सामान्य श्रावकों को कैसे मिल सकता है ? अत हमें आत्मा को परमात्मा बनाने के लिए निरन्तर सयम साधना करना चाहिए। श्री रइधूकवि कहते हैं ' सयम बिन घडी नियत्थ जाऊँ अर्थात् सयम के बिना जीवन की एक घडी भी नहीं जाना चाहिए। हमारा जीवन सयम पूर्वक ही बीतना चाहिए क्योंकि आगामी आयु का बन्ध भुज्जमान आयु के त्रिभाग रूप अपकर्ष काल में होता है, यह त्रिभाग आठ बार आ सकता है। हमें पता नहीं है कि कब आयु का बन्ध समय आवेगा अत हमें प्रतिसमय सयम साधना में ही समय व्यतीत करना चाहिए। यदि असयमी अवस्था में आयुबन्ध हुआ तो अशुभ आयु का बन्ध होगा। अत सयम ही सुखी जीवन की आधार शिला है।

श्रावकों के कर्तव्यों में आचार्यों ने सयम को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। आचार्य गुणधर कहते हैं।

"दाण पूया सीलमुववासो चेदि चउव्विहो सावय धम्मो ।"

कषाय पाहुड सूत्र 82

दान पूजा शील और उपवास ये श्रावक के चार मुख्य कर्तव्य हैं। आचार्यों ने श्रावको के कल्याणार्थ विषय कषायो से बचने के लिए उपवास आदि को श्रावक का कर्तव्य बताया है।

आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने श्रावकों को निर्देश देते हुए कहा है-

"दाण पूजा मुक्ख सावयधम्मेण तेण विणा"

-रयणसार गाथा 10

श्रावक का धर्म दान-पूजा के बिना नही हो सकता।

आचार्य श्री पदमनन्दि ने श्रावक के षटकर्मो का उल्लेख करते हुए सयम व्रत दान आदि को पतिदिन करने का निर्देश दिया है।

देवपूजा गुरुपास्ति स्वाध्याय सयमस्तप ।
दान चेति गृहस्थाना षट्कर्माणि दिने-दिने।।

-पदमनन्दि पञ्च विशतिका अध्याय 6/7

देवपूजा गुरुभक्ति स्वाध्याय सयम तप और दान गृहस्थ को प्रतिदिन करने चाहिए। जब श्रावक सकल्प पूर्वक सयम का पालन करता है तो उसके परिणाम निर्मल होते है और वह अशुभ भावों से बचता है। रयण- सार में गाथा 59 से 61 तक आचार्य कुन्दकुन्द ने अशुभ और शुभ भावो का निम्नानुसार वर्णन किया है।

हिसादि पाप क्रोधादि कषाय मिथ्याज्ञान पक्षपात मात्सर्य अष्टमद दुरभिनिवेश अशुभ लेश्या विकथा में प्रवृत्ति होना अशुभ भाव हैं। अशुभ भाव को त्याग करने से सवर होता हैं।

छह द्रव्य पाँच अस्तिकाय सात तत्त्व नौ पदार्थ का चिन्तन बारह अनुप्रेक्षा रत्नत्रय दयाधर्म आदि परिणाम शुभ भाव हैं। श्रावक को

गृहस्थाश्रम में दैनिक आश्रव रोकने के लिए देवपूजा, स्वाध्याय, सयम, दान आदि का पालन अवश्य करना चाहिए। गृहस्थोचित कर्तव्यों का पालन करने से श्रावक अपने कर्मों की निर्जरा कर लेता है।

व्रताचरण की आवश्यकता-

मोह-तिमिरापहरणे, दर्शन-लाभादवाप्त-सज्ञानः
रागद्वेष-निवृत्यै, चरण प्रतिपद्यते साधु ।1।

-रत्नकरण्डक श्रावकाचार अध्याय -3/1

मोहान्धकार के दूर होने से सम्यग्दर्शन एव सम्यग्ज्ञान प्राप्त कर भव्य जीव रागद्वष की निवृत्ति के लिए चारित्र को धारण करता है। रागद्वेष आदि को नष्ट करने में सयम ही समर्थ है।

व्रतो को ग्रहण करने से ससारी जीवो के सुख का मार्ग प्रशस्त होता है। व्यक्ति महाव्रत/देशव्रत आदि का पालन कर आत्मकल्याण कर लेते है किन्तु असमर्थ हीन भाग्य वाले दीन-दु खी निरस्कृत व्यक्ति जो कि महाव्रत/ देशव्रत आदि धारण नही कर पाते वे सामान्य व्रतों के द्वारा अपना कल्याण करते है। पतित एव अज्ञानी व्यक्ति भी व्रत धारण कर पावन एव सुखी हो जाते है। पौराणिक ग्रन्थो मे उल्लेख है कि अनन्त भवों के दु ख उठाने वाले एव कुगतियो मे जन्म लेकर ससार भ्रमण करने वाले जीवों ने व्रतों के द्वारा सद्गति एव सुख प्राप्त किया है। ऐसी अनेक कथाएँ वर्णित हैं जो व्रताचरण की आवश्यकता को और भी महत्त्वपूर्ण बना देती हैं।

व्रती का लक्षण-

हिसादिक पाँच पापों से विरत होने के साथ-साथ त्रिशल्यों से मुक्त होना भी अनिवार्य है अन्यथा यथार्थ मोक्षमार्ग के साध्य तक पहुँचना कठिन होता है क्योंकि कामनाएँ कही न कहीं किसी न किसी रूप में विद्यमान रहतीं है जिससे साधना काल में चित्त निराकुलता को उपलब्ध नहीं कर पाता है इसीलिए नि शल्यो व्रती यह लक्षण सार्थक मालूम होता है।

मायानिदान-मिथ्यात्व-शल्या-भावविशेषतः।
अहिसादि-व्रतोपेतो व्रतीति व्यपदिश्यते ।

तत्त्वार्थसार 4/78

माया मिथ्या और निदान इन तीन शल्यों से रहित जो अहिसा आदि व्रतों का पालन करता है वही व्रती कहलाता है। आचार्य उमास्वामी ने व्रती का लक्षण नि शल्यो व्रती कहा है।

व्रती के भेद-

व्रती के विविध भेदों का जो उल्लेख जिनागम में दृष्टिगोचर होता है वह मुख्यत अतरग और बहिरग कषायों की क्षीणता के ऊपर आधारित है। अतरग कषायों के क्षय उपशम आदि अवस्थाओं के होने पर जो सक्लेष की हानि तथा विशुद्धि की वृद्धि होती है साथ ही अहिसादिक व्रतो के पालन में जो निष्ठा प्रकट होती है। इन सब मे अभ्यतर कषाय मल का अभाव ही जानना चाहिए। बाह्य निरतिचार व्रतों का पालन प्रशम सवेग अनुकपा आस्तिक्य भावो का प्रादुर्भाव तथा अष्टाग रूप सम्यग्दर्शन के अगो में प्रवृत्ति यह व्रती के बाह्य जीवन की अवस्था होती है। प्रत्येक व्रती का यह साध्य रहता है कि वह समस्त बाह्य और अतरग द्वन्द से छूटता हुआ परम प्राप्तव्य आत्मतत्त्व को उपलब्ध करे। इसी प्राप्तव्य हतु विविध सोपानो अथवा प्रतिमाओं का उल्लेख भी जिनागम में दृष्टव्य है इस प्रकार यह भदों का जो उल्लेख वह मूलत पर का विमोचन और स्व की उपलब्धता की ओर इगित करता है। प्रत्येक साधक को भेदों की परिभाषा में न उलझ कर उसके मूल साध्य को प्राप्त करना चाहिए।

अनगारस्तथागारी स द्विधा परिकथ्यते
महाव्रतोऽनगार स्यादगारी स्यादणुव्रत ।

तत्त्वार्थसार 4/79

अनगार और आगारी के भेद से व्रती दो प्रकार के हैं। महाव्रती अनगार(मुनि) कहलाते हैं और अणुव्रत के धारक आगारी (श्रावक) कहलाते हैं। चारित्र प्राभृत में भी इस प्रकार कहा गया है।

द्विविध सयमचरण सागार तथा भवेत् निरागारम्
सागार सग्रन्थे परिग्रहाद्रहिते निरागारम्।

चारित्र प्राभृतम 20

चारित्राचार के दो भेद हैं सागार और निरागार। सागार चरित्राचार परिग्रह सहित गृहस्थ के होता है। और निरागार चरित्राचार परिग्रह रहित मुनि के होता है और भी कहा है-

सकल विकल चरण तत्सकल सर्वसग-विरतानाम्
अनगाराणा विकल सागाराणा ससगानाम्।

रत्नकरण्डक श्रावकाचार अध्याय 3/4

वह चारित्र सकल चारित्र एव विकल चारित्र के भेद से दो प्रकार का है उनमे से सकल चारित्र समस्त परिग्रहों से रहित मुनियों के और विकल चारित्र परिग्रह युक्त ग्रहस्थों के होता है। शक्त्यनुसार श्रावक धर्म तीन प्रकार का है पाक्षिक नैष्टिक एव साधक। सप्तव्यसन का त्याग अष्टमूलगुण पालन रात्रिभोजन त्याग छानकर पानी पीना प्रनिदिन देव दर्शन करना यह पाक्षिक श्रावक का साधारण मयम है नैष्ठिक श्रावक का सयम निम्न प्रकार है।

दर्शन व्रत सामायिक प्रोषध सचित्त रात्रिभुक्तिश्च ।
ब्रह्मचर्य आरम्भ प।रेग्रह अनुमति उद्दिदठ देसविरदो य ।21।

(1) दर्शन (2) व्रत (3) सामायिक (4) प्रोषध (5) सचित्तत्याग (6) रात्रि-भुक्तित्याग (7) ब्रह्मचर्य (8) आरम्भ त्याग (9) परिग्रह त्याग (10) अनुमति- त्याग (11) उद्दिष्ट त्याग। ये सब देशविरत अथवा सागार चारित्राचार हैं। जिनका पालन नैष्टिक श्रावक करता है, इन्हें प्रतिमा के नाम से भी जाना जाता है। ससार शरीर और भोगों से विरक्ति होने लगती है तब प्रतिज्ञा का जो भाव प्रकट होता है उसे प्रतिमा कहा गया है। प बनारसीदास ने उसे इस प्रकार कहा है।

सयम भाव जगो जबै अठधि भोग परिणाम।
उदय प्रतिज्ञा को भयो सो प्रतिमा ताको नाम।।

इन ग्यारह प्रतिमाओं का निरतिचार पालन करना ही श्रावक धर्म की उत्कृष्टता है। सागार सयमाचरण (व्रत प्रतिमा) को आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने बारह प्रकार का कहा है।

पञ्चेव गुव्वयाइ गुणव्वयाइ हवन्ति तहतिण्णि।।
सिक्खावय चत्तारि य सयम चरण च साया र।।

चारित्र पाहुड 23

पाँच अणुव्रत तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत इस प्रकार बारह प्रकार का सागार सयमाचरण चारित्र है यह गृह निरत श्रावक के होता है। इन बारह व्रतों का निरतिचार पालन करके समाधि मरण करने वाला साधक कहलाता है। इन बारह प्रकार के व्रतों के पालनार्थ जितनी इच्छाओं का निरोध होता है वह तप की कोटी में माना गया है।

तप का लक्षण-

सम्यक् प्रकार से निष्काक्ष भाव से इच्छाओ का निरोध करना तप है तप का मुख्य प्रयोजन सस्कारो का क्षय कर स्व की तरफ लक्ष्य करना है मानव विविध सस्कारों का पुज है इसलिए जैनाचार्यों ने कुसस्कार से सुसस्कार की तरफ और फिर दानों ही सस्कारो से मुक्त होकर शुद्ध की तरफ पहुँचने का सकेन दिया है। बाह्य और अभ्यतर तप के जो भेद है ये दोनो ही भेद मन वचन काय की शुद्धि प्रकट करने के लिए किये गए है। अत तप के द्वारा साधक कुसस्कारों का क्षय करते हुए सुसम्कार में निवास कर शुद्ध तत्त्व को उपलब्ध करता है।

पर कर्म क्षयार्थं यत्तप्यते तत्तप स्मृतम् ।

तत्त्वार्थसार अध्याय -6

अर्थात् कर्मों का क्षय करने क लिए जो किया जावे वह तप कहलाता है।

इच्छा निरोधस्तप

इच्छाओं को रोकना तप है। उपवास एकाशन आदि व्रतों में भोजन शयन विषय कषाय आदि विकारों को रोकते हैं वह तप है वह कर्म निर्जरा में कारण है।

तप के भेद- तप के दो भेद है (1) बाह्य तप (2) अभ्यन्तर तप। इनके 6-6 भेद है।

बाह्य तप- अनशनावमौदर्य-वृत्तिपरिसख्यान-रसपरित्याग विविक्त-शय्याशन कायक्लेशा बाह्य तप । -तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-9 सूत्र-19

अनशन अवमौदर्य वृतिपरिसख्यान रस परित्याग विविक्त शय्यासन कायक्लेश ये बाह्य तप है।

अभ्यन्तर तप-प्रायश्चित्त-विनय-वैयावृत्य-स्वाध्याय-व्युत्सर्ग ध्यानान्युत्तरम्।
-तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-9 सूत्र 20

प्रायश्चित्त विनय वैयावृत्य स्वाध्याय व्युत्सर्ग एव ध्यान ये अभ्यन्तर तप है।

श्रावक की अपेक्षा तप के लक्षण-

श्रावक वही है जो श्रद्धावान विवेकवान और क्रियावान हो। यहाँ क्रियावान से हमें श्रावक का चारित्र ग्रहण करना है। वह चारित्र उसके यम और नियम के रूप मे द्विधा विभक्त है। यम रूप से तो प्रत्येक श्रावक को नित्य देव दर्शन करना छना जल ग्रहण रात्रि भोजन त्याग तथा मद्य मास मधु का त्याग करना चाहिए। नियम रूप से विविध व्रतो का अनुष्ठान दिग्व्रत देशव्रत गुणव्रत आदि का पालन करना चाहिए। ये दोनो यम और नियम ही श्रावक के लिए तप है क्योकि श्रावक इनके द्वारा स्वच्छद मन वचन और काय की प्रवृत्ति को रोकने मे समर्थ हो जाता है। इसलिए इस तप के द्वारा अनिवार्य रूप से निर्जरा घटित होती रहती है। इस प्रकार श्रावक को यम और नियम को दत्त चित्त हो सम्यक् रीनि से पालन करना चाहिए।

नियमश्च तपश्चेति द्वयमेतन्न भिद्यते ।242।
तेन युक्तो जन शक्त्या तपस्वीतिनिगद्यते
तत्र सर्व प्रयत्नेन मति कार्या सुमेधसा ।243।

-पद्म पुराण 14/242-243

नियम और तप ये दो पदार्थ जुदे-जुदे नही हैं।

जो मनुष्य नियम से युक्त है वह शक्ति के अनुसार तपस्वी कहलाता है। इसलिए बुद्धिमान मनुष्य को सब प्रकार से नियम अथवा तप में प्रवृत्त रहना चाहिए ।

'पर्वस्वथ यथाशक्ति भुक्ति-त्यागादिक तप ।
वस्त्रपूत पिबेत्तोय रात्रिभोजन-वर्जनम् ।।

पद्मनन्दि पञ्च विशतिका 6/25

छना जल एव रात्रि भोजन का त्याग करते हुए श्रावक को पर्व के दिनों (अष्टमी एव चतुर्दशी) में अपनी शक्ति के अनुसार भोजन के परित्याग आदि रूप(अनशनादि) तपों को करना चाहिए। इन पवित्र दिनो में जीव दया का पालन करना चाहिए एव कषाय आदि विकारी भाव नही करना चहिए।

उपवास की परिभाषा-

दी गई उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि अतरग कषाय परिणामो का निरोध और बाह्य चतर्विध प्रकार का आहार विमोचन उपवास है। उपवास की इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि साधना का मार्ग अतरग और बहिरग साधनो पर आधारित है। जो लोग मात्र अतरग साधन पर जोर देते हैं और बहिरग साधन को वेबुनियाद ठहराते हैं उनकी दृष्टि अभी इस परिभाषा से समीचीन नही है तथा जो लोग मात्र बाह्य त्याग में ही अपना जीवन का सर्वस्व प्राप्तव्य मान लेते है वे भी भ्रम मे है। अत हमे चाहिए कि हम लोग समीचीनतया अतरग और बहिरग दोनो मार्गो की आराधना करते हुए अपने साध्य को प्राप्त करें।

कषाय विषयाहारो त्यागो यत्र विधीयते।
उपवास स विज्ञेय शेष लघनक बिदु ।।

मोक्षमार्ग प्रकाशक पृ0 7/231

विषय कषाय के साथ आहार (चारो प्रकार का) का त्याग करना यथार्थ उपवास है अन्यथा लघन है। विषय कषाय के बिना मात्र आहार का त्याग करना अर्थात् कषाय की तीव्रता में आहार का त्याग करना लघन मात्र है। इससे आत्म कल्याण एव कर्म निर्जरा सम्भव नही है।

चार प्रकार का आहार निम्न प्रकार का है।
(1) खाद्य- पूडी रोटी, दाल चावल आदि।
(2) स्वाद्य- लवग इलायची आदि।
(3) लेह्य- रबडी आदि चाटने वाले पदार्थ।
(4) पेय- पानी दूध शरबत रस आदि पीने वाले पदार्थ।
उपवास के दिन इन चार प्रकार के आहार का त्याग किया जाता है।

उपवास के तीन प्रकार-

प्रोषधोपवास के जो उत्तम मध्यम और जघन्य भेद आगम ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं उन सबका अभिप्राय एकमात्र यही है कि अधिक से अधिक अपना आत्मबल प्रकट करते हुए क्षुधा तृषा इत्यादि की बाधाओं को सहन करते हुए अपने आप को स्व में अधिक से अधिक स्थापित करना चाहिए। उत्तम आदि भेदों मे अपनी शक्ति के अनुसार निर्दोष प्रवृत्ति करना चाहिए।

(1) **उत्तम उपवास**-सप्तमी त्रयोदशी को भोजनोपरान्त नियम (धारणा) करना अष्टमी या चतुर्दशी के दिन चारों प्रकार के आहार का त्याग कर नवमी या पूर्णिमा को एकाशन (पारणा) यह 16 पहर का है।

(2) मध्यम उपवास-सप्तमी या त्रयोदशी को साय कालीन भोजनोपरान्त उपवास लेना अष्टमी चतुर्दशी का उपवास नवमी पूर्णिमा को पारणा यह 12 पहर का है।

(3) जघन्य उपवास-अष्टमी या चतुर्दशी को प्रात काल ही उपवास लेना यह 8 पहर का है।

पर्व की परिभाषा पूज्यपाद आचार्य ने निम्न प्रकार से की है।

"प्रोषध शब्दः पर्व पर्यायवाची । सर्वार्थ सिद्धि अध्याय-7 पृ0-279

प्रोषध शब्द का अर्थ पर्व है।

अर्थात् प्रोषध पूर्वक लिए गये उपवासादि को पर्व की सज्ञा दी गई है।

व्रत का उद्देश्य-

हिसाया अनृताच्चैव स्तेयाद्ब्रह्मतस्तथा
परिग्रहाच्च विरति कथयन्ति व्रत जिना ।

-तत्त्वार्थसार 4/60

हिसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यो विरतिव्रतम्

-तत्वार्थसूत्र अध्याय 7/1

हिसा झूठ चोरी कुशील परिग्रह से निवृत्ति होने को जिनेन्द्र भगवान व्रत कहते है। व्रत का उददेश्य कषाय को कृश करना है कायक्लेश नहीं।

सकल्पपूर्वक सेव्ये नियमोऽशुभ-कर्मण ।
निवृत्तिर्वा व्रत स्याद्वा-प्रवृत्ति शुभकर्मणि।।

-सागार धर्मामृत 2/80

पञ्चेन्द्रिय जन्य विषयो को सकल्प पूर्वक त्याग करना और हिसादिक अशुभ कर्मों से विरक्त होना अथवा पात्रदानादि शुभकार्यो मे प्रवृत्ति करना व्रत कहलाता है।

व्रत एक पवित्र कर्म/अनुष्ठान है जो साधक की मनोदशा परिवर्तित करने मे सक्षम होता है। यही कारण है कि जैनाचार्यों ने पापो से विरक्ति का नाम व्रत कहा है।

व्रतों के भेद-

उपर्युक्त सभी व्रतो के भेद श्रावक अपनी योग्यता की वृद्धि करने के लिए प्रयोग करता है। जैसे-जैसे श्रावक के अथवा साधु के आत्मबल की वृद्धि होती जाती है वैसे-वैसे ही वह उत्तरोत्तर उच्च श्रेणी को उपलब्ध करता जाता है। विशिष्ट काय क्लेश जन्य स्थिति उत्पन्न होने पर उसके परिणामो मे विशुद्धि हानि का प्राप्त नही होती है। इसलिए व्रतो के ये विविध भेद सार्थक है।

नियमोयमश्च विहितौ द्वेधा भोगोपभोग-सहारात्।
नियम परिमित-कालो यावज्जीव यमो ध्रियते।

-रत्नकरण्ड श्रावकाचार अध्याय 3/41

भोग और उपभोग के परिमाण का आश्रय कर नियम और यम दो प्रकार से प्रतिपादित हैं उनमें जो काल के परिमाण से सहित है वह नियम है और जो जीवन पर्यन्त के लिए धारण किया जाता है वह यम कहलाता है।

व्रत विधि की अपेक्षा से व्रत के निम्न भेद है-

1 सावधि 2 निरवधि 3 दैवसिक 4 नैशिक 5 मासावधि 6 वर्षावधि 7 काम्य 8 अकाम्य 9 उत्तमार्थ।

-व्रत तिथि निर्णय पृ0-160

(1) **सावधि व्रत**- जिन व्रतो की प्रारम्भ तिथि निश्चित होती है वे सावधि व्रत कहलाते है। सावधि व्रत दो प्रकार के होते हैं-

1 तिथि अवधि 2 दिन की आवधि

(अ) तिथि अवधि- तिथि क आधार से किये जाने वाले व्रत जैसे सुख चिन्तामणि भावना पञ्चविशति भावना णमोकार पञ्चविशति भावना आदि।

(ब) दिन की अवधि- दिन के आधार से किये जाने वाले व्रत जैसे-दुखहरण धर्मचक्र जिनगुणसम्पत्ति सुख सम्पत्ति शील कल्याणक श्रुतिकल्याणक चन्द्रकल्याण आदि।

(2) **निरवधि व्रत**- जिन व्रतो की कोई अवधि नहीं होती अर्थात किसी भी तिथि या दिन से प्रारम्भ हाने वाले व्रत निरवधि व्रत कहलाते हैं। जैसे कवलचन्द्रायण तपोञ्जलि जिनमुखावलोकन मुक्तावली द्विकावली एकावली आदि।

(3) **दैवसिक व्रत**- जिन व्रतों को दिन मे किया जाता है जैसे- रत्नावली मुक्तावली कनकावली जिनगुणसम्पत्ति सुखसम्पत्ति शीलकल्याणक श्रुतकल्याणक दशलक्षण रत्नत्रय अष्टाह्निका।

(4) **नैसिक व्रत**- जिन व्रतों मे रात्रि के समय भक्ति जाप ध्यान करते हुए जागरण किया जाता है।

जैसे- आकाश पञ्चमी चन्दनषष्ठी नक्षत्रमाला, जिनरात्रि आदि।

(5) **मासावधि व्रत**- एक माह की अवधि वाले व्रत
जैसे- षोडशकारण मेघमाला।

(6) **वर्षावधि व्रत**- वर्ष की अवधि से होने वाले व्रत

(7) **काम्यव्रत**- जो व्रत कामना के साथ किये जाते है।
जैसे- सकटहरण दुखहरण धनदकलश।

(8) **अकाम्यव्रत** कामना से रहित व्रत अकाम्य व्रत हैं।
जैसे- कर्मचूर कर्मनिर्जरा मेरुपंक्ति आदि।

(9) **उत्तमार्थव्रत**- आत्मशुद्धि पूर्वक किये जाने वाले व्रत
जैसे-सिह निष्क्रीडित भाद्रवन सिहनिष्क्रीडित सर्वतोभद्र आदि।

व्रत सकल्प मन्त्र- व्रत लेते समय श्रीफल के साथ सकल्प

व्रत तिथि निर्णय पृ० 201

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य ब्रह्मणो मतेस्मिन मासाना मासोत्तमे मासे मासे--- पक्षे - तिथौ- वासरे जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे -----प्रदेशस्य---- नगरे एतत अवसर्पिणी कालावसान चतुदश प्राभृतमानिमानित सकललोकव्यवहारे श्री गौतमस्वामी श्रेणिकमहामण्डलेश्वर समाचरित सन्मार्गाविशेषे - - वीर निर्वाण सवत्सरे अष्ट महाप्रातिहार्यादिशोभित श्री मदर्हत्परमेश्वर प्रतिमा/ अष्टाविशति मूलगुण- आराधक मुनिराज सन्निधौ अह- व्रतस्य सकल्प करिष्ये। अस्य व्रतस्य समाप्ति पर्यन्त में मावद्य त्याग गृहस्थाश्रमजन्यारम्भ परिग्रहादीनापि त्याग ।

(नौ वार णमोकार मन्त्र की जाप कर व्रत ग्रहण करे)

व्रत का सकल्प (हिन्दी)-

श्री वीतराग सर्वज्ञदेव को नमस्कार कर वृषभादि चौबीस तीर्थंकरो के द्वारा प्रवर्तित जिनधर्मानुसार मास मे पक्ष मे तिथि मे वार मे जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र आर्यखण्ड भारत देश के प्रदेश स्थित नगर में श्री वार निर्वाण सवत्सर मे अष्ट प्रातिहार्य से शोभित जिनेन्द्र प्रतिमा

के सान्निध्य में मै   व्रत का सकल्प करता हूँ। इस व्रत के समाप्ति पर्यन्त यथाशक्ति पापों का त्याग कर एव गृहस्थ सबधी आरभ परिग्रहादि का भी त्याग करता हूँ। इस व्रत की विधि अनुसार व्रत पूजा व्रत कथा एव व्रत मत्र पूर्वक एकाशन/उपवास करूँगा/करूँगी। बीमारी सूतक पातक अशुद्धि आदि किसी कारणवश व्रत की तिथियाँ न मिल सकीं तो उसे आगे तिथियों में व्रत करके व्रत पूरा होने पर अपनी शक्ति अनुसार व्रत का उद्यापन करूँगा/करूँगी। हे भगवन! **मै इस व्रत को यथा सभव शुद्धि** पूर्वक करके अधिक से अधिक समय धर्म मे लगाऊगा। **फिर भी मुझमे मन** से वचन से काय से जाने अनजाने में **कोई** गलती हो जाये तो **मै** भगवान से क्षमा मॉगता हूॅ/मॉगती हूँ। हे भगवन! **इस व्रत को करने से मेरे सारे कष्ट दूर हो जाये मेरे सारे दुखों का नाश हो मुझे बोधि की प्राप्ति हो मेरे आठों कर्मो का नाश हो और यथाशीघ्र मुझे मोक्ष की प्राप्ति हो।**

हे भगवन! इस व्रत को करने से मेरे सकल परिजनो को सुख समृद्धि और शाति मिले। जगत के सकल जीवों को मुख और शाति मिले।

ॐ ह्रा ही हू ही ह अ सि उ सा नम अह   (व्रत का नाम)   व्रत धारयामि प्रतिष्ठयामि ह्रीं नम स्वाहा।

(वेदी पर श्रीफल चढाकर नौबार णमोकार का ध्यान करे)

व्रत गुरु के समक्ष हा लेना चाहिए गुरु का सान्निध्य न होने पर प्रतिमा के समक्ष व्रत लेकर प्रयास पूर्वक किन्ही महाराज से व्रत का सकल्प लेकर उसकी प्रायश्चित्त विधि समझ लेना चाहिए।

व्रत ग्रहण में सावधानी-

समीक्ष्य व्रत-मादेय-मात्त पाल्य प्रयत्नत
छिन्न दर्पात्प्रमादाद्वा प्रत्यवस्थाप्य-मञ्जसा।

-सागार धर्मामृत 2/79

देश कालादिक को देखकर व्रत लेना चाहिए और ग्रहण किये व्रतो का प्रयत्न पूर्वक पालन करना चाहिए। मदावेश या प्रमाद से व्रत भग हो जाये तो शीघ्र ही प्रायश्चित्त लेकर पुन व्रत धारण करना चाहिए।

व्रतों में अतिचार-

अतिक्रमो मानस शुद्धि हानि व्यतिक्रमो यो विषयाभिलाषः।
तथातिचार करणालसत्व भगो ह्यनाचार-मिहव्रतानाम।।

व्रत के भग करने का मन मे विचार आना अतिक्रम विषयो की अभिलाषा (व्रत भग करने वाली सामग्री को एकत्रित करना) होना व्यतिक्रम इन्द्रियो की असावधानी अर्थात् व्रत के आचरण मे शिथिलता होना अतिचार और व्रत का सर्वथा भग हो जाना अनाचार है। अतएव व्रत मे किसी भी प्रकार की असावधानी नही होनी चाहिए।

इसके साथ एक आभोग नाम का अतिचार भी कहा गया है व्रत भग हो जाने पर प्रायश्चित्त नही करना पूर्व की तरह अनाचार रूप प्रवृत्ति करना आभोग है अर्थात् व्रत भग हो जाने पर प्रायश्चित्त न करते हुए व्रत को छोड देना आभोग अतिचार है।

व्रतों की रक्षा कैसे करे-

प्राणान्तेऽपि न भक्तव्य गुरु-साक्षिश्रित व्रतम्।
प्राणान्तस्तत्क्षणे दु ख व्रत-भगो भवे भवे।।

-सागार धर्मामृत 7/52

गुरु की साक्षी मे लिया हुआ व्रत यदि प्राण भी चले जाये तो भी भग नही करना चाहिए क्योकि प्राणनाश (मरण) के समय मात्र ही दुख होता है परन्तु व्रत भग होने पर भव-भव मे दुख ही मिलता है। व्रत बीच मे छूट जावे तो उसे शुरू से करना चाहिए।

जइ अतरम्मि कारण-वसेण एक्को व दो व उपवासा।
ण कओ तो मूलाओ पुणो वि सा होई कायव्वा।।

-वसुनन्दिश्रावकाचार 360

यदि व्रत करते हुये बीच में किसी कारण वश एक या दो उपवास न किये जा सके हों तो मूल से अर्थात् प्रारम्भ से लेकर पुन वही उपवास विधि करना चाहिये।

निरतिचार व्रतों का फल-

व्रतानि पुण्याय भवन्ति जन्तोर्न सातिचाराणि निषेवितानि
सस्यानि किं क्वापि फलन्ति लोके मलोपलीढानि कदाचनापि।

-सागार धर्मामृत क्षेपक 4/16

जीवो को व्रत पुण्य फल देते हैं किन्तु अतिचार सहित व्रत पुण्य- जनक नहीं होते हैं। जिस प्रकार केवल धान वो देने से खेती फलदायक नहीं होती उसमें मे होने वाले घास को निकालकर साफ करना पडता है उसके बिना फसल घर मे नहीं आती। उसी प्रकार व्रतों को निरतिचार पालन करने से पुण्य होता है सातिचार व्रतो के द्वारा पुण्य प्राप्त नही होता निरतिचार व्रतों के पालन करने से अनेक सिद्धियॉ प्राप्त होती हैं। रत्नमाला नामक ग्रन्थ मे आचार्य शिवकोटि जी कहते हैं।

व्रतशीलानियान्येव, रक्षणीयानि सर्वदा।
एकेनैकेन जायन्ते देहिना दिव्य सिद्धय ।।

-रत्नमाला 37

जो शील तथा व्रत धारण करते है उनकी गृहस्थी की हमेशा रक्षा होती है। एक एक व्रत और एक एक शील के निमित्त से प्राणियो के दिव्य सिद्धि प्राप्त होती है।

अव्रतानि परित्यज्य व्रतेषु परिनिष्ठित ।
त्यजेत्तान्यपि सत्राप्य परम पदमात्मन ।।

मोक्षार्थी पुरुष अव्रतो को छोडकर व्रतो मे स्थिर होकर परमात्मपद प्राप्त करे और परमात्मपद प्राप्तकर उन व्रतो का त्याग करें। निरतिचार व्रतो का पालन करना ही मोक्ष का साधन है अतिचार सहित व्रत नही। यह मात्र ससार सुख दे सकते है।

-वृहद द्रव्य सग्रह मो०मा० अधिकार पृ० 256

व्रतों के उद्यापन का विधान-

पञ्चम्यादि-विधि कृत्वा शिवान्ताम्युदय-प्रदम्
उद्योतयद्यथा-सम्पन्निमित्ते प्रोत्सहेन्मन ।

-सागार धर्मामृत 2/78

मोक्ष पर्यन्त अभ्युदय देने वाली पञ्चमी (मुक्तावली पुष्पाञ्जलि कनकावली रत्नत्रय) आदि व्रतो को करके अपनी आर्थिक शक्त्यनुसार उद्यापन करे तथा नैमित्तिक व्रत अनुष्ठान मे मन उत्कृष्ट रूप से उत्साहित करे। अर्थात् अत्यन्त प्रभावना पूर्वक अनुष्ठान कर उद्यापन करे जिससे व्रत की महिमा बढे और लोगों को व्रत करने की प्रेरणा मिले।

उद्यापन की विधि-

कर्तव्य जिनागारे महाभिषेक-मद्भुतम्
सद्यैश्चतुर्विधै साध महापूजादि-कोत्सवम्।
घण्टाचामर-चन्द्रोपक-भृगार्यार्तिकादय
धर्मोपकरणान्येव देय भक्त्या स्वशक्तित ।
पुस्तकादि-महादानम् भक्त्यादेय वृषाकरम्
महोत्सव विधेय सुवाद्य-गीतादि-नर्तनै ।
चतुर्विधाय सघाया-हारदानादिक मुदा
आमत्र्य परया भक्त्या देय सम्मान-पूर्वकम्।
प्रभावना जिनेन्द्राणा शासन चैत्य-धामनि
कुर्वन्तु यथाशक्त्या स्तोक चोद्यापन मुदा।

-जैन व्रत विधान सग्रह पृ 22-24

विशाल मन्दिरो का निर्माण करावे और समारोह के साथ प्रतिष्ठा कराके जिनबिम्ब स्थापन करे पश्चात चतुर्विध सघ के साथ प्रभावना पूर्वक महाभिषेक के साथ महापूजा करे और घण्टा झालर चमर छत्र सिहासन चन्दोवा झारी भृगार आदि अनेक उपकरण शक्त्यनुसार देवे।

आचार्यादि महापुरुषों को धर्मवृद्धि ज्ञानवृद्धि हेतु शास्त्र प्रदान करे आहारादि देवें। अनेक वादित्रो के साथ गीत एव नृत्यादिक पूर्वक भक्ति प्रमोद भावना के साथ आहारादि चारो प्रकार के दान देवें। जिनेन्द्र भगवान के शासन के महात्म्य को प्रकट कर प्रभावना करें। इस प्रकार उद्यापन कर व्रत का विसर्जन करें। जिस व्रत का उद्यापन करे उतने पूजा के बर्तन सामग्री छत्र चवर चन्दोवा शास्त्र घण्टा आदि उतने ही मन्दिरो को प्रदान करे।

प्रात सामायिक कुर्यात्तत तात्कालिकी क्रियाम्
धौताम्बर धरो धीमान् जिनध्यान पराण्ण ।

व्रती श्रावक प्रात काल ब्रह्ममुहूर्त में सामायिक करें पश्चात नित्यक्रियाओं से निवृत्त होकर शुद्ध वस्त्र धारणकर श्री जिनेन्द्र देव का ध्यान करता हुआ मन्दिर जावे।

महाभिषेक-मद्भुत्यै-र्जिनागारे व्रतान्वितै
कर्तव्य सह सघेन महापूजादिकोत्सवम्।

जिनालय में महान आश्चर्य करने वाला महाभिषेक करे। फिर परिवार एव सघ के साथ समारोह पूर्वक महापूजा करे।

ततो स्वगृहमागत्य दान दद्यान् मुनीशिने
निर्दोष प्रासुक शुद्ध मधुर तृप्तिकारणम्।

पूजा के पश्चात अपन घर मे आकर निर्दोष प्रासुक शुद्ध मधुर और तृप्ति कारक आहार मुनिराजो को देवे शेष बचे आहार को कुटुम्ब के साथ स्वय करे। मुनिराज के न होने पर साधर्मीजनो को भोजन करावे।
पञ्चमी व्रत के उद्यापन की विधि बताते हुए आचार्य वसुनन्दी जी लिखते हैं।

अवसाणो पञ्च घडा-विऊण पडिमाओ जिण-वरिदाण।
तह पञ्च पोत्थयाणि य लिहाविऊण ससत्तीए।।

-वसुनन्दिश्रावकाचार 355

तेसि पइटठ्याले ज कि पि पइटठ्-जोग्ग-मुव-यरण।
तसव्व कायव्व पत्तेय पञ्च पञ्च सखाए।।

-वसुनन्दिश्रावकाचार 356

व्रत पूर्ण हो जाने पर जिनेन्द्र भगवान की पाँच प्रतिमाएँ बनवाकर तथा पॉच शास्त्रो को लिखवाकर अपनी शक्ति के अनुसार उनकी प्रतिष्ठा के लिए जो कुछ भी प्रतिष्ठा योग्य उपकरण आवश्यक हो वे सब पॉच-पॉच की सख्या मे बनवाना चाहिए। जो व्रत जितने वर्ष या दिन का किया जाता है उतने शास्त्र आदि बनवाकर मन्दिर जी मे रखना चाहिए। उनकी सख्या व्रतानुसार होना चाहिए उतनी ही सामग्री शास्त्र पूजा के बर्तन अछार जाप छत्र चवर अष्टद्रव्य आदि उतने ही मन्दिरो मे भिजवाना चाहिए जिससे व्रत एव करने वालो की प्रभावना एव बहुमान बढता है और व्रतो को करने की प्रेरणा मिलती है।

उद्यापन की अन्य विधि-

सम्पूर्णेह्यनु कर्तव्य स्वशक्त्योद्यापन बुधै
सर्वथायेऽप्यशक्त्यादि व्रतोद्यापन सद्विधौ।

व्रत की मर्यादा पूर्ण होने पर शक्ति के अनुसार उद्यापन करें यदि उद्यापन की शक्ति नही हो ता व्रत को दुगुना करना चाहिए। व्रत को दुगना करना ही उद्यापन है। वसुनन्दी श्रावकाचार मे भी ऐसा ही कहा गया है।

व्रत समापन विधि-

व्रत को पूर्ण करने के बाद ही उद्यापन करना चाहिए। व्रत की समाप्ति के दिन उद्यापन नही करना चाहिए। जिस दिन व्रत पूर्ण हो उससे अगले दिन उद्यापन होना चाहिए। दुगना व्रत करने के बाद उद्यापन आवश्यक नही है।

व्रत के समापन मे जलयात्रा अभिषेक मगलाष्टक सकलीकरण अगन्यास स्वस्ति वाचन आदि के उपरान्त सम्बन्धित व्रतोद्यापन की पूजा एव विधान अनुष्ठानपूर्वक कराना चाहिए। सकल्प मन्त्र मे तत्सम्बन्धित व्रत

का नाम तथा तिथि नक्षत्रादि जोडकर सकल्प कर व्रत का समापन करना चाहिए।

व्रत समापन मन्त्र-

ॐ अद्याना आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे शुभे---- मासे--- पक्षे----तिथौ------वासरे श्रीमदर्हत प्रतिमासन्निधौ पूर्व----(व्रत का नाम) गृहीत तस्य परिसमाप्ति करिष्ये-अह प्रमादाज्ञानवशात् व्रते जायमानदोषा शातिमुपयान्ति। ॐ ह्रीं क्ष्वीं स्वाहा। श्रीमज्जिनेन्द्रचरणेषु आनन्दभक्ति सदास्तु, समाधिमरण भवतु पापविनाशन भवतु।

ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा सर्व शान्तिर्भवतु ह्री नम ।

(इस मत्र का नौ बार जाप) -व्रत तिथि निर्णयपृ0-202

व्रत समापन मत्र (हिन्दी) -

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र के नगर मे मास मे पक्ष मे आज तिथि वार मे श्री अर्हत प्रतिमा के सान्निध्य मे व्रत ग्रहण किया था उसका विधि पूर्वक पालन एव उद्यापन करके मै आगे और व्रत करने की भावना के साथ व्रत का समापन कर रहा हूँ।

यदि व्रत में प्रमाद या अज्ञानवश व्रत के समय कोई अपराध हुए हो तो उसकी क्षमायाचना करता हूँ। ॐ ह्री क्ष्वी स्वाहा।

श्रीफल या सुपारी आदि चढाकर भगवान को नमस्कार कर नौ वार इस मन्त्र की जाप करे। पश्चात् शान्ति भक्ति के वाद शान्ति विर्सजन करके पूजा समाप्त करना चाहिए एव उद्यापन के अनन्तर ग्रन्थ या धार्मिक पुस्तकें फल वितरण करना चाहिए।

-व्रत तिथि निर्णयपृ0-46

सामग्री व्यवस्था

शास्त्रों मे व्रतो के उद्यापन में लगने वाली सामग्री का उल्लेख व्रतानुसार किया गया है। यथा

षोडशकारण व्रत- षोडशकारण यन्त्र पूजन सामग्री 256चाँदी के स्वस्तिक 256सुपाडी 16 शास्त्र 16 नारियल 16 जोडी पूजा के बर्तन 16छत्र 16चमर आदि मगल द्रव्य चन्दोवा दान करने के लिए राशि आदि आवश्यक सामान है।

-व्रत तिथि निर्णय पृ0-46

दशलक्षण- छत्र चमर झारी आदि मगलद्रव्य जपमाला कलश दश शास्त्र मन्दिरो के लिए दस जोडी पूजा के बर्तन दशलक्षण यन्त्र 100 चॉदी के स्वस्तिक दस नारियल(सूख) 100सुपाडी आवश्यक होती है। इस उद्यापन मे दस घरों मे फल बॉटना आवश्यक है।

-व्रत तिथि निर्णय पृ0-45

अष्टाहिन्का- मन्दिर मे देने के लिए आठ-आठ उपकरण आठ शास्त्र पूजन सामग्री चन्दोवा पूजन में चढाने के लिए 52 चॉदी के स्वस्तिक 52 सुपाडी 4 नारियल की आवश्यकता होती है। सिद्धयन्त्र की भी आवश्यकता होती हे।

रत्नत्रय- पूजन सामग्री रत्नत्रय यन्त्र तेरह शास्त्र मन्दिरो के लिए 13 जोडी पूजन के बर्तन छत्र चमर झारी आदि मगल द्रव्य चन्दोवा तथा राशि। उद्यापन के उपरान्त साधर्मी भाइए के तेरह घरो में फल भेजना चाहिए।

इसी प्रकार व्रत मे सामग्री की योजना निम्नानुसार करना चाहिए-

उद्यापन सामग्री-

हल्दी गाँठ श्रीफल बादाम सुपारी गोला लवग इलायची चावल धूप शुद्ध कपूर केशर शुद्ध घृत माडना कलावा (पचरगा धागा) यज्ञोपवीत रुई माचिस मुकुट मालाएँ विनायक यन्त्र पीला कपडा लाल तूस खादी सफेद पानी का छन्ना मगल कलश मगलध्वजा मन्दिर ध्वजा मण्डल ध्वजाये घट यात्रा कलश पच रत्न पुडियाँ चाँदी के स्वस्तिक(व्रतानुसार) धोती दुपटटा (मन्दिर हेतु) चन्दोवा अछार पूजा के बर्तन छत्र चमर अष्ट

प्रातिहार्य अष्ट मगलद्रव्य माला(जाप्य) कोयला आसनी बडी आसनी छोटी तखत टेबिल चौका चौकी दीपक बडे दीपक छोटे कुण्ड पटिया लकडी सजावट का सामान सगीत पार्टी बैण्ड बाजे, जुलूस की सामग्री जपवाले इन्द्र इन्द्राणी पीला सरसों पण्डाल, स्पीकर जिस व्रत का उद्यापन हो उसका यन्त्र विधान की किताबें एव मन्दिर में देने के लिए उपकरण(चाँदी के बर्तन छत्र शास्त्र, राशि आदि)।

सदर्भ ग्रन्थ सूची-

व्रतों की विधि आदि का सयोजन अनेक ग्रन्थों से किया गया है। प्रमुख ग्रन्थ निम्नानुसार हैं।

(1) हरिवश पुराण
(2) सागार धर्मामृत
(3) रत्नकरण्डक श्रावकाचार
(4) आचार्य धर्मसागर अभिनन्दन ग्रन्थ
(5) जैन व्रत तिथि निर्णय
(6) जैन व्रत विधान सग्रह
(7) व्रत कथा कोष
(8) श्रावकाचार सग्रह
(9) क्रियाकोष
(10) जैन व्रत विधि
(11) सुदृष्टि तरगणि
(12) वर्धमान पुराण
(13) सस्कृत वागमय शब्दकोष परिच्छेद खण्ड पूर्वार्द्ध
(14) चारित्रसार
(15) जैनेन्द्र कथा कोष

आदि अनेक ग्रन्थों के माध्यम से लगभग 475 व्रतों का परिचय निम्न बिन्दुओं के रूप में दिया गया है।

(1) व्रत का नाम (2) व्रतारम्भ तिथि (3) व्रत की अवधि (4) व्रत की विधि (5) व्रत की पूजा (6) व्रत की जाप (मन्त्र) (7) व्रत का उद्यापन और (8) विशेष- जिस व्रत मे कोई विशेषता हुई तो उसे विशेष शीर्षक से उल्लिखित किया गया है।

जिन व्रतों में विसगतियाँ देखने को मिलीं उनका सुधार आवश्यक समझकर कुछ सशोधन भी किया गया है। यथा तीर्थंकर कल्याणक तिथियों के अनुसार व्रतों के नाम एव व्रतों के नाम के अनुसार तिथियों में

सशोधन करना पडा है। जो व्रत व्यक्ति विशेष के नाम से थे उन व्रतो को दिया नही है। सराग देवों की उपासना का आगम मे निषेध है इससे देवी देवताओं के नाम वाले व्रतो को भी नही दिया है। इसी पकार अन्य मतानुसार वाले व्रतो को भी नही दिया जा रहा है क्योकि वीतरागता प्राप्त करने के उद्देश्य से किये गये व्रत वीतरागता से अनुराग करने वाले होना चाहिए। रात्रि जागरण को जैन व्रत परम्परा में विशेष महत्त्व नही दिया गया है अत ऐसे व्रतो को भी सम्मिलित नही किया गया हे। जैन पर्व एव त्यौहार सम्बन्धि सभी व्रतों को देने का प्रयास किया गया है। फिर भी कुछ व्रत छूट भी गये होंगे। उन्हें विद्वज्जन अन्य स्थान से प्राप्त कर लाभ लेवें। सभी व्रतों के जाप मन्त्र सशोधित कर दिये गये है। जिन व्रतों के मन्त्र नहीं थे उन्हें खोज कर दिया गया है क्योकि व्रत के दिन मन्त्र की जाप अनिवार्य है इससे भावो में एकाग्रता आती है। कई व्रतों मे उद्यापन विधि एव विधान का उल्लेख नही था उन व्रतो के उद्यापन विधान को लिखा गया है। व्रत के दिन भक्तियो का बहुत महत्त्व है। इन्हे भावशुद्धि पूर्वक पढना चाहिये। इस भाव को ध्यान मे रखकर भक्तियो को भी सग्रहीत किया गया है। लगभग सभी क्षेत्रों मे महिलाऍ ही सबसे ज्यादा व्रत करती है। उन्हे व्रतो की पूरी जानकारी नही होती है और यदि होती भी है तो पूजा भक्तियॉ विधान आदि न मिलने से परेशानी होती है। अत इस ग्रन्थ के दूसरे खण्ड मे व्रत लेने की विधि आदि का पूर्ण विवरण दिया गया है। जिसमे अभिषेक शान्तिधारा दैनिक पूजा एव जो व्रत पूजाएँ सहज उपलब्ध नही होती थी उन्हे सकलित किया है। व्रतों के अलावा पूजाऍ सभी पुस्तकों में सरलता से उपलब्ध हो जाती है उन्हे ग्रन्थ विस्तार के भय से नही दिया जा रहा है।

ग्रन्थ की विषय वस्तु अनेक आचार्यो/मुनिराजों/आर्यिका माताओं ने देखकर आशीर्वाद प्रदान किये हैं एव अनेक विद्वानों ने इसे आद्योपान्त पढकर सुझाव और अभिमत प्रदान किये हैं। उन सभी के चरणो मे सादर नमन करते है।

इस ग्रन्थ के सयोजन में बहुत समय और श्रम लगा है। जिसे अनेक सन्तों का सहयोग लेकर पूरा किया जा सका है। पूज्य मुनि श्री क्षमासागर जी महाराज ने सपूर्ण विषय को देखकर आवश्यक निर्देशन के साथ आवश्यक लेखों के माध्यम से व्रत एव पूजन की वैज्ञानिकता व्रतों की ऐतिहासिकता वर्तमान समय मे श्रावक की दिनचर्या आदि विषय परिमार्जित कराये हैं। पूज्य मुनि श्री सुधासागरजी समतासागर जी आर्जवसागरजी प्रमाणसागरजी प्रसादसागरजी सौरभसागरजी के सुझावों से विषय की पूर्णता हुई है। आर्यिका पूर्णमति माताजी ने व्रतों का महत्व देकर ग्रन्थ का वैशिष्ट्य बढाया है।

लेखन के दुरूह एव श्रमसाध्य कार्यों को सफलता पूर्वक करने में अर्चना(पम्मी) श्री मनीष जैन(सजू) ने पूर्ण कुशलता से किया है। सशोधन एव सवर्द्धन आदि कार्यो में युवा मनीषी ब्र विनोद भैया जी (पपौराजी) एव प विनोद कुमार जी (रजवास) ब्र सरेन्द्र जी (सागानेर) ब्र रवीन्द्र जी(सोनागिर) कौशल किशोर भटट का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है।

कम्पोजिग को कुशलता पूर्वक करने के लिये श्री दीपक जैन (ए व्ही एस कम्प्यूटर) एव स्वच्छ एव स्पष्ट छपाई के लिय श्री नीरज जैन (दिगम्बर) प्रिंटिग प्रेस आभार के पात्र है। इस ग्रन्थ के सयोजन सशोधन सवर्धन में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूपसे जिनका सहयोग प्राप्त हुआ है एव जिन्होंने अपनी चचला लक्ष्मी का उपयोग कर इस ग्रन्थ के प्रकाशन में सहयोग किया है उन सभी के हम बहुत बहुत आभारी हैं।

इस ग्रन्थ से भव्य श्रावक श्राविकाएँ लाभ लेकर अपना कल्याण कर मार्ग प्रशस्त करें तो हम अपना प्रयास सफल समझेंगे।

टीकमगढ

ब्र प गुलाब चन्द्र 'पुष्प'
ब्र प जय 'निशात'

व्रतों की मासिक सूची

विवरण	तिथि
निर्णय व्रत-	6
विपरीत नय निवारण व्रत-	6
व्यवहारनय निवारण व्रत-	7
निश्चयनय निवारण व्रत-	8
दानान्तराय कर्म निवारण व्रत-	10
लाभान्तराय कर्म निवारण व्रत-	10
उपभोगान्तराय निवारण व्रत-	12
वीर्यान्तराय कर्म निवारण व्रत-	13
मिथ्यात्व गुणस्थान निवारण व्रत-	14
शांतिनाथ तीर्थं चक्र काम व्रत-	14
सासादन गुणस्थान निवा व्रत-	30
आषाढ कृष्णपक्ष-	
यथाख्यात चारित्र व्रत-	2
कल्याणक व्रत-	2
पञ्चकल्याणक व्रत-	2
सयत व्रत-	3
परस्पर कल्याणक व्रत-	2
सयतासयत व्रत-	4
कोकिला पञ्चमी व्रत-	5
अहिसा महाव्रत व्रत-	5
अचौर्य महाव्रत व्रत-	7
निर्ग्रन्थ महाव्रत व्रत-	8
ब्रह्मचर्य महाव्रत व्रत-	8
आषाढ शुक्ल पक्ष	
कायगुप्ति व्रत-	1
वचन गुप्ति व्रत-	1
तपाचार व्रत-	1

विवरण	तिथि
सम्यक् मिथ्यात्व गुण व्रत-	1
जिनगुण सम्पत्ति व्रत-	1
दर्शनाचार व्रत-	2
वर्द्धमान व्रत-	2
रत्नशोक व्रत-	3
देशविरत गुण व्रत-	3
कर्मदहन व्रत-	4
चतु मगल व्रत-	4
प्रमत्तगुण व्रत-	4
मनुष्यगति निवारण व्रत-	4
लोकमगल व्रत-	4
आयुकर्म निवारण व्रत-	5
अप्रमत्त गुणस्थान व्रत-	5
पञ्चालकार व्रत-	5
पञ्चसूनानिवारण व्रत-	5
पञ्चसमार निवारण व्रत-	5
पञ्चमी व्रत-	5
पञ्चपर्व व्रत-	5
विद्यामण्डूक व्रत-	5
आहारक शरीर निवारण व्रत-	5
ऋषि पञ्चमी व्रत-	5
निर्जरा पञ्चमी व्रत-	5
श्वेत पञ्चमी व्रत-	5
अपूर्व करण गुण व्रत-	6
नामकर्म निवारण व्रत-	6
सूक्ष्मसाम्पराय चारित्र व्रत-	6
षड्कर्म व्रत-	6
गोत्रकर्म निवारण व्रत-	7

विवरण	तिथि
चारित्राचार व्रत-	13
सामायिक चारित्र व्रत-	13
कर्मनिर्जरा व्रत-	14
कारुण्य व्रत-	14
केवलज्ञान व्रत-	14
छेदोपस्थापना चारित्र व्रत-	14
नरकगति निवारण व्रत-	14
पुण्यचतुर्दशी व्रत-	14
भवसागर निवारण व्रत-	14
त्रिभुवन तिलक व्रत-	14
कली चतुर्दशी व्रत-	14
पञ्चमास चतुर्दशी व्रत-	14
अणति पूर्णिमा व्रत-	15
श्रावण कृष्णपक्ष-	
रसपरित्याग व्रत-	1
वीरशासन जयती-	1
तपोञ्जलि व्रत-	1
भयहरण चतुर्दशी व्रत-	14
श्रवण शुक्लपक्ष-	
सप्तपरम स्थान व्रत-	1
सुगन्ध बधुर व्रत-	1
एकावली व्रत-	1
पार्श्व तृतीया व्रत-	3
गरुण पञ्चमी व्रत-	5
षष्ठी व्रत-	6
मनोगुप्ति व्रत-	7
मुकुटसप्तमी व्रत-	7
मोक्षसप्तमी व्रत-	7
सर्वसम्पत्कर व्रत-	8
अक्षय फल दशमी व्रत-	10
अक्षयनिधि व्रत-	10
कलश दशमी व्रत-	10
श्रावण द्वादशी व्रत-	12
उपसर्ग निवारण व्रत	13
कल्पामर व्रत-	14
रूपशील चतुर्दशी व्रत-	14
दक्षिणायन व्रत-	15
रक्षाबन्धन व्रत-	15
भाद्रपद कृष्णपक्ष	
धनद कलश व्रत-	1
श्रुतस्कन्ध व्रत-	1
जिनमुखावलोकन व्रत-	1
मेघमाला व्रत-	1
मुनष्ठी विधान व्रत-	1
सोलहकारण व्रत-	1
तीन चौबीसी व्रत-	3
चन्दन षष्ठी व्रत-	6
भाद्रपद शुक्लपक्ष-	
लब्धि विधान व्रत-	1
रूपार्थ वल्लरी व्रत-	1
अपूर्व व्रत (त्रिलोक तिलक)	1

विवरण	तिथि
निशंकिताग व्रत-	1
मगलार्णव व्रत-	1
निकाक्षिताग व्रत	2
निर्विचिकित्साग व्रत-	3
अमूढदृष्ट्यग व्रत-	4
श्रुतस्कन्ध व्रत-	4
औदायिक शरीर निवारण व्रत-	5
उपगूहनाग व्रत-	5
स्थितिकरणाग व्रत-	6
वात्सल्याग व्रत-	7
कलधौतार्णव व्रत-	8
धर्म प्रभावनाग व्रत-	8
सर्वार्थ सिद्धि व्रत-	8
चूडामणि व्रत-	11
अमूढ दृष्टाग-	14
वसुधा भूषण व्रत-	15
अगहन (मार्गशीर्ष) कृष्णपक्ष	
चतुर्शीति गणधर व्रत-	10
अगहन शुक्लपक्ष	
कन्दर्प निवारण व्रत-	8
पौष कृष्णपक्ष	
त्रिलोकभूषण व्रत-	3
सारस्वत व्रत-	10
पौष शुक्लपक्ष	
सुगन्धदशमी (मासिक) व्रत-	5

विवरण	तिथि
पौष्य कल्याण व्रत-	7
मौन व्रत-	11
मौन एकादशी व्रत-	11
परिहार विशुद्धि चारित्र-	15
माघ कृष्णपक्ष	
दुर्गति निवारण व्रत-	1
सत्यवचनमहाव्रत व्रत-	6
सारस्वत व्रत-	10
आदिनाथ निर्वाण महोत्सव व्रत-	14
समकित चौबीसी व्रत-	14
निर्वाण कल्याण व्रत-	14
माघ शुक्लपक्ष	
चारुसुख व्रत-	6
उत्तरायण व्रत-	15
माघमाला व्रत-	15
फाल्गुन कृष्णपक्ष-	
आदिनाथ शासन व्रत-	11
जिनरात्रि व्रत-	14
फाल्गुन शुक्लपक्ष-	
अक्षयसुख सम्पत्ति व्रत-	1
वैक्रियक शरीर निवारण व्रत-	5
अष्टप्रातिहार्य व्रत-	8
कल्याण तिलक व्रत-	8

किसी भी तिथि में आरम्भ होने वाले व्रत

1 अधिक सप्तमी व्रत
2 अनस्तमी व्रत
3 अनन्तभव कर्महराष्टमी
4 अरनाथतीर्थं चक्र कामदेव व्रत
5 अश्विनी व्रत
6 अशोकरोहिणी व्रत
7 आष्टाह्निक व्रत
8 अष्टकर्म चूर व्रत
9 अष्टमी व्रत
10 अज्ञान निवारण व्रत
11 आचारवर्द्धन व्रत
12 एसोदश व्रत
13 एसोनव व्रत
14 कन्या सक्रमण व्रत
15 कर्कसक्रमण व्रत
16 कर्मचूर व्रत
17 कर्मक्षय व्रत
18 कल्पकुज व्रत
19 कल्याणमाला व्रत
20 कल्याणमन्दिर व्रत
21 कवल चन्द्रायण व्रत
22 काजिक व्रत
23 कुन्थुनाथतीर्थं चक्र कामदेव व्रत
24 कुम्भसक्रमण व्रत
25 गणधरवलय व्रत
26 गन्धअष्टमी व्रत
27 गुरुवार व्रत
28 चतुर्दशी व्रत
29 चन्द्रकल्याणक व्रत
30 चारित्रशुद्धि व्रत
(बारह सौ चौतीस व्रत)
31 चारित्रशुद्धि व्रत
32 चौंतीस अतिशय व्रत (वृहत)
33 चौंतीसी व्रत
34 चौबीस तीर्थंकर व्रत
(एक कल्याणक)
35 चौंसठ ऋद्धि व्रत
36 जिनपूजा पुरन्दर व्रत
37 तत्त्वार्थसूत्र व्रत
(मोक्षशास्त्र व्रत)
38 तपशुद्धि व्रत
39 तिरेपन क्रिया व्रत
40 तीर्थंकर व्रत
41 नीर्थंकर बेला व्रत
42 तुलासक्रमण व्रत
43 तेला व्रत
44 दर्शनविशुद्धि व्रत
45 दारिद्र निर्वृत्ति व्रत

1- अचौर्य महाव्रत व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कृष्ण सप्तमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक सप्तमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सम्भवनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्ली अर्हं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - चोरी के परिणाम का अभाव

★★★

2- अणति पूर्णिमा व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कार्तिक फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा
व्रत की अवधि - 6 वर्ष
व्रत की विधि - आषाढ कार्तिक फाल्गुन महीनों में पूर्णिमा को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
विशेष - 24 जिनालयों में उपकरण शास्त्रादि भेंट करें।
व्रत का फल - सकट निवारक

★★★

3- अधिक सप्तमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ, कार्तिक फाल्गुन महीनों की कोई एक शुक्ल सप्तमी

व्रत की अवधि - 4 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक सप्तमी के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - भक्तामर विधान

व्रत का फल - सौख्य समृद्धिदायक

★★★

4- अंतिम केवली (जम्बूस्वामी) व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन कृष्ण चतुर्दशी

व्रत की अवधि - 24 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक चतुदर्शी को उपवास करें। कार्तिक की अष्टाह्निका में उद्यापन करें।

व्रत की पूजा - श्री जम्बूस्वामी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हं श्री सामान्य केवलिने नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - केवलज्ञान प्राप्तिकारक

★★★

5- अन्तराय कर्म निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी

व्रत की अवधि - 1 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री चन्द्रप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अनतवीर्य प्रदायक

★★★

6- अनस्तमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी मास की किसी भी तिथि से प्रारम्भ करें।
व्रत की अवधि - जीवन पर्यंत
व्रत की विधि - 2 घडी दिन चढने के बाद एव 2 घडी दिन शेष रहने के पहले भोजन से निवृत्त हो जाये। शेष समय में चारों प्रकार के आहार का त्याग करें।
व्रत की पूजा - नित्यपूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - श्रावकोचित व्रतवर्धक

आ ध अ ग्र पृ 548 क्रि को पृ.291 व्र वि स पृ 96

★★★

7- अनन्त चतुर्दशी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी
व्रत की अवधि - चौदह वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री अनन्तनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं ह स अनन्तकेवलिने नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - दारिद्र निवारक एव अक्षय कोष प्रदायक

आ ध अ ग्र पृ 548 क्रि को पृ 256 जै व्र वि स पृ 87

★★★

8- अनन्तदर्श न व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी
व्रत की अवधि - 4 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सुपार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अनन्तसम्यग्दर्शनाय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - जिनशासन श्रद्धानवर्धक

★★★

9- अनन्तभव कर्महराष्टमी

व्रतारम्भ तिथि - अष्टाह्निका की अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - क्रम से 4 माह की प्रत्येक अष्टमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री पार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अनन्त परिभ्रमण क्षयकारक

★★★

10- अनन्तमिथ्यात्वनिवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी
व्रत की अवधि - 4 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी को प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सुपार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अनन्तसम्यग्दर्शनाग्य नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - विपरीत मान्यता अभावकारक

***

11- अनन्तमिथ्यात्वनिवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख कृष्ण द्वितीया
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक वैशाख कृष्ण द्वितीया को प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सिद्धपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अनन्तानन्त-परमसिद्धेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - विपरीत मान्यता अभावकारक

***

12- अनन्त व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल एकादशी
व्रत की अवधि - 4 दिन (14 वर्ष)
व्रत की विधि - एकादशी को उपवास द्वादशी को एकाशन त्रयोदशी को काजी-छाछ अथवा छाछ में

जौ या बाजरे के आटे को मिलाकर महेरी (एक प्रकार की कडी बनाकर) लेना और चतुर्दशी को उपवास करना चाहिए। इस विधि अनुसार पालन करने की शक्ति न हो तो शक्त्यनुसार पालन करें।

व्रत में पूजा - श्री अनन्तनाथ पूजा

व्रत जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्ह ह स अनन्तकेवलिने नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - सुख समृद्धिदायक

★★★

13- अनन्तवीर्य व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी

व्रत की अवधि - 4 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी को प्रोषधपूर्वक उपवास करे।

व्रत की पूजा - श्री अरिहंत पूजा (देवपूजा)

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तवीर्य जिनाय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - अतुल बलदायक

★★★

14- अनन्तसुख व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्लत्रयोदशी

व्रत की अवधि - 4 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को प्रोषध पूर्वक उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री सिद्धपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तसुखसम्पन्नजिनाय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - शाश्वत सुखकारक

★★★

15- अनन्त सौन्दर्य व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र कृष्ण द्वितीया

व्रत की अवधि - 1 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक द्वितीया को उपवास करे।

व्रत की पूजा - श्री सहस्रनाम पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अष्टोत्तरसहस्र नामधारक श्रीजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - सहस्रनाम विधान

व्रत का फल - उत्कृष्ट सौन्दर्यवर्धक

★★★

16- अनन्त ज्ञान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी

व्रत की अवधि - ९ तिथि पूर्वक

व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करे।

व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - अनतज्ञानदायक

★★★

17- अनिवृत्तिकरण गुणस्थान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह 8 दिन (नौ तिथि पूर्वक)
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री रत्नत्रय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - कषाय निवृत्तिदायक

★★★

18- अपकाय निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल सप्तमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक सप्तमी को उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री सुपार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्हं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रायनम
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - एकेन्द्रिय पर्याय अभावकारक

★★★

19- अपूर्वकरण गुणस्थान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल षष्ठी
व्रत की अवधि - 4 माह 8 दिन(9 तिथि)
व्रत की विधि - प्रत्येक षष्ठी को प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री महावीर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं परमविशुद्धिजिनाय नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - उत्कृष्ट परिणामवर्धक

★★★

20- अपूर्व व्रत (त्रैलोक्यतिलक)

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - तीन वर्ष
व्रत की विधि - भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा से तृतीया नक उपवास।
व्रत की पूजा - त्रिकाल चतुर्विंशति पूजा/अकृत्रिम चैत्यालयों की पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री त्रिलोकसम्बन्धि कृत्रिमाकृत्रिम-जिनालयेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - त्रिलोक जिनालय विधान
व्रत का फल - उत्कृष्ट पददायक
व्र क को पृ 126

★★★

21- अप्रमत्तगुणस्थान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 14 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक शुक्ल अष्टमी को उपवास करे ।
व्रत की पूजा - श्री नेमिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्हं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - प्रमाद क्षयकारक

★★★

22- अमूढ़दृष्ट्यग व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल चतुर्थी
व्रत की अवधि - 8 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक कार्तिक शुक्ल चतुर्थी को प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री रत्नत्रय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अमूढदृष्टिसम्यग्दर्शनागाय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - रूढि (मूढ) मान्यता निवारक

***

23- अयोग केवली गुणस्थान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल द्वादशी
व्रत की अवधि - 14 माह
व्रत की विधि प्रत्येक माह की शुक्ल द्वादशी को प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सिद्धपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हं अनन्तानन्तपरमसिद्धेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - सिद्धत्व पद प्रदाता

***

24- अरतिकर्मनिवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र कृष्ण सप्तमी
व्रत की अवधि - 4 माह 8 दिन (नौ तिथि)
व्रत की विधि - प्रत्येक सप्तमी को प्रोषध पूर्वक उपवास करे।

व्रत की पूजा - श्री कुन्थुनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - मोहकर्म अभावकता

★★★

25- अरनाथ तीर्थंकर चक्रवर्ती कामदेव व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की शुक्ल अष्टमी

व्रत की अवधि - 4 अष्टमी 3 चतुर्दशी

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करे।

व्रत की पूजा - श्री अरनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्ली अर्ह श्री अरनार्थजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - तीर्थंकर एव कामदेव पदप्रदाता

★★★

26- अविरत गुणस्थान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी

व्रत की अवधि - 4 माह 8 दिन

व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्थी को प्रोषध पूर्वक उपवास करे।

व्रत की पूजा - रत्नत्रय पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री विशुद्धसम्यग्दर्शनाय नम ।

उद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान

व्रत का फल - उत्कृष्ट सयम प्रदाता

★★★

27- अश्विनी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - जिस दिन अश्विनी नक्षत्र हो
व्रत की अवधि - दो वर्ष तीन माह में 28 उपवास
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ ग्रहदशा निवारक

आ ध अ प्र पृ 548

★★★

28- अशोकरोहिणी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - दो वर्ष तीन माह
व्रत की विधि - रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री वासुपूज्य पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - शोक निवारक

जै व्र वि म पृ 92

★★★

29 - आष्टाह्निक व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक फाल्गुन आषाढ तीनो मास मे शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णमासी तक
व्रत की अवधि - उत्तम 17 वर्ष, मध्यम 8वर्ष जघन्य 5वर्ष सामान्य 3 वर्ष

व्रत की विधि - 1 **उत्तम विधि**-सप्तमी को एकाशन एव अष्टमी से पूर्णमासी तक उपवास पूर्वक प्रतिपदा को पारणा करे।

2 **मध्यम विधि**-प्रोषध पूर्वक अष्टमी का उपवास कर नवमी को पारणा दशमी को मात्र जल एव चावल एक बार ले एकादशी को एक बार अल्पाहार करे द्वादशी को एकाशन त्रयोदशी को नीरस आहार से एकाशन एव चतुर्दशी को केवल चावल से एकाशन कर पूर्णमासी का निर्जल उपवास कर एकम् को पारणा करे।

3 जघन्य विधि-अष्टमी से पूर्णमासी तक एकाशन करे। (अष्टमी एव पूर्णिमा को उपवास शक्त्यनुसार)

व्रत की पूजा - नन्दीश्वरद्वीप पूजा

व्रत का जापमन्त्र - अष्टमी से पूर्णिमा तक क्रमश एक-एक मन्त्र की जाप करे

1 ॐ ह्री नन्दीश्वरसज्ञाय नम ।
2 ॐ ह्री अष्टमहाविभूतिसज्ञाय नम ।
3 ॐ ह्री त्रिलोकसारसज्ञाय नम ।
4 ॐ ह्रीं चतुर्मुखसज्ञाय नम ।
5 ॐ ह्रीं पञ्चमहालक्षणसज्ञाय नम ।
6 ॐ ह्री स्वर्गसोपानसज्ञाय नम ।
7 ॐ ह्री स्वर्गसम्पत्तिसज्ञाय नम ।
8 ॐ ह्री इन्द्रध्वजसज्ञाय नम ।

उद्यापन का विधान - नन्दीश्वर विधान

व्रत का फल - विशिष्ट विभूति कारक

आ ध अ प्र पृ 548 जै व्र वि स पृ 35 क्रि को पृ 245

जै व्र ति नि पृ 200 व्र क को पृ 153

★★★

30- अष्टकर्म चूर्ण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 64 दिन

व्रत की विधि - 1 ज्ञानावरणी कर्म क्षय के लिए-8 दिन उपवास

2 दर्शनावरणी कर्म क्षय के लिए-8 दिन मात्र एक वार जल

3 वेदनीय कर्म क्षय के लिए-8 दिन एक बार फलाहार

4 मोहनीय कर्म क्षय के लिए-8 दिन एक ग्रास आहार

5 आयु कर्म क्षय के लिए-8 दिन एक बार आवली भात

6 नाम कर्म क्षय के लिए-8 दिन पूडी से एकाशन

7 गोत्र कर्म क्षय के लिए-8 दिन भात से एकाशन

8 अन्तराय कर्म क्षय के लिए-8 दिन भात का एक दाना

व्रत की पूजा - सिद्ध पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अष्टकर्मरहिताय श्री सिद्धाधिपतये नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अष्टकर्मों का क्षयकारक

★★★

31- अष्टमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की अष्टमी
व्रत की अवधि - आठ वर्ष दो माह
व्रत की विधि - 196 उपवास करे (प्रत्येक अष्टमी) 8 वर्ष की 192 अष्टमी दो अधिक माह की 4 अष्टमी कुल 196 अष्टमी।
व्रत की पूजा - श्री सिद्ध पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हं णमो सिद्धाण सिद्धचक्राधिपतये नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - सिद्धगुण प्रदायक

जै व्र वि स प 123 आ ध अ ग्र पृ 548

★★★

32- अष्टप्रातिहार्य व्रत

व्रतारम्भ तिथि - फाल्गुन शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 8 दिन (8 वर्ष)
व्रत की विधि - पूर्णिमा तक उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री नदीश्वरद्वीप पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ हीं अर्ह अष्टप्रातिहार्यसयुक्तजिनेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - अरिहत पद प्रदाता

★★★

33- अहिगही व्रत

व्रतारम्भ तिथि - अष्टाह्निका की अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी को प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ हा हीं हू हौ ह अ सि आ उ सा नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - वियोग वेदना निवारक

★★★

34- अहिसा महाव्रत व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कृष्ण पञ्चमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक पञ्चमी को उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्ली अह श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सकल हिसा निवारक

★★★

35- अक्षय तृतीया व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल तृतीया
व्रत की अवधि - तीन वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - कुलपरम्परा वर्धक
अ ध अ ग्र पृ 548

★★★

36- अक्षय फल दशमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल दशमी
व्रत की अवधि - दस वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्ली अर्ह श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - कुलवर्धक
जै व्र ति नि पृ 50 क्रि को पृ 255 आ ध अ ग्र पृ 548 जै व्र वि स पृ 86 स वा परि ख पू पृ 87

★★★

37- अक्षयनिधि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल दशमी
व्रत की अवधि - दस वर्ष
व्रत की विधि - श्रावण शुक्ल दशमी का उपवास श्रावण शुक्ल एकादशी से भाद्रपद कृष्ण नवमी तक एकाशन करें तथा भाद्रपद कृष्ण दशमी को उपवास इस प्रकार कुल 20 उपवास एव 280 एकाशन पूर्वक करें।

व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नमः ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - अनन्त चतुष्टय कारक

आ ध अ ग्र पृ 548 जै व्र वि स पृ 83 व्र जै ति नि पृ 35 233 249 क्रि को पृ 252 स वा को परि ख पू पृ 87

★★★

38- अक्षय सुख सम्पत्ति

व्रतारम्भ तिथि - फाल्गुन शुक्ल प्रतिपदा

व्रत की अवधि - 1 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक महीने की प्रतिपदा का उपवास करें।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - शाश्वत सुख प्रदायक

★★★

39- अज्ञान निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - अष्टान्हिका पर्व की अष्टमी

व्रत की अवधि - 4 माह

व्रत की विधि - 8 दिन तक एकासन करें।

व्रत की पूजा - श्री शान्तिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - शातिनाथ विधान

व्रत का फल - चोरी के परिणाम का अभाव

★★★

40- अज्ञान मिथ्यात्व निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख कृष्ण द्वितीया

व्रत की अवधि - पाँच वर्ष

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास

व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन-धर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो नम

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी

व्रत का फल - सम्यक् ज्ञान प्रदायक

41- आकाश पञ्चमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी

व्रत की अवधि - पाँच वर्ष

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री सुमतिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - निरोगता दायक

आ ध अ ग्र पृ 549 क्रि को पृ 255 जै व्र वि स पृ 85 स वा को परि ख पू पृ 87

★★★

42- आचाम्ल वर्द्धमान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी

व्रत की अवधि - 23 दिन (5वर्ष)

व्रत की विधि - व्रत आरम्भ करने के प्रथम दिन एकाशन अगले दिन उपवास तत्पश्चात् एक ग्रास वृद्धि के क्रम से एक ग्रास से लेकर 10 ग्रास तक 10 दिन पर्यन्त भात और इमली पानी का भोजन करें। उसके अगले दिन से पुन एक-एक ग्रास कम करते हुए दशवें दिन एक ग्रास ग्रहण करे पश्चात् अगले दिन दोपहर के बाद एक बार परोसे भोजन से एकाशन करें।(ग्रन्थों में भोजन का क्रम अलग-अलग मिलता है।

व्रत की पूजा - श्री वर्द्धमान पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्ली अर्ह श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - शारीरिकक्षमता वर्धक/सयम साधना वर्धक

आ ध अ ग्र पृ 549 ह पु पृ 271 व्र क को पृ 164
जै व्र वि स पृ 107

★★★

43- आचारवर्द्धन व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - एक सौ उन्नीस दिन

व्रत की विधि - 100 उपवास 19 पारणा पूर्वक करें उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2, पारणा 2 इसी

क्रम में 3 4 5 6 7 8 9 10 9 8 7 6 5 4 3 2 एव 1 उपवास करे तथा बीच-बीच मे एक-एक पारणा करें। यह व्रत अखण्ड रूप से करे।

व्रत की पूजा - पञ्चबालयतिपूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - उत्कृष्ट चारित्र प्रदायक

सु त पृ 161 आ ध अ ग्र पृ 549 जै व्र वि म पृ 107

★★★

44- आर्तध्यान निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख कृष्ण एकादशी
व्रत की अवधि - 1 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक माह की एकादशी का उपवास।
व्रत की पूजा - श्री श्रेयासनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्लीं अर्ह श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - वेदना परिणाम निवारक

★★★

45- आदिनाथ जयन्ती व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र कृष्ण नवमीं
व्रत की अवधि - नौ वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - जन्ममरण नाशक

आ ध अ ग्र पृ 549 जै व्र वि स पृ 105

★★★

46- आदिनाथ शासन जयन्ती व्रत

व्रतारम्भ तिथि - फाल्गुन कृष्ण एकादशी
व्रत की अवधि - ग्यारह वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजन - श्री आदिनाथ पूजन
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
विशेष - इस दिन भगवान की प्रथम दिव्यध्वनि खिरी थी।
व्रत का फल - शुभ सकल्पवर्धक

आ ध अ ग्र पृ 549 जै व्र वि स पृ 105

★★★

47- आदिनाथ निर्वाण महोत्सव व्रत

व्रतारम्भ तिथि - माघ कृष्ण चतुर्दशी
व्रत की अवधि - चौदह वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - निर्वाण प्रदायक

आ ध अ ग्र पृ 549 जै व्र वि स पृ 105

★★★

48- आयुकर्म निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक पञ्चमी के दिन उपवास करे। कार्तिक शुक्ल पञ्चमी तक व्रत करके उद्यापन करे।
व्रत की पूजा - श्री सुमतिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्ह श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - आयुकर्म क्षयकारक

★★★

49- आहारक शरीर निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 5 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक पञ्चमी के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ हा हीं हू हौ ह अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - सशय निवारक-क्षेमकारक

★★★

50- आहारपर्याप्ति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख कृष्ण तृतीया
व्रत की अवधि - 6 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक वैशाख कृष्ण तृतीया का उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - आहार रहित सिद्धत्व पदप्रदायक

★★★

51- इन्द्रध्वज व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 14 अष्टमी
व्रत की विधि - उपवास पूर्वक।
व्रत की पूजा - अकृत्रिम जिनालय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री मध्यलोक-सम्बन्धि- चतुशताष्ट-पञ्चाशत जिनालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - श्री त्रैलोक्य जिनालय विधान
व्रत का फल - कुलवर्धक एव व्रत दोष निवारक

★★★

52- इन्द्रिय पर्याप्ति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख कृष्ण पञ्चमी
व्रत की अवधि - 6 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक वैशाख कृष्ण पञ्चमी को प्रोषधपूर्वक उपवास।

व्रत की पूजा - श्री पद्मप्रभ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्हं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - अतीन्द्रिय पददायक

* * *

53- उच्छवास पर्याप्ति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख कृष्ण षष्ठी

व्रत की अवधि - 6 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक वशाग्व कृष्ण षष्ठी को उपवास करे।

व्रत की पूजा - श्री पदमप्रभ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ही श्रीं क्ली अर्ह श्री पदमप्रभजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान ।

व्रत का फल - श्वास रोग निवारक

* * *

54- उत्तरायण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - माघ पूर्णिमा

व्रत की अवधि - 6 माह

व्रत की विधि प्रत्येक माह की पूर्णिमा को प्रोषध पूर्वक उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री पद्मप्रभ जी

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - दुष्कर्म निवारक एव बुद्धि प्रदायक

★★★

55- उपगूहनाग व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 8 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक कार्तिक शुक्ल पञ्चमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - रत्नत्रय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हं उपगूहनागसम्यग्दर्शनाय नम ।
उद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान
व्रत का फल - निदाभाव क्षयकर्ता

★★★

56- उपभोगान्तराय निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी के दिन उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री अनन्तनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - भोगोपभोग सामग्री अनाशक्ति हेतु

★★★

57- उपशान्त कषाय गुणस्थान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल नवमी
व्रत की अवधि - 14 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक नवमी के दिन उपवास।
व्रत की पूजा - श्री श्रेयासनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री श्रेयासनाथ जिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - कषाय निवारक

★★★

58- उपसर्ग निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल 13
व्रत की अवधि - 9 वर्ष
व्रत की विधि - श्रावण शुक्ल 13 को प्रोषध पूर्वक उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री पार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्ली ऐ अर्ह श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पदमावतीसेविताय ममेप्सित कार्य कुरु-कुरु ह्री नम।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - उपसर्ग निवारक

★★★

59- ऋषि पञ्चमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - पॉच वर्ष पॉच माह
व्रत की विधि - प्रत्येक माह की शुक्ल पञ्चमी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री सुमतिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - ऋद्धि सिद्धि प्रदाता
आ ध अ ग्र पृ 549 जै व्र वि स पृ 06 व्र क को पृ 200

★★★

60- एकान्तनय निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण पञ्चमी
व्रत की अवधि - 7 पञ्चमी (3 माह 8 दिन)
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सरस्वती पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री जिनमुखोद्भव वाग्वादिनीसरस्वत्यै नम ।
उद्यापन का विधान - श्रुतस्कन्ध विधान
व्रत का फल - अनेकान्त दर्शन प्रदाता

★★★

61- एकान्तमिथ्यात्व निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल द्वादशी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म- जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - सरागी देवों की मान्यता परिहारकारक एव एकात मान्यता निवारक

★★★

62- एकावली व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल प्रतिपदा

व्रत की अवधि - एक वर्ष में 84 दिन

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करे। प्रत्येक मास में शुक्ल पक्ष की 1 5 8 14 कृष्ण पक्ष की 4 8 14 के दिन उपवास करे।

व्रत की पूजन - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

नोट- लघु एकावली व्रत मे एक वर्ष में 24 उपवास एव 24 पारणा पूर्वक व्रत करे शेष विधि उपरोक्त समान है।

व्रत का फल - अपवग दायक

जै व्र ति नि पृ 170 क्रि को पृ 264 ह पु पृ 259 जे व्र वि म पृ 76 77 आ ध अ ग्र पृ 50 म वा श को परि ख पू पृ 87 त्र क को पृ 186 कि को पृ 264

★★★

63- एकेन्द्रिय जाति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल प्रतिपदा

व्रत की अवधि - 7 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक सप्तमी के दिन प्रोषधपूर्वक उपवास करे।

व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - भक्तामर विधान

व्रत का फल - स्थावर नामकर्म निवारक

★★★

64- एसोदश व्रत

व्रतारामभ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 650 दिन

व्रत की विधि - 550 उपवास एव 100 पारणाएँ लगातार एक उपवास एक पारणा दो उपवास एक पारणा तीन उपवास एक पारणा इसी क्रम मे बढाते हुए दस उपवास तक बढावे घटते क्रम मे उपवास एक पारणा एक तक करे। इस प्रकार 10 आवृत्ति में पाँच सौ पचास उपवास एव सौ पारणाएँ हो जाती है

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - तप-बल-वर्धक

आ ध अ ग्र पृ 550 जै व्र वि स पृ 100 व्र क को पृ 200 स वा श का परि ख पू पृ 87

★★★

65- एसोनव व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 486 दिन
व्रत की विधि - 405 उपवास 81 पारणा यथा उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1 इसी क्रम मे 9 उपवास तक बढे घटते क्रम मे उपवास 1 पारणा 1 तक करे ऐसी ही 9 आवृत्ति मे 405 उपवास एव 81 पारणा लगातार करे।
व्रत की पूजा - सिद्ध पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अनन्तानन्तपरमसिद्धेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - तप-बल वर्धक

आ ज अ ग्र पृ 550 जै ज वि म पृ 99 व्र क को पृ 200

★ ★ ★

66- औदारिक शरीर निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 5 माह 8 दिन
व्रत की विधि - प्रत्येक पञ्चमी के दिन उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - शारीरिक विकृति निवारक

★ ★ ★

67- कनकावली व्रत (वृहत्)

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन शुक्ल प्रतिपदा

व्रत की अवधि - 522 दिन

व्रत की विधि - 434 उपवास एव 88 पारणाएँ लगातार यथा उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1 उपवास 3 पारणा 1(9 वार) उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1 (क्रमश 16 तक वृद्धि करे) उपवास 3 पारणा 1 (34 बार) उपवास 16 पारणा 1 उपवास 15 पारणा 1 (क्रमश उपवास1 पारणा 1 तक धटायें) उपवास 3 पारणा 1 (9 बार) उपवास 2 पारणा 1 उपवास1 पारणा 1

व्रत की पूजा - सिद्ध परमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अनन्तानन्तपरमसिद्धेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - अशुभ कर्म निर्जरा कारक

आ ध अ ग्र पृ 550 जै व्र वि स पृ 78

★★★

68- कनकावली व्रत (लघु)

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन शुक्ल प्रतिपदा

व्रत की अवधि - एक माह या एक वर्ष शक्त्यनुसार

व्रत की विधि - व्रत दो प्रकार से हैं

मासिक कनकावली- आश्विन शुक्ल प्रतिपदा पञ्चमी और दशमी तथा कार्तिक

कृष्ण दोज षष्ठी और द्वादशी इस प्रकार 6 उपवास करे।

वार्षिक कनकावली- आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से प्रत्येक माह के शुक्ल पक्ष की 1 5 10 और कृष्ण पक्ष की 2 6 12 तिथियों के उपवास करे।

इस प्रकार वर्ष मे 72 उपवास करे। इस व्रत में मास गणना अमावस्या से अमावस्या पर्यन्त ली जाती है।

व्रत की पूजा - श्री सिद्ध पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अनन्तानन्तपरमसिद्धेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - अशुभ कर्म निर्जराकारक

सृ त पृ 161 ह पु पृ 261 क्रि को पृ 266 जैव्रविसपृ 78 जैव्रतिनिप210

★★★

69- कन्दर्प व्रत

व्रतारम्भ तिथि - मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी

व्रत की अवधि - 16 अष्टमी पूवक (8 माह)

व्रन की विधि - प्रत्येक अष्टमी को उपवास करे।

व्रत की पूजा - श्री पार्श्वनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - कमदहन विधान

व्रत का फल - अशुभ विचार निवारक

★★★

70- कन्या (राशि) सक्रमण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद की कन्या सक्रमण तिथि
व्रत की अवधि - 12 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री पद्मप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ ग्रहदशा नाशक

★★★

71- करकुच व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल दशमी
व्रत की अवधि - 5 तिथि पर्यंत
व्रत की विधि - प्रत्येक शुक्ल। दशमी को उपवास पूर्वक।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व साधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सयम सद्भावना वर्धक

72- कर्कसक्रमण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ मास की कर्क सक्रमण तिथि
व्रत की अवधि - 12 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री अभिनन्दननाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ ग्रहदशा नाशक

★★★

73- कर्मचूर व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 2 वर्ष 8 माह
व्रत की विधि - 1 आठ अष्टमी के 8 उपवास

2 आठ अष्टमी के 8 काजिकाहार से एकाशन

3 आठ अष्टमी के 8 तदुल भोजन (चावल)

4 आठ अष्टमी के एक-एक ग्रास भोजन

5 आठ अष्टमी के एक कुरछी भोजन से एकाशन

6 आठ अष्टमी के एक रस एव एक अन्न से एकाशन

7 आठ अष्टमी के एकाशन (एक बार परोसे भोजन से)

8 आठ अष्टमी के रूक्षाहार पूर्वक एकाशन करें

व्रत की पूजा - कर्मचूर व्रत
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री णमो सिद्धाण सिद्धपरमेष्ठिने नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - सम्पूर्ण कर्म क्षय कारक

व्र क को पृ 202 स बा श को परि ख पू पृ 87 क्रि को पृ 290 जै व्र वि पृ 56 आ ध अ ग्र पृ 550 जै व्र ति नि पृ 262 जै व्र वि स पृ 48 96

★★★

74- कर्मदहन व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल चतुर्थी
व्रत की अवधि - 156 उपवास पूर्वक
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास एव व्रत सम्बन्धी जाप (परिशिष्ट से) करें।
7 चतुर्थी के 7 उपवास
3 सप्तमी के 3 उपवास
36 नवमी के 36 उपवास
1 दशमी का 1 उपवास
16 द्वादशी के 16 उपवास
85 चतुर्दशी के 85 उपवास
8 अष्टमी के 8 उपवास
व्रत की पूजा - लघु कर्मदहन विधान
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - अष्ट कर्म निवारक एव पारमार्थिक सुख दायक

★★★

75- कर्मनिर्जरा व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 4 माह में 4 दिन
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
दर्शनविशुद्धि निमित्त आषाढ शुक्ल चतुर्दशी का उपवास सम्यक्ज्ञान भावना के निमित्त श्रावण शुक्ल चतुर्दशी का उपवास सम्यक् चारित्र के निमित्त भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी

का उपवास सम्यक् तप के निमित्त आसोज शुक्ल चतुर्दशी का उपवास।

व्रत की पूजा - सिद्ध पूजा

व्रत का जापमन्त्र - क्रमश

1 ॐ ह्री सम्यग्दर्शनाय नम ।

2 ॐ ह्री सम्यग्ज्ञानाय नम ।

3 ॐ ह्री सम्यक्चारित्राय नम ।

4 ॐ ह्री सम्यक्तपसे नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - अशुभ कर्म निवारक एव परमार्थिक सुख दायक

व्र क को पृ 213 आ ध अ ग्र पृ 551 जै व्र ति नि पृ 213 जै व्र वि स प 95 क्रि को पृ 289 म वा श को परि ख पू पृ 87

★★★

76- कर्म निर्झर व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल द्वादशी

व्रत की अवधि - 8 वर्ष

व्रत की विधि - 12 13 14 तीन दिन तक शक्त्यानुसार उवशस या एकाशन करें।

व्रत की पूजा - कर्म निर्झर पूजन

व्रत का जापमन्त्र - प्रथम दिन- ॐ ह्रीं द्वादश मिथ्यानिवारण हराय भगवज्जिनाय नम ।

द्वितीय दिन- ॐ ह्रीं द्वादश तप धारकाय भगवज्जिनाय नम ।

तृतीय दिन- ॐ ह्रीं द्वादश भावना चिन्तक भगवज्जिनाय नम ।

उद्यापन का विधान - कर्म निर्झर व्रत पूजा
व्रत का फल - अशुभ कर्म निवारक एव परमार्थिक सुख दायक

77- कर्मक्षय व्रत

व्रताम्भ तिथि - किसी भी माह की चतुर्थी
व्रत की अवधि - 74 माह (व्रत के दिन 296)
व्रत की विधि- क्रमश एक उपवास एव एक पारणा पूर्वक लगातार एक सौ अडतालीस उपवास, एक सौ अडतालीस पारणा चतुर्थी के 7 उपवास सप्तमी के 3 नवमी के 36 उपवास दशमी का 1 द्वादशी के 16 उपवास चतुर्दशी के 85।
व्रत की पूजा - सिद्ध पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं सर्वकर्मरहितसिद्धाय नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - अशुभ कर्म निवारक एव पारमार्थिक सुख दायक

स वा श को परि ख पू पृ 87 आ ध अ ग्र पृ 550 ह पु पृ 273 जै व्र वि स पृ 121 सु त पृ 158

★★★

78- कलश दशमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल दशमी
व्रत की अवधि - 10 वर्ष
व्रत की विधि - प्रोषध पूवक उपवास।
व्रत की पूजा - शीतलनाथ/वासुपूज्य सहित 10 पूजायें

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्लीं अर्ह श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नम
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

विशेष - व्रत के दिन कलश में अष्टद्रव्य भरकर मन्दिर जी मे भेंट करे।

व्रत का फल - सौभाग्य एव कुलवर्धक

★★★

79- कल्पकुज व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी अष्टाह्निक की अष्टमी से चतुर्दशी तक

व्रत की अवधि - 8 माह 8 दिन

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास या एकाशन।

व्रत की पूजा - सहस्रनाम पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक-सहस्रनामधारकजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - सहस्रनाम विधान

व्रत का फल - अशुभ काल निवारक

★★★

80- कल्पामर व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल चतुर्दशी

व्रत की अवधि - 17 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्दशी को उपवास।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हत्परमेष्ठिने नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - स्वर्गादिक ऋद्धि प्रदायक

★★★

81- कल्याणक व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कृष्ण द्वितीया
व्रत की अवधि - 360 दिन
व्रत की विधि - जिस कल्याणक की तिथि हो उसके एक दिन पहले दोपहर को एक बार का परोसा भोजन करें तिथि के दिन उपवास और पारणा के दिन आचाम्ल प्रकार पञ्च कल्याणक की 120 तिथियों के 120 उपवास 360दिन में पूरे करें।
व्रत की पूजा - जिन तीर्थंकर का कल्याणक हो उनकी पूजा।
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र एव व्रत सम्बधी तीर्थंकर की जाप।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - आत्म कल्याणभावना वर्धक

आ ध अ ग्र पृ 551 क्रि को पृ 300 व्र वि स पृ 69-70

नोट - कुछ तीर्थंकरों के 2-3 कल्याणक एक ही तिथि में पडते हैं इसलिए व्रत के दिन कम होते हैं। क्रियाकोष में इसका विशद् विवेचन है। उसके अनुसार तिथियाँ कम होने पर भी व्रत को पूर्ण माना गया है।

★★★

82- कल्याण तिलक व्रत

व्रतारम्भ तिथि - फाल्गुन शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 8 वर्ष
व्रत की विधि - अष्टमी से पूर्णिमा तक एकासन करें।
व्रत की पूजा - श्री चौबीस तीर्थकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हं श्री चतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - आत्मोत्थान कर्ता

★★★

83- कल्याणमाला व्रत

व्रतारम्भ तिथि - अष्टाह्निक की अष्टमी (कोई एक)
व्रत की अवधि - 4 माह (लगातार)
व्रत की विधि - दस दिन तक उपवास या एकाशन करे। व्रत अगली अष्टाह्निका तक करे।
व्रत की पूजा - श्री पार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्ह श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - पुण्य प्रदायक

★★★

84- कल्याणमगल व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल त्रयोदशी
व्रत की अवधि - 13 त्रयोदशी
व्रत की विधि - प्रत्येक त्रयादशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री विमलनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री विमलनाथ-जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - पाप निवारक

***

85- कल्याण मन्दिर व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी मास की चतुर्दशी

व्रत की अवधि - 44 चतुर्दशी पूर्वक

व्रत की विधि - प्रोषध पूर्वक उपवास

व्रत की पूजा - कल्याण मन्दिर स्तोत्र पूजन

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्लीं ऐ अर्हं कमठोपद्रवजित पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - कल्याण मन्दिर विधान

व्रत का फल - उपसर्ग निवारक

***

86- कलधौतार्णव व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल अष्टमी

व्रत की अवधि - 9 तिथि पूर्वक

व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।

व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिन धर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - कुल परम्परा कारक

***

87- क्लीचतुर्दशी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 4 वर्ष
व्रत की विधि - आषाढ श्रावण भाद्रपद आश्विन इन चार माह की शुक्ल चतुर्दशी के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री अनन्तनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - कर्म निर्जरा कारक

आ ध अ ग्र पृ 551 व्र क को पृ 202 जै व्र वि स पृ 103 म वा श को परि ख पृ पृ 87

★★★

88- कवल चन्द्रायण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की अमावस्या
व्रत की अवधि - 1 माह
व्रत की विधि - अमावस्या का उपवास एकम् को एक ग्रास दोयज का 2 ग्रास इसी क्रम में बढाते हुए चतुर्दशी को 14 ग्रास एव पूर्णमासी को उपवास करें। पश्चात् कृष्ण पक्ष की पडवा को 14 ग्रास दोयज को तेरह ग्रास इसी क्रम में भोजन घटाते हुए चतुर्दशी को एक ग्रास भोजन लें एव अमावस्या का उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान/ कवलचन्द्रायण उद्यापन (सस्कृत)

व्रत का फल - तप बलवर्धक

आ ध अ ग्र पृ 551 जै व्र वि स पृ 98 व्र ति नि पृ 159 व्र क को पृ 206 ह पु पृ 270 स वा श को परि ख पू पृ 87 क्रि को पृ 280

★★★

89- काजिक व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की प्रतिपदा

व्रत की अवधि - एक वर्ष के अन्दर चौसठ दिन

व्रत की विधि - चौसठ दिन तक सिर्फ काजिक आहार अर्थात् जल के साथ मात्र चावल लें यदि शक्ति हो तो व्रत दो गुना-तीन गुना भी कर सकते हैं।

व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - सयम-तप-वर्धक

आ ध अ ग्र पृ - 550 व्र क को पृ - 201 जै व्र वि स पृ - 100

★★★

90- काजीबारस व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल द्वादशी
व्रत की अवधि - 12 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री वासुपूज्य पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सयम-तप-वर्धक

आ ध अ ग्र पृ 551 ग्र क को पृ 201 जै व्र वि स पृ 106

★★★

91- कापोत लेश्या निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र कृष्ण चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 6 वर्ष
व्रत की विधि - चैत्र कृष्ण चतुर्दशी को उपवास करें ।
व्रत की पूजा - श्री पार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ कषाय परणति निवारक

★★★

92- कायगुप्ति व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - 4 माह

व्रत की विधि - एक अन्न से एकासन।
व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - भक्तामर विधान
व्रत का फल - साधना शक्तिवर्धक

★★★

93- कार्मण शरीर निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 5 माह (10 तिथि)
व्रत की विधि - प्रत्येक पञ्चमी को उपवास करे।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हं श्री वृषभादिचतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - कर्मरहित सिद्धत्व पद प्रदायक

★★★

94- कारुण्य व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 6 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक अषाढ शुक्ल चतुर्दशी को उपवास।
व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - भक्तामर विधान
व्रत का फल - करुणा बुद्धिवर्धक

★★★

95- कीर्तिप्राप्त व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 6 माह
व्रत की विधि - कार्तिक की अष्टाह्निका तक प्रत्येक अष्टमी के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सुपार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमष्ठी विधान
व्रत का फल - अपयश निवारक

★★★

96- कुन्थुनाथ तीर्थकर चक्रवर्ती कामदेव व्रत

व्रतारम्भ तिथि - माघ शुक्ल प्रथम शुक्रवार
व्रत की अवधि - 6 शुक्रवार
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री कुन्थुनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्ली अर्हं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - तीर्थंकर कामदेव पद प्रदायक

★★★

97- कुनय निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी
व्रत की अवधि - 7 तिथि
व्रत की विधि - प्रत्येक द्वादशी के दिन उपवास करें ।
व्रत की पूजा - श्री सुपाश्र्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुपाश्र्वनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - विपरीत नय निवारक

***

98- कुम्भसक्रमण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - माघ मास की कुम्भ सक्रमण तिथि
व्रत की अवधि - 12 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री श्रेयासनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ ग्रहदशा निवारक

***

99- कृष्णपञ्चमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण पञ्चमी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सुमतिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ चिन्तन निवारक
आ ध अ ग्र पृ 551 व्र क को पृ 201 जै व्र वि स पृ 101

★★★

100- कृष्ण लेश्या निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र कृष्ण द्वादशी
व्रत की अवधि - 6 वर्ष
व्रत की विधि - चैत्र कृष्ण द्वादशी को उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री नमिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ लेश्या क्षीणकर्ता

★★★

101- केवल बोध व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल एकादशी
व्रत की अवधि - 9 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक एकादशी के दिन उपवास।
व्रत की पूजा - श्री पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सद्‌बोध समाधि भावनावर्धक

★★★

102- कैवल्य सुखदाष्टमी

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी चतुर्दशी का उपवास।
व्रत की पूजा - देव पूजा एव सरस्वती पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिने नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - ऐश्वर्यप्रदाता

★★★

103- केवलज्ञान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 9 तिथि पर्यन्त
व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्दशी के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - विशिष्ट विभूतिदायक

★★★

104- कोकिला पञ्चमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कृष्ण पञ्चमी
व्रत की अवधि - 5वर्ष प्रत्येक वर्ष 5 माह (कार्तिक कृष्ण 5तक)
व्रत की विधि - प्रत्येक माह की कृष्ण पञ्चमी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-पञ्च-परमेष्ठिभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - विद्वेष निवारक
आ ध अ ग्र पृ 551 व्र ति नि पृ 263 जै व्र वि स पृ 93 क्रि को पृ 279 व्र क को पृ 202 म वा श को परि ख पू पृ 87

★★★

105- गणधर वलय व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी अष्टाह्निका की अष्टमी
व्रत की अवधि - 24वर्ष 12वष 9वर्ष 8वर्ष या 3 वर्ष किया जा सकता है ।
व्रत की विधि - अष्टमी से पूर्णिमा तक उपवास/एकाशन शक्त्यनुसार।
व्रत की पूजा - श्री गणधरवलय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ हा ह्रीं हू ह्रौ ह अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौ झ्रौ नम ।
उद्यापन का विधान - गणधरवलय विधान
व्रत का फल - कार्यसिद्धि दायक

★★★

106- गन्धअष्टमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की अष्टमी
व्रत की अवधि - 352 दिन
व्रत की विधि - दो सौ अठ्ठासी उपवास चौसठ पारणा लगातार एक उपवास एक पारणा दो उपवास एक पारणा

तीन उपवास एक पारणा, चार उपवास एक पारणा
पाँच उपवास एक पारणा छह उपवास एक पारणा
सात उपवास एक पारणा आठ उपवास एक पारणा
आठ उपवास एक पारणा सात उपवास एक पारणा
इसी क्रम में एक उपवास एक पारणा इस तरह चार आवृत्ति

व्रत की पूजा - सिद्ध पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं श्री अनन्तानन्तपरम सिद्धेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - सयम वृद्धिकारक
व्रत का फल - चोरी के परिणाम का अभाव
आ ध अ ग्र पृ 551 जै व्र वि स पृ 11८ व्र क को पृ 256

★★★

107- गरुड़ पञ्चमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सुमतिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - निर्विष कारक विद्या सिद्धकारक
आ ध अ ग्र पृ 551 स वा श प ख पू पृ 87 जै व्र वि स पृ 122

★★★

108- गुरुद्वादशी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल द्वादशी
व्रत की अवधि - 12 द्वादशी
व्रत की विधि - प्रत्येक द्वादशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री वासुपूज्य पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री वासुपूज्यजिनेन्दाय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - मदगुरु अनुकम्पा प्रदायक

***

109- गुरुवार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल पक्ष का प्रथम गुरुवार
व्रत की अवधि - 5 गुरुवार
व्रत की विधि - व्रत क दिन उपवास करे।
व्रत की पूजा - पञ्च परमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सद्बोध प्रदायक

***

110- गोत्रकर्म निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल सप्तमी
व्रत की अवधि - 7 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक आषाढ शुक्ल सप्तमी का उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सुपार्श्वनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - निद पर्याय अभावकर्ता

★★★

111- चक्रोदय व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन शुक्ल त्रयोदशी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - त्रयोदशी से तीन दिन उपवास करे।
व्रत की पूजा - रत्नत्रय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं सम्यक्रत्नत्रयेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान
व्रत का फल - अशुभ काल दोष निवारक

★★★

112- चतु· मगल व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल चतुर्थी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्थी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं मगलमयजिनाय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - मगलोत्तम पदप्रदायक

★★★

113- चतुरशीति गणधरव्रत

व्रतारम्भ तिथि - मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक कृष्ण दशमी उपवास।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्हं चतुर्विंशतिगणधरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - गणधरवलय विधान
व्रत का फल - अज्ञान निवारक एव पूर्ण श्रुतज्ञान दायक

★★★

114- चतुरिन्द्रिय जाति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल चतुर्थी
व्रत की अवधि - 4 माह प्रत्येक माह की शुक्ल कृष्ण चतुर्थी
व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्थी को उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री अभिनन्दननाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्ली अर्हं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - चतुरिन्द्रिय पर्याय निवारक

★★★

115- चतुर्दशी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 14 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक माह की दोनों चतुर्दशियों के लौंड (अधिक मास) के महीनों सहित कुल 344 उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री अनन्तनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अनन्तनाथाय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - असयम निवारक/सयम वर्धक
आ ध अ ग्र पृ 552 जै व्र वि स पृ 124

★★★

116- चतुर्विंशति दातृ भावना व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल तृतीया
व्रत की अवधि - 24 तिथि
व्रत की विधि - प्रत्येक तृतीया के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - तीन चौबीसी विधान
व्रत का फल - कुल अभिवर्धक

★★★

117- चतुर्विंशति श्रोतृभावना व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 24 तिथि
व्रत की विधि - प्रत्येक पञ्चमी के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री अजितनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - तीन चौबीसी विधान
व्रत का फल - स्वर्ग मोक्षदायक

★★★

118- चतुष्पर्व व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 16 दिन
व्रत की विधि - अष्टमी से लेकर प्रथम 4 दिन एकाशन फिर चार दिन काजिकाहार चार दिन फलाहार चार दिन उपवास पूर्वक व्रत करे।
व्रत की पूजा - श्री अभिनन्दननाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ही श्री क्ली अर्ह श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान।
व्रत का फल - स्वर्ग सम्पत्ति कारक

★★★

119- चन्द्रकल्याणक व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - पच्चीस दिन
व्रत की विधि - पहले पाँच दिन के उपवास
दूसरे पॉच दिन काजिक भोजन
तीसरे पॉच दिन एकलठाना
चौथे पॉच दिन रुक्षाहार
पाँचवें पाँच दिन मुनिवृत्ति से भोजन करे।
व्रत की पूजा - श्री चन्द्रप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - कर्म निर्जराकारक
आ ध अ ग्र पृ 552 स वा श परि पू पृ 88 जै व्र वि स पृ 69

★ ★ ★

120- चन्दनषष्ठी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद कृष्ण षष्ठी
व्रत की अवधि - 6 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री चन्द्रप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्ली अर्हं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुद्धि से हुए अविनय की निवृत्ति हेतु।
स वा श परि ख पू पृ 88 आ ध अ ग्र पृ 552 जै व्र ति नि पृ 220 जै व्र वि स पृ 86 129 क्रि को पृ 255 व्र क को पृ 270

★ ★ ★

121- चारित्राचार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल त्रयोदशी
व्रत की अवधि - 13 त्रयोदशी
व्रत की विधि - प्रत्येक त्रयोदशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री विमलनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री विमलनाथतीर्थंकराय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - कषायाभाव/चारित्रिक स्थिरताकारक

★ ★ ★

122- चारित्रमाला व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन शुक्ल पूर्णिमा
व्रत की अवधि - 27 तिथि (27 माह)
व्रत की विधि - प्रत्येक पूर्णिमा को उपवास करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यो नमः।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - आत्मोत्थान कारक

★★★

123- चारित्रशुद्धि व्रत (बारह सौ चौतीस व्रत)

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - उत्कृष्ट 6 वर्ष 10 माह एवं 8 दिन
व्रत की विधि - मध्यम 10 वर्ष 3 माह 15 दिन मध्यम 1234 उपवास (एक महीना में 10 उपवास) यथा - 2 द्वितीया 2 पञ्चमी 2 अष्टमी 2 एकादशी एवं 2 चतुर्दशी जघन्य शक्त्यनुसार 1234 उपवास 25-30 वर्ष में।

उपवास		उपवासों की संख्या
अहिंसा महाव्रत	-	126
सत्य महाव्रत	-	72
अचौर्य महाव्रत	-	72
ब्रह्मचर्य महाव्रत	-	180
अपरिग्रह महाव्रत	-	216

रात्रि भोजनत्याग अणुव्रत- 10
ईर्यासमिति - 9
भाषा समिति - 90
एषणा समिति - 414
आदान निक्षेपणसमिति- 9
प्रतिष्ठापना समिति - 9
काय गुप्ति - 9
बचन गुप्ति - 9
मनो गुप्ति - 9

व्रत की पूजा - चारित्र शुद्धि व्रत पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नम ।

(विशेष मत्र परिशिष्ट से)

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - तप बलवर्धक

आ ध अ ग्र पृ - 552 जै व्र ति नि पृ 235 जै व्र वि स पृ - 59 जै व्र वि पृ - 60 ह पु पृ 272 व्र क को पृ - 260

★★★

124- चारित्रशुद्धि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 6 वर्ष

व्रत की विधि - एक उपवास एक पारणा के क्रम से 1042 उपवास 1042 पारणा कुल 2084 दिन।

व्रत की पूजा - रत्नत्रय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्ली अर्ह चारित्रशुद्धि-सम्पन्न जिनाय नम ।
(विशेष मत्र परिशिष्ट से)
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - विशिष्ट पद दायक

★★★

125- चारुसुख व्रत

व्रतारम्भ तिथि - माघ शुक्ल षष्ठी
व्रत की अवधि - 4 माह मे शुक्ल पक्ष की षष्ठी
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास।
व्रत की पूजा - श्री पद्मप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्ली अर्ह श्री पद्मप्रभजिनन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - नि श्रेयश सुखकारक

★★★

126- चूड़ामणि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल एकादशी
व्रत की अवधि - 11 एकादशी
व्रत की विधि - शुक्ल एकादशी के दिन उपवास।
व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - सातिशय पुण्य दायक

★★★

127- चौंतीस अतिशय व्रत (वृहत)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की दशमी
व्रत की अवधि - 2 वर्ष 8 माह 15 दिन
व्रत की विधि - 65 उपवास

1 जन्म के 10 अतिशयो के 10 दशमी के 10 उपवास

2 केवलज्ञान के 10 अतिशयों के 10 दशमी के 10 उपवास

3 देवकृत चौदह अतिशयों के 14 चतुर्दशी के 14 उपवास

4 चार अनन्त चतुष्टय के 4 चतुर्थी के 4 उपवास

5 आठ प्रातिहार्यो के 16 अष्टमी के 16 उपवास

6 पॉच ज्ञान के 5 पञ्चमी के 5 उपवास

7 छह षष्ठी के 6 उपवास

व्रत की पुजा - देवपूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्हं णमो अरिहताण।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - मोह निवारक

क्रि को पृ 272

★★★

128- चौंतीस अतिशय व्रत (मध्यम व्रत)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की दशमी
व्रत की अवधि - 23 माह
व्रत की विधि - 46 उपवास करें।

1 जन्म के 10 अतिशयों के 10 दशमी के 10 उपवास
2 केवलज्ञान के 10 अतिशयों के 10 दशमी के 10 उपवास
3 देवकृत 14 अतिशयो के 14 चतुर्दशी के 14 उपवास
4 अनन्त चतुष्टय के 4 चतुर्थी के 4 उपवास
5 आठ प्रातिहार्य के आठ अष्टमी के 8 उपवास

व्रत की पूजा - देवपूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्ह णमो अरिहताण।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - मोह निवारक

आ ध अ ग्र पृ 552 व्र क को पृ 256 जे व्र वि स पृ 109 कि क्रा पृ 272

★★★

129- चौतीसी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की शुक्ल दशमी
व्रत की अवधि - 65 दिन
व्रत की विधि - 10 दशमी 24 चतुर्दशी 16 अष्टमी 5 पञ्चमी 6 षष्ठी 4 चतुर्थी कुल 65 उपवास।
व्रत की पूजा - देव पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्लीं अर्हं समवसरणस्थितजिनाय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - कषायाभाव निग्रह कारक

★★★

130- चौबीस तीर्थंकर व्रत (एक कल्याणक)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी तीर्थंकर की कल्याणक तिथि
व्रत की अवधि - 24 दिन
व्रत की विधि - 24 तीर्थंकरों के 24 उपवास करे।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्ह श्रीं वृषभादिचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सातिशय पुण्यकारक

व्र क को पृ 257 जै व्र वि स पृ 48

★★★

131- चौसठ ऋद्धि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की 8 या 14
व्रत की अवधि - 64 व्रत
व्रत की विधि - 2 5 8 1 एव 14 को शक्त्यनुसार उपवास या एकाशन पूर्वक।
व्रत की पूजा - चौसठ ऋद्धि पूजा
व्रत का जापमन्त्र - 64 ऋद्धि मन्त्रो में क्रमश व्रत के दिन एक मन्त्र की जाप करे। (देखे परिशिष्ट)
उद्यापन का विधान - चौंसठ ऋद्धि विधान
व्रत का फल - ऋद्धि कारक

★★★

132- छेदोपस्थापना चारित्र व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 14 चतुर्दशी
व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्दशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - चोबीस तीर्थकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल चारित्रारूढ सयमवर्धक

★ ★ ★

133- जिनगुण सम्पत्ति व्रत(उत्तम)

व्रतारम्भ तिथि आषाढ शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - व्रत के 63 दिन
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास
उत्तम-सोलह भावना के 16प्रतिपदा के 16 उपवास पञ्चकल्याणको के 5 पञ्चमी के 5 उपवास अष्टप्रतिहार्य के 8 अष्टमी के 8 उपवास दस जन्म के अतिशय के 10 दशमी के 10 उपवास दस केवलज्ञान के अतिशयो के 10 दशमियों के 10 उपवास चोदह देवकृत अतिशयो के 14 चतुर्दशियो के 14 उपवास
व्रत की पूजा - जिनगुण सम्पत्ति व्रत पूजा
व्रत का जापमन्त्र - जिनगुण सम्पत्ति मन्त्रों में से जिस मन्त्र का दिन हो उस मन्त्र का जाप (परिशिष्ट से) करें।

उद्यापन का विधान - जिनगुण सम्पत्ति विधान
व्रत का फल - सर्वसुख प्रदायक

आ ध अ ग्र पृ 552 जै व्र ति नि पृ 219 जै व्र वि स पृ 64 क्रि को पृ 258 स वा श परि पू पृ 89 व्र क को पृ 286 ह पु पृ 274 सु त पृ 158

★★★

134- जिनगुण सम्पत्ति व्रत(मध्यम)

मध्यम विधि - क्रमश एक बेला और एक-एक कर पॉच उपवास पुन एक बेला और एक-एक पॉच उपवास पुन 1 बेला और एक-एक कर पॉच उपवास पुन एक बेला और एक-एक कर पाँच उपवास तथा 5 वी बार पुन एक बेला और एक-एक कर 5 उपवास इस प्रकार 5 बेला 25 उपवास अर्थात् 35 उपवास और 30 पारणाएँ।

जघन्य विधि - उपर्युक्त 63 गुणो के उपलक्ष्य मे 63 एकाशन करे।

व्रत की पूजा - जिनगुण सम्पत्ति व्रत पूजा

व्रत का जापमन्त्र - जिनगुण सम्पत्ति मन्त्रों में से जिस मन्त्र का दिन हो उस मन्त्र का जाप (परिशिष्ट से) करें।

उद्यापन का विधान - जिनगुण सम्पत्ति विधान

व्रत का फल - सर्वसुख प्रदायक

★★★

135- जिनपूजा पुरन्दर व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की शुक्ल प्रतिपदा

व्रत की अवधि - आठ दिन (12 वर्ष)

व्रत की विधि - शुक्ल प्रतिपदा से अष्टमी तक उपवास या एकासन शक्त्यनुसार करें।

व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिन धर्म जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्योनम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - स्वर्गादि वैभव प्रदायक

स वा श को परि ख पू पृ 89 आ ध अ ग्र पृ 553
जै व्र वि स पृ 62 क्रि को पृ 278

★ ★ ★

136- जिनमुखावलोकन व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा से आसोज कृष्ण प्रतिपदा तक

व्रत की अवधि - एक माह

व्रत की विधि शक्त्यनुसार

1 **उपवास**-तीस दिन उपवास करें।

2 **काजिक**-जल के साथ सिर्फ चावल

3 **चन्द्रायण**-पहले दिन एक ग्रास दूसरे दिन 2ग्रास तीसरे दिन 3 ग्रास इस प्रकार एक-एक ग्रास बढाकर 15 ग्रास तक बढाये फिर पन्द्रह से एक-एक ग्रास कम करते हुए एक तक कम करें।आदि अन्त में एक-एक उपवास करें।

4 **एकाशन**-तीस दिन एकाशन करें।
5 **परिमितवस्तु**- भोज्य सामग्रियों का प्रमाण कर उससे अधिक न लें।
पाँचों में से एक शक्त्यनुसार विधि पूर्वक करें।

व्रत की पूजा - नित्यमह पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र/ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा नम सर्वसिद्धि कुरु कुरु।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
विशेष - व्रत के दिनों में प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में प्रथम ही श्री जिनेन्द्र भगवान के दर्शन करें।
व्रत का फल - दुर्ध्यान निवारक

जै व्र वि स पृ 90 आ ध अ ग्र पृ 553 स वा श प ख पू पृ 89 व्र क को पृ 281 क्रि को पृ 262

★★★

137- जिनरात्रि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी
व्रत की अवधि - उत्कृष्ट 14 वर्ष जघन्य 9 वर्ष
व्रत की विधि - चतुर्दशी तक एक दिन उपवास दूसरे दिन पारणा प्रतिपहर जिनदर्शन रात्रि जागरण, पाठ जाप, आदि पूर्वक।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अनिष्ट निवारक

आ ध अ ग्र पृ 553 स वा श प्र ख पू पृ 89 जै व्र ति नि पृ 193 जै.व्र वि स पृ 91 व्र क को पृ 285

★★★

138- जीवदया अष्टमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 8 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक आश्विन शुक्ल अष्टमी को उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री शीतलनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सद्‌भावना वृद्धिकारक

★★★

139- जुगुप्सा कर्म निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र कृष्ण दशमी
व्रत की अवधि - 10 दशमी
व्रत की विधि - प्रत्येक दशमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - आतरिक ग्लानिनाशक

★★★

140- ज्येष्ठजिनवर व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा
व्रत की अवधि - उत्तम चौबीस वर्ष मध्यम बारह वर्ष जघन्य एक वर्ष

व्रत की विधि - ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा का उपवास कर चौदह दिन के एकाशन तत्पश्चात् ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा का उपवास कर चौदह दिन के एकाशन इस प्रकार एक मास में दो उपवास, अट्ठाईस एकाशन करें।

व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभजिनाय नम।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - शुभ नामकर्मदायक

आ ध अ ग्र पृ 553 जै व्र ति नि पृ 218 जै व्र वि स पृ 43 क्रि को पृ 253 व्र क को पृ 280

★★★

141- णमोकार पैंतीसी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल सप्तमी

व्रत की अवधि - एक वर्ष छह माह (डेढ वर्ष) की अवधि में 45 दिन

व्रत की विधि - आषाढ शुक्ल सप्तमी श्रावण मास की दो सप्तमी, भाद्र मास की दो सप्तमी आश्विन मास की दो सप्तमी इस प्रकार सात सप्तमी के सात उपवास। कार्तिक कृष्ण पञ्चमी से पौष कृष्ण पञ्चमी तक पाँच पञ्चमी के पाँच उपवास पौष कृष्ण चतुर्दशी से चैत्रकृष्ण चतुर्दशी तक सात चतुर्दशी के सात उपवास। चैत्र शुक्ल चतुर्दशी से आषाढ शुक्ल चतुर्दशी तक सात चतुर्दशी

के सात उपवास। श्रावण कृष्ण नवमीं से अगहन कृष्ण नवमी तक नौ नवमी के नौ उपवास।

व्रत की पूजा - नवकार मन्त्र पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - णमोकार पैनीसी विधान
व्रत का फल - सकट निवारक

पृ आ ध अ ग्र 553 जे व्र वि पृ 5 जै व्र वि स पृ 4 व्र ति नि पृ 217

★★★

142- तत्त्वार्थसूत्र व्रत (मोक्षशास्त्र व्रत)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी अष्टमी
व्रत की अवधि - 10 दिन उत्कृष्ट 357 दिन
व्रत की विधि - उपवास पूर्वक
व्रत की पूजा - तत्त्वाथ सूत्र पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीजिनमुखोद्भव-द्वादशाग-सारभूत-श्रीतत्त्वार्थसूत्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - तत्त्व सिद्धातवर्धक एव मोक्षमार्ग प्रदायक

जै व्र वि पृ 25

★★★

143- तपशुद्धि व्रत

व्रतारम्भ तिशि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 156 दिन
व्रत की विधि - बाह्य तप के अन्तर्गत अनशन तप के 2, अवमौदर्य का 1 वृतिपरिसख्यान का 1

रस परित्याग के 5 विविक्त शय्यासन का 1 काय क्लेश का 1 इस प्रकार 11 उपवास हुए। अन्तरंग तप के अन्तर्गत्त प्रायश्चित्त के 19 विनय के 30 वैयावृत्ति के 10, स्वाध्याय के 5, व्युत्सर्ग के 2, ध्यान का 1, इस प्रकार अन्तरग तप के 67 उपवास हुए। बाह्य एव अन्तरग तप के कुल मिलाकर 78 उपवास एक पारणा एक उपवास पूर्वक लगातार करें।

व्रत की पूजा - सिद्धपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ हीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अनन्तानन्त परमसिद्धेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - इच्छानिरोध कारक

ह पु पृ 271 आ ध अ प्र पृ 553

★★★

144- तपाचार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल प्रतिपदा

व्रत की अवधि - 144 दिन

व्रत की विधि - प्रत्येक द्वादशी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री वासुपूज्य पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - दुर्ध्याननिवारक

★★★

145- तपोञ्जलि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण कृष्ण प्रतिपदा

व्रत की अवधि - एक वर्ष

व्रत की विधि - श्रावण मास की प्रतिपदा से एक वर्ष पर्यन्त सुर्यास्त के दो घडी पूर्व से लेकर सूर्योदय के दो घडी पश्चात् तक चारों प्रकार के आहार अर्थात् जल का भी त्याग रखे। एक वर्ष पर्यन्त पूर्ण ब्रह्मचर्य से रहें तथा प्रत्येक माह के प्रत्येक(कृष्ण-शुक्ल) पक्ष में किसी भी तिथि का उपवास करें। उपवास दोनों पक्षों की अलग-अलग तिथि में करें एक पक्ष में एक ही उपवास करें।

व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - आत्म प्रभावनाकारक

व्र ति नि पृ 162 आ ध अ ग्र पृ 554 व्र क को पृ 301

★★★

146- तिर्यचगति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल तृतीया

व्रत की अवधि - 7 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक तृतीया के दिन एकाशन

व्रत की पूजा - श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - कुटिल परिणाम निवारक

★★★

147- तिरेपन क्रियाव्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की अष्टमी
व्रत की अवधि - 2 वर्ष, 2 माह एव 15 दिन
व्रत की विधि - 53 उपवास पूर्वक करें यथा-
8 मूलगुणों के 8 अष्टमी के 8 उपवास
5 अणुव्रत के 5 पञ्चमी के 5 उपवास
3 गुणव्रत के 3 तृतीया के 3 उपवास
4 शिक्षाव्रत के 4 चतुर्थी के 4 उपवास
12 तप के 12 द्वादशी के 12 उपवास
समता भाव का 1 पडवा का 1 उपवास
11 प्रतिमाओं के 11 एकादशी के 11 उपवास 4 दान के 4 चतुर्थी के 4 उपवास
जलगालन क्रिया का 1 पडवा का 1 उपवास
रात्रिभोजन त्याग का 1 पडवा का 1 उपवास
रत्नत्रय के 3 तृतीया के 3 उपवास करें।
व्रत की पूजा - सिद्धपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अनन्तानन्त-परम सिद्धेभ्यो नम
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - अपयश निवारक

आ ध अ ग्र पृ 554 व्र वि स पृ 46 क्रि को पृ 257 जैन व्र ति नि पृ 261

★★★

148- तीन चौबीसी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद कृष्ण तृतीया
व्रत की अवधि - तीन वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करे।
व्रत की पूजा - त्रिकाल चौबीसी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री त्रिकालवर्ती-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - तीन चौबीसी विधान
व्रत का फल - त्रैकालिक आत्मप्रभावना कारक

क्रि को पृ 261 आ ध अ ग्र पृ 554 जै व्र वि स पृ 89 व्र क को पृ 258

★★★

149- तीर्थंकर व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भगवान आदिनाथ के किसी एक कल्याणक की तिथि
व्रत की अवधि - 24 दिन
व्रत की विधि - शेष तीर्थंकरों के भी उसी कल्याणक की तिथि का उपवास
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्ली अर्हं श्री वृषभादिचतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - सोलह कारण भावनावर्धक

आ ध अ ग्र पृ 554

★★★

150- तीर्थंकर बेला व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की सप्तमी

व्रत की अवधि - 6 माह

व्रत की विधि - 24 बेला एव 24 पारणाएँ करें।

1 ऋषभनाथ का बेला- सप्तमी, अष्टमी का उपवास नवमीं को तीन अञ्जुली शर्बत का पारणा।

2 अजितनाथ का बेला- त्रयोदशी एव चतुर्दशी का बेला और पूर्णिमा को 3 अञ्जुली दूध का पारणा

3 सम्भवनाथ का बेला- सप्तमी अष्टमी का उपवास एव नवमीं को तीन अञ्जुली दूध का पारणा इसी प्रकार प्रत्येक सप्तमी-अष्टमी एव त्रयोदशी-चर्तुदशी के उपवास नवमी व पूर्णमासी को तीन अजुलि दूध का पारणा करके 24 तीर्थंकरों के बेला करें।

व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्हं श्री वृषभादि-चतुर्विंशति- तीर्थंकरेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - उत्कृष्ट सयम साधना प्रदायक

आ ध अ ग्र पृ 554 जै व्र वि स 110

★★★

151- तुलासक्रमण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन मास की तुला सक्रमण तिथि
व्रत की अवधि - 12 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सुपार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - अशुभ ग्रह दशानाशक

★★★

152- तेजकाय निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह 8 दिन
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी का उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री चन्द्रप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्ली अर्हं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - मानसिक सक्लेश निवारक

★★★

153- तेला व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद माघ चैत्र मास मे सोलहकारण पर्व की शुक्ल पक्ष की कोई भी तिथियाँ
व्रत की अवधि - पाँच दिन वर्ष में तीन बार तीन वर्ष तक
व्रत की विधि - प्रथम दिन दोपहर को एकाशन करके

मन्दिर जी जावें तीन दिन उपवास पर्यन्त मदिर में रहें पाँचवे दिन पात्र दान देकर दोपहर को एकाशन करें।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व- साधुभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - इद्रिय विषय निरोधक

आ ध अ ग्र पृ 554 व्र वि स पृ 123

★★★

154- तैजस शरीर निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल पञ्चमी

व्रत की अवधि - 6 माह 8 दिन (13 तिथि पूर्वक)

व्रत की विधि - प्रत्येक पञ्चमी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व- साधुभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - मानसिक विकृति निवारक

★★★

155- दर्शनाचार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल द्वितीया

व्रत की अवधि - 5 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक द्वि तीया को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री अजितनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - गृहीत अगृहीत मिथ्याबुद्धि निवारक

★★★

156- दर्शनावरणी कर्मनिवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह (कार्तिक अष्टाह्निक तक)
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी एव चतुर्दशी उपवास।
व्रत की पूजा - श्री अजितनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्लीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - अशुभ निद्रा निवारक

★★★

157- दर्शनविशुद्धि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 48 दिन (24 उपवास-24 पारणा पूर्वक)
व्रत की विधि - उपशम क्षयोपशम और क्षायिक इन तीनों सम्यक्त्वों के नि शकादि आठ अगो की अपेक्षा 24 अग होते है अत एक उपवास और एक पारणा के क्रम से 24 उपवास लगातार करे।
व्रत की पूजा - रत्नत्रय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान
व्रत का फल - अगाढ श्रद्धानवर्धक

आ ध अ ग्र पृ 555 ह पु पृ 271

★★★

158- दशपर्व व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 100 दिन
व्रत की विधि - पहले 10 दिन एकभुक्ति दूसरे 10 दिन एक वस्तु से एकाशन तीसरे 10 दिन रस परित्याग चौथे 10 दिन व्रत परिसख्यान पाँचवे 10 दिन फलाहार छठवें 10 दिन काजी आहार सातवें 10 दिन आधापेट भोजन आठवें 10 दिन 10 ग्रास भोजन नौवें एव दसवें दशक मे एक उपवास एक पारणा के क्रम से 10 उपवास एव 10 पारणा करे।
उद्यापन का विधान - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त तीर्थंकरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - आत्म विशुद्धि प्राप्तिकारक

★★★

159- दशप्राण निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक महीने की द्वितीया को उपवास
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - अभय प्रदायक एव सिद्धत्व पद प्रदायक

★★★

160- दशमी निमानी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल दशमी

व्रत की अवधि - दस वर्ष

व्रत की विधि - उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री शीतलनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - शुभ परिणाम वर्धक

जै व्र वि स पृ 129

* * *

161- दशलक्षण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्र माघ चैत्र तीनो माह की शुक्ल पञ्चमी

व्रत की अवधि - दस वर्ष

व्रत की विधि - उत्तम मध्यम जघन्य की अपेक्षा तीन विधियॉ हैं-

1 उत्तम विधि- दस दिन के दस उपवास

2 मध्यम विधि- पञ्चमी अष्टमी एकादशी चतुर्दशी इन चार तिथियो में उपवास और शेष छह दिनों में एकाशन

3 जघन्य विधि- दस दिन के दस एकाशन

व्रत की पूजा - दशलक्षण पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हन्मुख-कमल-समुद्गताय-उत्तम-क्षमादि -दशलक्षण-धर्मेभ्यो नम एव प्रतिदिन व्रतानुसार जाप करे।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा-धर्मांगाय नम ।
ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव-धर्मांगाय नम ।
ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव-धर्मांगाय नम ।
ॐ ह्रीं उत्तम शौचधर्मांगाय नम ।
ॐ ह्रीं उत्तम सत्य-धर्मांगाय नम ।
ॐ ह्रीं उत्तम सयम-धर्मांगाय नम ।
ॐ ह्रीं उत्तम तप-धर्मांगाय नम ।
ॐ ही उत्तम त्याग-धर्मांगाय नम ।
ॐ ह्रीं उत्तम आकिञ्चन-धर्मांगाय नम ।
ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य-धर्मांगाय नम ।

उद्यापन का विधान - दशलक्षण विधान
व्रत का फल - आत्म स्वभाव प्राप्तिकारक
व्र ति नि पृ 241 आ ध अ ग्र पृ 555 क्रि को पृ 249 जै व्र वि स पृ 39 व्र क को पृ 322

★ ★ ★

162- दक्षिणायन व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल 15
व्रत की अवधि - 6 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक पूर्णिमा को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री चन्द्रप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ चिन्तन निवारक

★ ★ ★

163- दानान्तराय कर्म निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण दशमी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक ज्येष्ठ कृष्ण दशमी को उपवास करें
व्रत की पूजा - विमलनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय नम
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - निर्लोभतावर्धक एव अनन्तदान गुणदायक

★★★

164- दारिद्र निर्वृत्ति व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आसोज (क्वार) शुक्ल पक्ष प्रथम शुक्रवार
व्रत की अवधि - पॉच शुक्रवार लगातार
व्रत की विधि - शुक्रवार को अभिषेक पूर्वक पूजा करके सहस्रनाम का पाठ करें सामायिक स्वाध्याय करें निर्जल उपवास करें। शनिवार को सत्पात्रो को आहार दान देकर पारणा करे।
व्रत की पूजा - सहस्रनाम पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्लीं अर्हं अष्टाधिक-सहस्रनामेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - सहस्रनाम विधान
व्रत का फल - दारिद्र एव अशुभ दशा निवारक

आ ध अ ग्र पृ 555 व्र क को पृ 325

★★★

165- दिव्यलक्षण पक्ति व्रत

वतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 408 दिन
व्रत की विधि - एक उपवास एक पारणा के अनुसार लगातार 204 उपवास 204 पारणा (32 व्यजन 64 कला 108 लक्षण)
व्रत की पूजा - त्रिकाल चौबीसी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - तीन चौबीसी विधान
व्रत का फल - सद्‌गुण प्राप्तिकारक
आ ध अ ग्र पृ 556 ह पु पृ 274

★★★

166- दीपमालिका व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक कृष्ण अमावस्या
व्रत की अवधि 64 उपवास या 24 उपवास
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री महावीर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्लीं अर्हं श्रीमहावीरस्वामिने नम
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
विशेष - केवलज्ञान 64वीं ऋद्धि है एव निर्वाण कल्याणक 24 तीर्थंकरों के हुए हैं अत कम से कम 24 उपवास करना चाहिए।
व्रत का फल - दिव्य आलोक प्रदायक
आ ध अ ग्र पृ 555 जै व्र वि स पृ 108

★★★

167- दीपावली व्रत/लक्षावली व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 14 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री महावीर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री महावीरजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - सत्ज्ञान एव सत् व्यापारवर्धक

★★★

168- दुखहरण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 240 दिन
व्रत की विधि - 120 उपवास, 120 पारणाएँ अर्थात् एक उपवास एक पारणा क्रम से करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रु ह्रौं ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान- पञ्चपरमेष्ठी विधान

उत्तम विधि- इस विधि में चारों गतियों के आधार पर उपवास एव बेला किये जाते हैं। सात नरकों के 7 बेला तिर्यञ्चों के पर्याप्त अपर्याप्त के दो बेला मनुष्यों के पर्याप्त अपर्याप्त के 2 बेला, सौधर्मेशान का 1 बेला, सानत्कुमार से

अच्युत पर्यन्त के 11 बेला नव ग्रैवेयकों के 9 बेला, नव अनुदिश का एक बेला और पाँच अनुत्तरों का एक बेला इस प्रकार (7+2+2+1+11+9+1+1) 34 बेला और बीच के 34 स्थानों में 34 पारणा अर्थात् यह व्रत 102 दिनों में समाप्त होता है।

जघन्य- एक पारणा, एक उपवास के क्रम से 120 उपवास पूर्वक करें।

व्रत का फल - अशुभ कर्मोदय निवारक

आ ध अ ग्र पृ 555 ह पु पृ 273 जै व्र वि स पृ 62

★★★

169- दुर्गति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - माघ कृष्ण प्रतिपदा

व्रत की अवधि - 25 तिथि

व्रत की विधि - प्रत्येक महीने की प्रतिपदा का उपवास करें

व्रत की पूजा - श्री शान्तिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - शान्तिनाथ विधान

व्रत का फल - ईर्ष्या परिणामों का अभावकर्ता

★★★

170- दुरित निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कार्तिक व फाल्गुन इन तीनो माह की शुक्ल अष्टमी

व्रत की अवधि - 4 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक महीने की चार अष्टमी एव चतुर्दशी इस प्रकार 16 उपवास करे।

व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थकर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्ह श्री वृषभादि-चतुर्विंशति-तीर्थकरेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान।

व्रत का फल - भूत प्रेन बाधा निवारक

★★★

171- दूधरसी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल द्वादशी

व्रत की अवधि - 12 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत के दिन दूध का आहार ले।

व्रत की पूजा - श्री वासुपूज्य पृजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - सयम साधनावर्धक

आ ध अ ग्र पृ 555 जै व्र वि स पृ 102

★★★

172- देवगति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 9 अष्टमी तक
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी को उपवास करे।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - उत्कृष्ट सयम साधना कारक

***

173- देशविरत गुणस्थान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल तृतीया
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक आषाढ शुक्ल तृतीया को उपवास रखें।
व्रत की पूजा - श्री सभवनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - श्रावकोचित व्रत पालनकर्ता

***

174- द्वादशी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल द्वादशी
व्रत की अवधि - 12 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री वासुपूज्य पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - मुनि निदाकृत दोष निवारक

आ ध अ ग्र पृ 555 जै व्र वि स पृ 122

★★★

175- द्वारावलोकन पात्रदान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - शक्त्यनुसार नियम (विशेष अवधि) यम रूप (जीवन पर्यन्त)

व्रत की विधि - द्वारावलोकन व्रत में दोपहर का नियम कर द्वार पर खडे होकर उत्तम पात्र की प्रतीक्षा करना और मुनिराज को आहार कराकर भोजन करना। यदि मुनिराज का योग न मिले तो ऐलक क्षुल्लक आदि व्रती मिले उन्हे आहार कराकर भोजन करे यदि किसी भी पात्र का योग न मिले तो दो पहरो (6घण्टे) के बाद भोजन कर ले।

व्रत की पूजा - अभिषेक नित्यमह पूजा

व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - श्रावकोचित दान परम्परा निर्वाहक

आ ध अ ग्र पृ 555 व्र ति नि पृ 204 व्र क को पृ 326

★★★

176- द्विकावली व्रत (वृहत्)

वतारम्भ तिथि - किसी भी माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा

व्रत की अवधि - एक वर्ष मे 252 उपवास पारणा 168 दिन के उपवास 84 पारणा लगातार

व्रत की विधि - चौरासी बेला पूर्वक-

शुक्ल पक्ष की तिथियाँ	**कृष्णपक्ष की तिथियाँ**
प्रतिपदा द्वितीया का बेला	चतुर्थी एव पञ्चमी का बेला
पञ्चमी एव षष्ठी का बेला	अष्टमी नवमी का बेला
अष्टमी एव नवमीं का बेला	चतुर्दशी एव अमावस्या का बेला
चतुर्दशी एव पूर्णमासी का बेला।	इस प्रकार एक माह में सात बेला पूर्वक बारह माह के चौरासी बेला करें।

व्रत की पूजा - पार्श्वनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय-सर्वशान्तिकराय सर्व-क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

जघन्य- 1 बेला एक पारणा के क्रम से 48 बेले करना

व्रत का फल - उत्कृष्ट तपाचरणवर्धक

आ ध अ ग्र पृ 555 ह पु पृ 260 क्रि को पृ 265

व्र वि स पृ 77-78 जै व्र ति नि पृ 167

★★★

177- द्विकावली व्रत (लघु)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - एक सौ बीस दिन
व्रत की विधि - चौबीस बेला अडतालीस एकाशन चौबीसपारणाएँ लगातार। बेला एक पारणा एक एकाशन दो बेला एक पारणा एक एकाशन दो इसी क्रम से एक सौ बीस दिन तक करे।
व्रत की पूजा - श्री पार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौ ह्र श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय-सर्वशान्ति कराय सर्व-क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय श्री क्ली नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - उत्कृष्ट तपाचरणवर्धक

क्रि को पृ 266 जै व्र वि स पृ 77

★★★

178- द्विपञ्च व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण मास की उत्तरा नक्षत्र की तिथिया
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - प्रोषध पूर्वक उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री शीतलनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - धर्म प्रभावनाकार

★★★

179- द्वीन्द्रिय जाति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल द्वितीया
व्रत की अवधि - 2 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक शुक्ल द्वितीया को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री अजितनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - द्विन्द्रिय जातिनिवारक

★★★

180- धनद कलश व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - शक्त्यनुसार 5 वर्ष/ 5 माह/ 1 माह
व्रत की विधि - भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा के दिन उपवास पॉच वर्ष पर्यन्त करें। भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा से 5 माह पर्यन्त प्रत्येक प्रतिपदा को उपवास करे। भाद्रपद शुक्ल एकम से भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा तक एकाशन।
व्रत की पूजना - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथतीर्थंकराय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - मनोवाछित कार्य सिद्धि कारक

आ ध अ प्र पृ 556 जै व्र वि स पृ 102
व्र क को पृ 327

★★★

181- धनु सक्रमण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - मगसिर (अगहन) मास की धनुसक्रमण तिथि

व्रत की अवधि - 12 वर्ष

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री पुष्पदत पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पुष्पदन्तजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - अशुभ ग्रह शान्तिकारक

★★★

182- धर्मचक्रविधि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - इस व्रत की तीन अवधि है-

उत्तम- 2004 दिन (5 वर्ष 6 माह 24 दिन)

मध्यम- 1010 दिन

जघन्य- 22 दिन

व्रत की विधि - इस व्रत की तीन विधि है-

उत्तम विधि- धर्मचक्र के एक हजार आरों की अपेक्षा एक उपवास एक पारणा क्रम से 1000 उपवास करें और आरम्भ एव अन्त में एक-एक बेला पृथक करें इस प्रकार 2004 दिन तक करें।

मध्यम विधि- 1010 दिन तक प्रतिदिन एकाशन करें।

जघन्य विधि- उपवास 1 पारणा 1
उपवास 2, पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1
उपवास 5 पारणा 1 उपवास 1 पारणा 1
इस प्रकार कुल 16 उपवास एव 6 पारणा करें।

ित की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
ित का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्लीं अर्ह श्री अरिहत धर्मचक्राय नम ।
ाद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
ित का फल - तीर्थंकर वैभवकारक

जै व्र ति नि पृ 260 आ ध अ ग्र पृ 556 क्रि को पृ 269 ह पु पृ 274 जै व्र वि स पृ 63 व्र क को पृ 330

★ ★ ★

183- धर्मध्यान प्राप्ति व्रत

ितारम्भ तिथि - वैशाख कृष्ण अमावस्या
ित की अवधि - 4 वर्ष
ित की विधि - प्रत्येक वैशाख कृष्ण अमावस्या को प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
ित की पूजा - श्री रत्नत्रय पूजा
ित का जापमन्त्र - ॐ हीं अर्हं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नम ।
ाद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान
ित का फल - आर्तरौद्र ध्यानाभावकारक

★ ★ ★

184- धर्मप्रभावनाग व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - सोलहकारण पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हं धर्मप्रभावनायै नम ।
उद्यापन का विधान - सोलहकारण विधान
व्रत का फल - धर्म प्रभावना शक्तिवर्धक

★★★

185- धर्मोदय व्रत

व्रत की अवधि - पौष माह का प्रथम शुक्रवार
व्रत की अवधि - आठ शुक्रवार
व्रत की विधि - प्रत्येक शुक्रवार को उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री पार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्ली अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - उपसर्ग निवारक

★★★

186- धूप दशमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल दशमी
व्रत की अवधि - 10 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री शीतलनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - शारीरिक सौन्दर्यवर्धक

★★★

187- नन्दसप्तमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल सप्तमी
व्रत की अवधि - 7 वर्ष
व्रत की विधि - भाद्रपद शुक्ल सप्तमी के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री शान्तिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौ ह्र सर्वविघ्न निवारक श्रीशान्तिनाथाय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - आत्मशान्ति हेतु

आ ध अ ग्र पृ 556 जै व्र वि स पृ 105
व्र क को पृ 371 जै व्र ति नि पृ 191

★★★

188- नदावति व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - तीन वर्ष
व्रत की विधि - प्रोषध पूर्वक, उपवास पूर्वक।
व्रत की पूजा - श्री सभवनाथ भगवान
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्लीं श्री सभवनाथ तीर्थंकराय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - दुश्चिन्ता निवारक

★★★

189- नद्यावर्त व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन माह मे अश्विनी नक्षत्र की तिथि
व्रत की अवधि - 1 वर्ष
व्रत की विधि - आश्विन माह की अश्विनी नक्षत्र की तिथि में कार्तिक माह के कृतिका नक्षत्र की तिथि में मार्गशीर्ष महीने के मृगसिर नक्षत्र की तिथि में इस प्रकार माह के नाम के अनुरूप उसी नक्षत्र की तिथि में क्रमश बारह माह तक करे।
व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्ह अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिन-धर्मजिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नम
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - चतुर्गति दुखनिवारक

★ ★ ★

190- नन्दीश्वरपक्ति व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आष्टाह्निक पर्व की अष्टमी
व्रत की अवधि - एक सौ आठ दिन
व्रत की विधि - छप्पन उपवास एव बावन पारणा पूर्वक लगातार करें पूर्वदिशि- अजनगिरि का बेला एक पारणा एक दधिमुख- के उपवास चार पारणा चार रतिकर के उपवास आठ पारणा आठ इसी प्रकार पूर्वदिशि के चौदह उपवास पारणा तेरह।

इसी प्रकार दक्षिण, पश्चिम एव उत्तर के कर।

व्रत की पूजा - नन्दीश्वरद्वीप पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे-द्वापञ्चाशत-जिनालयस्थ जिनेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - नन्दीश्वरद्वीप विधान
विशेष - नन्दीश्वरद्वीप की भावना रखें।
व्रत का फल - सातिशय पुण्य सहित सम्यक्त्व
व्र वि स पृ 117 क्रि क पृ 267 आ ध अ ग्र पृ 556 व्र क को पृ 624 ह पु पृ 267

★★★

191- नन्दीश्वरद्वीप व्रत

नदीश्वरपक्ति पर्व की विधि ही नन्दीश्वरद्वीप व्रत की विधि है।
व्रत का फल - सातिशय पुण्य सहित सम्यक्त्व प्रदाता

★★★

192- नपुसक वेद निवारण व्रत

व्रत की अवधि - चैत्र कृष्ण चतुर्थी
व्रत की अवधि - 3 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक चैत्र कृष्ण चतुर्थी को प्रोषधपूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री पार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - कुटिल भावना परिहारक

★★★

193- नरकगति निवारण व्रत

व्रत की अवधि - आषाढ शुक्ल चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्दशी को उपवास करे।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ आयु अपकर्षणकारक

* * *

194- नवग्रह व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ/ कार्तिक/ फाल्गुन मास में से कोइ भी एक शुक्ल षष्ठी
व्रत की अवधि - 9 दिन 9 वर्ष तक
व्रत की विधि - व्रत के दिन एकाशन करें।
व्रत की पूजा नवदेवता पूजा एव चौबीसी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ हा ह्रीं हू ह्रौं ह अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - नवग्रह विधान
व्रत का फल - ग्रहादि अशुभ/अमगल निवारक

* * *

195- नवकार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी माह की सप्तमी
व्रत की अवधि - 70 दिन

व्रत की विधि - लगातार 35 उपवास एव 35 पारणा करें।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमैष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ हा हीं हू हौ ह अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व- साधुभ्यो नम

उद्यापन का विधान - णमोकार पैतीसी विधान

व्रत का फल - परिणाम विशुद्धि एव आत्मिक शान्ति पुष्टिदायक

आ ध अ ग्र पृ 557 जे व्र वि स पृ 47

★★★

196- नवनिधि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की चतुर्दशी

व्रत की अवधि 1 वर्ष 3 माह एव 1 पक्ष

व्रत की विधि - प्रथम सात माह मे 14 चतुर्दशी के चौदह रत्नों के उपवास नौ निधियो के नौ नवमी के नौ उपवास 4 माह एव 1 पक्ष में करें। रत्नत्रय के 3 तृतीया के 3उपवास 1 माह 1 पक्ष में पाँच ज्ञान की पाँच पञ्चमी के उपवास 2 माह एव 1 पक्ष में करे।

व्रत की पूजा - तीस चौबीसी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र

उद्यापन का विधान- पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - सुख समृद्धि प्रदाता

आ ध अ ग्र पृ 557 जै व्र वि स पृ 92

व्र ति नि पृ 261 क्रि को पृ 270

★★★

197- नवनिधि भंडार व्रत

व्रत की अवधि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 8 दिन (9 वर्ष)
व्रत की विधि - पूर्णिमा तक प्रतिदिन 1 किलो चावल के 9हिस्से करके अरहत, सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य जिनचैत्यालय के नाम चढायें (व्रत के दिन एकाशन करें)
व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्ह अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु जिन-धर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अक्षय पुण्यकोष बृद्धि कारक

★ ★ ★

198- नक्षत्रमाला व्रत

व्रतारम्भ तिथि - अश्विन नक्षत्र
व्रत की अवधि - 54 दिन
व्रत की विधि - जिस दिन अश्विनी नक्षत्र हो उस दिन से 54 दिन मे 27 उपवास एव 27 पारणा लगातार करे।
व्रत की पूजा - अकृत्रिम चैत्यालय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - परिणाम विशुद्धिवर्धक

आ ध अ ग्र पृ 557 क्रि को पृ 260
जै व्र वि म पृ 53 व्र क को पृ 370

★ ★ ★

199- नामकर्म निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल षष्ठी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक षष्ठी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री पद्मप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - शारीरिक विकृति/अपगता नाशक

★★★

200- नि.कांक्षिताग व्रत

व्रत की अवधि - कार्तिक शुक्ल द्वितीया
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्यक द्वितीया को उपवास करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं नि काक्षिताग सम्यग्दर्शनागाय नम ।
उद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान
व्रत का फल - सासारिक आकाक्षा निरोधक

★★★

201- नित्यानंद व्रत

व्रत की अवधि - तीनों अष्टान्हिका की अष्टमी
व्रत की अवधि - उत्तम 1 वर्ष मध्यम 8 माह जघन्य 4 माह
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास, काजी आहार या एकासन।

व्रत की पूजा - श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - दुरति (ग्लानि) निवारक

★★★

202- नित्योत्सव व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी नाह में अमृत सिद्धि योग
व्रत की अवधि - 5 तिथि पूर्वक करें।
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री शातिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्लीं अर्हं श्री शातिनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - प्रशस्त मन स्थितिकारक

★★★

203- नित्यरसी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह का रविवार
व्रत की अवधि - 1 वर्ष शक्ति न्यूनता में पक्ष मास दो मास आदि रूप में
व्रत की विधि - प्रतिदिन रसी पूर्वक एकाशन करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - रसना इन्द्रिय विजयकर्ता

आ ध अ ग्र पृ 557 जै व्र वि स पृ 42

★★★

204- नित्यसुखदाष्टमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - अष्टाह्निका पर्व की अष्टमी
व्रत की अवधि - 5 अष्टमी
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अतराय रहित सुखदायक

***

205- नित्यसौभाग्य व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - चार माह
व्रत की विधि - आषाढ शुक्ल अष्टमी से कार्तिक पूर्णिमा तक उपवास या एकाशन शक्त्यानुसार करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्ली अर्हं श्री वृषभादि-चतुर्विंशाति-तीर्थंकरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - शाश्वत सौभाग्यवर्धक

***

206- निर्ग्रंथ महाव्रत व्रत

व्रत की अवधि - आषाढ कृष्ण नवमीं
व्रत की अवधि - 4 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक नवमी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री विमलनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्लीं अर्हं श्री विमलनाथ-जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - महाव्रत धारक शक्तिवर्धक

★★★

207- निर्जरापञ्चमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल पञ्चमी

व्रत की अवधि - 5 माह (5 वर्ष तक)

व्रत की विधि - 9 उपवास पूर्वक यथा
आषाढ शुक्ल पञ्चमी से कार्तिक शुक्ल पञ्चमी तक प्रत्येक पञ्चमी का उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री सुमतिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - कर्म निर्जराकारक

क्रि को पृ 288 आ ध अ ग्र पृ 557 जै व्र वि स पृ 97 स वा श परि ख पूर्वार्द्ध 101

★★★

208- निर्णय व्रत

व्रत की अवधि - ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्थी

व्रत की अवधि - 4 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्थी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री श्रेयासनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - सकल्प शक्तिवर्धक

★★★

209- निर्दोष सप्तमी

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल सप्तमी

व्रत की अवधि - 7 वर्ष

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री सुपार्श्वनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - अतिशय आनन्द प्रदात।

क्रि को पृ 255 जै व्र वि स पृ 86

जै व्र ति नि पृ 191 व्र क को पृ 365

★★★

210- निर्विचिकित्साग व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल तृतीया

व्रत की अवधि - 4 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक तृतीया को उपवास करें।

व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं निर्विचिकित्सागसम्यग्दर्शनाय नम ।

उद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान

व्रत का फल - ग्लानि परिहारक

★★★

211- निरतिशय व्रत

व्रत की अवधि - आषाढ कार्तिक व फाल्गुन इन तीनों माह की अष्टमी

व्रत की अवधि - 4 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - अक्षय पुण्य प्रदाता

★★★

212- निर्वाण कल्याणक व्रत

व्रतारम्भ तिथि - माघ कृष्ण चतुर्दशी

व्रत की अवधि - 48 दिन

व्रत की विधि - चौबीस तीर्थंकरो की 24 निर्वाण तिथियों में उनसे अगले दिन सहित दो-दो उपवास अर्थात् बेला करे।

व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - व्रतानुसार तीर्थंकरों की जाप

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - निर्वाणपद प्रदायक

आ ध अ ग्र पृ 557 क्रि को पृ 299

जै व्र वि स पृ 124

★★★

213- निश्चयनय व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - सरस्वती पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भवसरस्वतीदैव्यै नम ।
उद्यापन का विधान - श्रुतस्कन्ध विधान
व्रत का फल - अनेकात भावनावर्धक

★★★

214- नि:शंकिताग व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक प्रतिपदा को उपवास करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं नि शकिताग सम्यग्दर्शनाय नम ।
उद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान
व्रत का फल - अगाढ सम्यक्त्व प्रदाता

★★★

215- निशल्याष्टमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 16 वर्ष
व्रत की विधि - उपवास पूर्वक करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व- साधुभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - दुर्गति निवारक
आ ध अ ग्र पृ 557 व्र ति नि पृ 263
जै व्र वि स पृ 101 व्र क को पृ 338

★★★

216- निश्वास पर्याप्ति निवारण व्रत

व्रत की अवधि - वैशाख कृष्ण सप्तमी
व्रत की अवधि - 6 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक वैशाख कृष्ण सप्तमी को प्रोषध पूर्वक उपवास
व्रत की पूजा - श्री सुपार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - श्वास रोग निवारक

★★★

217- नीतिसागर व्रत

व्रत की अवधि - किसी भी अष्टाहिनका पर्व की अष्टमी
व्रत की अवधि - 9 अष्टमी
व्रत की विधि - तीन अन्न से एकासन करे।
व्रत की पूजा - श्री सभवनाथ एव नदीश्वर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सभवनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - नदीश्वर विधान
व्रत का फल - न्यायोपार्जित बुद्धि दायक

★★★

218- नीललेश्या निवारण व्रत

व्रत की अवधि - चैत्र कृष्ण त्रयोदशी
व्रत की अवधि - 6 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री नेमिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - काषायिक परिणाम अभावकर्ता

★★★

219- नैशिक व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - शक्त्यनुसार नियम रूप (विशेष अवधि तक) यम रूप (जीवन पर्यन्त)
व्रत की विधि - इस व्रत में रात्रि में खाद्य स्वाद लेय पेय इन चारों प्रकार के आहार का तथा भोग उपभोग की वस्तुओ का परिमाण या त्याग।
व्रत की पूजा - नित्यमह अभिषेक पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - क्षुधा दोष निवारक

आ ध अ प्र पृ 557 व्र क को पृ 336

★★★

220- पञ्चकल्याणक व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कृष्ण द्वितीया

व्रत की अवधि - पाँच वर्ष

व्रत की विधि - उपवास पूर्वक करें।

प्रथम वर्ष- 24 तीर्थंकरों की गर्भ कल्याणक की तिथियों के चौबीस उपवास

द्वितीय वर्ष- जन्म कल्याणक की तिथियों के चौबीस उपवास

तृतीय वर्ष- तप कल्याणक की तिथियों के चौबीस उपवास

चतुर्थ वर्ष- ज्ञान कल्याणक की तिथियों के चौबीस उपवास

पञ्चम वर्ष- निर्वाण कल्याणक की तिथियों के चौबीस उपवास करें।

व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा एव जिन तीर्थंकर का कल्याणक हो उनकी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नम एव जिनका कल्याण हो उनकी जाप करें।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - मोक्ष पद प्रदायक

आ ध अ प्र पृ 557 जै व्र वि स पृ 126-127
क्रि को पृ 291 ह पु पृ 273

★★★

221- पञ्चाणु व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 25 तिथि पूर्वक
व्रत की विधि - अष्टमी व चतुर्दशी को प्रोषधपूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - श्रावकोचित सयमवर्धक

***

222- पञ्चेन्द्रिय जाति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक पञ्चमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सुमतिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - जाति नामकर्म निवारक

***

223- पञ्चपरमेष्ठी गुण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की चतुर्थी
व्रत की अवधि - 143 दिन
व्रत की विधि - अरिहन्त के 46 मूलगुणों के लिये 4 चतुर्थी के 4 उपवास, 8 अष्टमी के 8

उपवास 20 दशमी के 20 और 14 चतुर्दशी के 14 उपवास। सिद्धपरमेष्ठी के 8 मूलगुण के लिये 8 अष्टमी के 8 उपवास आचार्य के 36 मूलगुण के लिये 12 द्वादशी के 12 6 षष्ठी के 6, पाँच पञ्चमी के 5 दश दशमी के 10 3 तृतीया के 3 उपाध्यायपरमेष्ठी के 25 मूलगुण के लिये 11 एकादशी के 11 चौदह चतुर्दशी के 14 उपवास एव साधुपरमेष्ठी के 28 मूलगुणो के लिये 15 पञ्चमी के 15 छह षष्ठियो के 6 एव 7 प्रतिपदा के 7 उपवास करे ।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री अर्हदभ्यो नम ।
ॐ ह्री श्री सिद्धेभ्यो नम ।
ॐ ह्री श्री आचार्येभ्यो नम ।
ॐ ह्री श्री उपाध्यायेभ्यो नम ।
ॐ ह्रीं श्री साधुभ्यो नम व्रतानुसार जाप करे।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

द्वितीय विधि 3 तीज 4 चौथ, 20 पञ्चमी 12 षष्ठी 7 सप्तमी 16 अष्टमी 30 दशमी 11 एकादशी 12 द्वादशी 28 चतुर्दशी कुल 143 उपवास करें।

व्रत का फल - उत्कृष्ट पद प्रदायक

व्र वि स पृ 118 आ ध अ प्र पृ 558

क्रि को पृ 274 जै व्र ति नि पृ 260

★★★

224- पञ्चपरमेष्ठी व्रत (लघु)

व्रतारम्भ तिथि - अष्टाह्निका की अष्टमी

व्रत की अवधि - 4 माह

व्रत की विधि - पूर्णिमा तक शक्त्यनुसार उपवास करें।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा अह पञ्चपरमेष्ठिभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - उत्कृष्ट पद प्रदायक

★★★

225- पञ्चपर्व व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल पञ्चमी

व्रत की अवधि - 5 माह

व्रत की विधि - आषाढ में पञ्चमी से दशमीं तक उपवास श्रावण में उपवा भाद्रपद में ऊनोदर आश्विन में कांजिकाहार, कार्तिक में फलाहार करें।

व्रत की पूजा - पञ्चपर्व पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा पञ्च- परमेष्ठिभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - अशुद्धिकृत दोष निवारक

★★★

226- पञ्चपरवी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की शुक्ल द्वितीया

व्रत की अवधि - 40 दिन

व्रत की विधि - 40 दिन एकाशन या उपवास शक्त्यनुसार करें 2 दोज 5 पञ्चमी 8 अष्टमी 11 एकादशी एव 14 चतुर्दशी।

व्रत की पूजा - पञ्चपर्व व्रत पूजा या पचबालयति पूजा

व्रत का जापमन्त्र - **दोज**- ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारक श्री जिनाय नम ।

पञ्चमी- ॐ ह्रीं भवोदधितारक श्री जिनाय नम ।

अष्टमी- ॐ ह्रीं विग्रहनिवारक श्री जिनाय नम ।

एकादशी- ॐ ह्रीं कर्मादिबन्ध-मोचक श्री जिनाय नम ।

चतुर्दशी- ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा सर्व शान्ति कुरु कुरु ह्रीं नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - अशुद्धिकृत दोष निवारक

जैन व्र वि पृ 45

★★★

227- पञ्चपोरिया व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी

व्रत की अवधि - पाँच वर्ष

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - लोभ कषाय निवारक
जै व्र वि स पृ 129

★★★

228- पञ्चमन्दर व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कार्तिक, फाल्गुन माह की अष्टमी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - अष्टमी से पूर्णिमा तक शक्तिश उपवास या एकाशन करें।
व्रत की पूजा - पञ्चमेरु पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं पञ्चमेरुस्थितसर्वजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चमेरु विधान
व्रत का फल - मनोकामना पूरक

★★★

229- पञ्चमास चतुर्दशी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 5 माह
व्रत की विधि - इस व्रत की दो विधियाँ हैं-

1 आषाढ, श्रावण भाद्रपद, आसोज एव कार्तिक मासों की शुक्लपक्ष की चतुर्दशियों के 5 उपवास करें।

2 उपर्युक्त मासों के दोनों पक्षों की चतुर्दशियों के 10 उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री अनन्तनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - शीलभाव वर्धक

आ ध अ प्र पृ 558 व्र क को पृ - 392

★★★

230- पञ्चमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष 5 माह उत्कृष्ट 5 वर्ष मध्यम एव 5माह जघन्य
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - देवपूजा एव सरस्वती पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्ह अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - धन ऐश्वर्य प्रदाता

★★★

231- पञ्चालकार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - उत्कृष्ट 5 वर्ष जघन्य 5 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक शुक्ल पञ्चमी
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अपवर्ग सुखदायक

★★★

232- पञ्चविंशति कल्याणभावना व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 50 दिन
व्रत की विधि - 25 उपवास एव 25 पारणा लगातार एकान्तर क्रम से करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौ ह्र अर्हत्सिद्धाचार्यो उपाध्याय-सर्व- साधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - वैराग्य पूर्वक सल्लेखना/समाधिकारक
विशेष - **25 भावनाएँ**
सम्यक्त्व विनय ज्ञान शील सत्य, श्रुत, समिति एकान्त गुप्ति ध्यान शुक्लध्यान सक्लेश निरोध, इच्छा निरोध सवर प्रशस्त योग सवेग करुणा उद्वेग, भोगनिर्वेद, ससारनिर्वेद भुक्तिवैराग्य मोक्ष मैत्री उपेक्षा एव प्रमोदभावना।

आ ध अ ग्र पृ - 558 ह पु पृ - 273

व्र क को पृ - 558

★★★

233- पञ्चश्रुतज्ञान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 336 दिन
व्रत की विधि - 168 उपवास एव 168 पारणाएँ लगातार यथा- एक उपवास एक पारणा के क्रम से करें।

व्रत की पूजा - सरस्वती पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री द्वादशागश्रुतज्ञानाय नम ।
उद्यापन का विधान - श्रुतस्कन्ध विधान
व्रत का फल - स्वाध्याय रुचिवर्धक

आ ध अ ग्र पृ 558 जै व्र वि स पृ 72

★★★

234- पञ्चससार निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक महीने की पञ्चमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अर्हत्सिद्धाचार्यो उपाध्याय-सर्व- साधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - ससार भ्रमण निवारक

★★★

235- पञ्चसूना निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक महीने की शुक्ल पञ्चमी को उपवास
व्रत की पूजा - श्री पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा नम ।
उद्यापन का विधान- पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ पाप निरोधक

★★★

236- पद्मलेश्या निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल द्वितीया
व्रत की अवधि - 6 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक वैशाख शुक्ल द्वितीया को उपवास करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - प्रशस्त कषाय निवारक

★★★

237- प्रत्याख्यान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह का रविवार
व्रत की अवधि - रविवार से शनिवार तक 7 दिन (प्रतिमाह-एक वर्ष तक) शक्त्यनुसार यम/नियम रूप
व्रत की विधि - दैनिक रसी पूर्वक एकाशन
व्रत की पूजा - अभिषेक नित्यमह पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - व्रत दोष निवारक

★★★

238- प्रमत्तगुणस्थान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल चतुर्थी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्थी के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - प्रमाद दोष शुद्धि कारक

★★★

239- परस्पर कल्याणक व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कृष्ण द्वितीया
व्रत की अवधि - 2256 दिन
व्रत की विधि - पञ्चकल्याणक के 5 प्रातिहार्यों के 8 34 अतिशयों के 34 सब मिलाकर एक तीर्थंकर सम्बन्धी 47 उपवास हुए अत 24 तीर्थंकरों के 47X24=1128 उपवास हुए जो लगातार एक उपवास एक पारणा क्रम से करें।
व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - सद्भावना सकल्पकारक

आ ध अ ग्र पृ 558 ह पु पृ 274

★★★

240- पल्य विधान व्रत (वृहत)

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन कृष्ण षष्ठी
व्रत की अवधि - एक वर्ष
व्रत की निधि - 48 उपवास 4 तेला 7 बेला पूर्वक 74 दिन यथा-

1. आश्विन कृष्ण-षष्ठी तथा त्रयोदशी का उपवास
आश्विन शुक्ल- एकादशी, द्वादशी का बेला एव चतुर्दशी का उपवास
2. कार्तिक कृष्ण-द्वादशी का उपवास
कार्तिक शुक्ल- तृतीया और द्वादशी का उपवास
3. मृगशिर कृष्ण-एकादशी का उपवास
मृगशिर शुक्ल- तृतीया और द्वादशी का उपवास
4. पौष कृष्ण-द्वितीया एव अमावस्या का उपवास
पौष शुक्ल-पञ्चमी सप्तमी एव पूर्णमासी का उपवास
5. माघ कृष्ण-चुतुर्थी सप्तमी और चतुर्दशी का उपवास
माघ शुक्ल-सप्तमी, अष्टमी का बेला और दशमी का उपवास
6. फाल्गुन कृष्ण-पञ्चमी एव षष्ठी का बेला
फाल्गुन शुक्ल-पडवा और एकादशी का उपवास
7. चैत्र कृष्ण-पड़वा एव दोज का बेला तथा चतुर्थी षष्ठी अष्टमी एव एकादशी का उपवास

चैत्र शुक्ल–सप्तमी एव दशमी का उपवास

8. वैशाख कृष्ण–चतुर्थी एव दशमी का उपवास

वैशाख शुक्ल–द्वितीया एव तृतीया का बेला एव नवमी त्रयोदशी का उपवास

9 ज्येष्ठ कृष्ण-दशमी का उपवास, त्रयोदशी चतुर्दशी एव अमावस्या का तेला

ज्येष्ठ शुक्ल–अष्टमी दशमी, पूर्णमासी का उपवास

10 आषाढ़ कृष्ण–दशमी का उपवास और त्रयोदशी चतुर्दशी एव अमावस्या का तेला

आषाढ़ शुक्ल–अष्टमी दशमी एव पूर्णमासी का उपवास

11. श्रावण कृष्ण-चतुर्थी षष्ठी, अष्टमी चतुर्दशी का उपवास

श्रावण शुक्ल–तृतीया का उपवास, द्वादशी, एव त्रयोदशी का बेला तथा पूर्णमासी का उपवास

12. भाद्रपद कृष्ण–द्वितीया का उपवास षष्ठी और सप्तमी का बेला तथा द्वादशी का उपवास

भाद्रपद शुक्ल–पञ्चमी षष्ठी सप्तमी का तेला तथा नवमीं का उपवास, एकादशी,

द्वादशी, त्रयोदशी का तेला एव पूर्णमासी का उपवास

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व साधुभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - विशिष्ट तपवर्धक

क्रि को पृ 283 आ ध अ ग्र पृ 558

जैन व्र ति वि पृ 59 जै व्र वि स पृ 50

★★★

241- पल्य विधान व्रत (लघु)

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन कृष्ण षष्ठी

व्रत की अवधि - 34 दिन

व्रत की विधि - 25 उपवास एव 9 पारणा लगातार
उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1, उपवास 4 पारणा 1
उपवास 5 पारणा 1, उपवास 4 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1, उपवास 2 पारणा 1
उपवास 1, पारणा 1

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व साधुभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - विशिष्ट तपवर्धक

★★★

242- पर्वमगल व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - उत्कृष्ट 3 वर्ष, मध्यम 3 माह, जघन्य 3 पक्ष
व्रत की विधि - प्रतिपदा से तृतीया तक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - भक्तामर विधान
व्रत का फल - अतिशय सौख्य प्रदाता

★★★

243- पर्वसागर व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल दशमी
व्रत की अवधि - 10 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक शुक्ल दशमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री शीतलनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - चरम शरीर प्रदायक

★★★

244 पार्श्वतृतीया (तदगी) व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल तृतीया
व्रत की अवधि - 3 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक तृतीया को उपवास करें ।
व्रत की पूजा - श्री पार्श्वनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - सकट निवारक

***

245- परिहार विशुद्धी चारित्र व्रत

व्रतारम्भ तिथि - पौष शुक्ल पूर्णिमा

व्रत की अवधि - 5 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक पौष शुक्ल पूर्णिमा को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नमः।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - उत्कृष्ट चारित्र विशुद्धिकारक

***

246- पीतलेश्या निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र कृष्ण अमावस्या

व्रत की अवधि - 6 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक चैत्र कृष्ण अमावस्या को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री महावीर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री महावीरजिनेन्द्राय नमः।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - सूक्ष्म कषाय निर्वृत्तिकारक

***

247- पुण्य चतुर्दशी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - आषाढ, श्रावण भाद्रपद आश्विन एव कार्तिक इन पॅाच माह की शुक्ल चतुर्दशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - सिद्धपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अनन्तानन्त-परम सिद्धेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - अतिशय पुण्यकारक

★★★

248- पुण्यसागर व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी अष्टाह्निका की अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - आत्म पवित्रताकारक

★★★

249- पुरन्दर व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि

व्रत की अवधि - 8 दिवस
व्रत की विधि - व्रत के दिन शक्त्यानुसार उपवास करें।
व्रत की पूजा - नव देवता पूजन
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिन-धर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी
व्रत का फल - श्रेष्ठ पदप्रदाता

★★★

250- पुरुष वेद निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र कृष्ण चतुर्थी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्थी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री अनन्तनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अनन्तनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - काम पीडा निवारक

★★★

251- पुष्पाञ्जलि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद, माघ एव चैत्र माह की शुक्ल पञ्चमी से नवमीं तक
व्रत की अवधि - पाँच वर्ष
व्रत की विधि - उत्तम मध्यम एव जघन्य की अपेक्षा तीन विधियाँ हैं-

1.उत्तम विधि-पञ्चमी से नवमीं तक 5 उपवास

2.मध्यम विधि- पञ्चमी, सप्तमी नवमी का उपवास एव षष्ठी, अष्टमी का एकाशन

3 जघन्य विधि- पञ्चमी एव नवमी का उपवास एव षष्ठी सप्तमी एव अष्टमी का एकाशन

व्रत की पूजा - पञ्चमेरु पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं पञ्चमेरुस्थअसीति-जिनालयस्थ जिनेभ्यो नम । व्रतानुसार अलग-अलग जाप (परिशिष्ट से) करें।

उद्यापन का विधान - पञ्चमेरु विधान

व्रत का फल - सातिशय पुण्यदायक

आ ध अ ग्र पृ 559 जै व्र ति नि पृ 212 245

जै व्र वि स पृ 41 क्रि को पृ 276

★★★

252- पृथ्वीकाय निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल षष्ठी

व्रत की अवधि - 6 तिथि पूर्वक

व्रत की विधि - प्रत्येक षष्ठी के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री पद्मप्रभ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - स्थावर हिसा निवारक

★★★

253- पौष्य कल्याण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - पौष शुक्ल सप्तमी
व्रत की अवधि - 5 दिन (5 वर्ष)
व्रत की विधि - सप्तमी को एकासन अष्टमी को एक भुक्ति, नवमीं को एक समय भोजन, दशमीं को कन्जिकाहार एव एकादशी को उपवास करना।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - कर्म निर्जराकारक

★★★

254- फलदशमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्र शुक्ल दशमी
व्रत की अवधि - 10 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री शान्तिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - सुफल दायक

जै व्र वि स पृ - 130

★★★

255- फलमगलवार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कार्तिक और फाल्गुन माह में मगलवार

व्रत की अवधि - 12 महीने एव 12 दिन

व्रत की विधि - प्रत्येक मगलवार को उपवास करे।

व्रत की पूजा - अरहत परमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं परमब्रह्मणे अनन्तानन्त-ज्ञानशक्त्ये अर्हत्परमेष्ठिने नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - दुष्काल निवारक

★★★

256- वज्रमध्य व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 38 दिन

व्रत की विधि - 29 उपवास एव 9 पारणा लगातार करें 1 उपवास 1 पारणा, 2 उपवास 1 पारणा 3 उपवास 1 पारणा 4 उपवास 1 पारणा 5 उपवास 1 पारणा 5 उपवास 1 पारणा 4 उपवास 1 पारणा 3 उपवास 1 पारणा 2 उपवास 1 पारणा (इसकी अन्य विधि भी मिलती है)

व्रत की पूजा - सिद्ध पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अनन्तानन्त परमसिद्धेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - तप बलवर्धक

आ ध अ ग्र पृ - 561 व्र वि स पृ -81 ह पु पृ -258

★★★

257- ब्रह्मचर्य महाव्रत व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कृष्ण अष्टमी
व्रत की अवधि - 10 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - गुरुपूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - एकत्व भावना प्रदायक

★★★

258- वसतभद्र व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 40 दिन
व्रत की विधि - 35 उपवास 5 पारणा लगातार करें यथा-
उपवास 5 पारणा 1 उपवास 6 पारणा 1
उपवास 7 पारणा 1, उपवास 8 पारणा 1
उपवास 9 पारणा 1
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-
सर्व- साधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - तप बलवर्धक

आ ध अ ग्र पृ -562 ह पु पृ -257 जै सि को पृ -626

★★★

259- बारहतप व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी मास के शुक्लपक्ष की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 144 दिन

व्रत की विधि - लगातार 12 उपवास आगे 12 एकासन 12 काजिकाहार 12 गोरस रहित भोजन, 12 अल्पाहार 12 एक बार का परोसा मौन सहित भोजन 12 दिन मात्र मूँग का आहार 12 दिन मोठ का आहार 12 दिन चोला का आहार 12 दिन चनो का आहार 12 दिन मात्र जल और 12 दिन घृत रहित आहार। इस प्रकार अन्तराय पूर्वक मौन सहित भोजन करे।

व्रत की पूजा - अरिहत परमेष्ठी पूजा (देव पूजा)

व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - इच्छा निरोधक

आ ध अ ग्र पृ 559 जै व्र ति म पृ 115

★★★

260- बारह बिजोरा व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की द्वादशी

व्रत की अवधि - 1 वर्ष

व्रत की विधि - बारह माह की 24 द्वादशी के 24 उपवास

व्रत की पूजा - श्री वासुपूज्य पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - तप बल वर्धक
आ ध अ ग्र पृ 559 जै व्रत वि स पृ 99

★★★

261- बारह भेद तप व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 132 तिथि
व्रत की विधि - क्रम से बारह उपवास बारह काजिकाहार बारह अन्नाहार बारह मनचित्याहार बारह रूक्षाहार बारह घृतरहित आहार बारह नीरस आहार बारह तेल रहित एकाशन बारह इक्षुरस रहित एकाशन बारह मीठा रहित एकाशन बारह नमक रहित एकाशन करे।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - आत्म शोधक

★★★

262- बीजपूरत तप व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 3 वर्ष
व्रत की विधि - भाद्रपदशुक्ल पञ्चमी के दिन उपवास करके दो दिन एकाशन करें अष्टमी को उपवास करके फिर दो दिन एकाशन

करें। एकादशी को उपवास करके दो दिन का एकाशन करें। चतुर्दशी को उपवास करके पूर्णिमा को एकाशन करें।

व्रत की पूजा - सिद्ध परमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र

उद्यापन का विधान - कर्म दहन विधान

व्रत का फल - कषाय निरोधक

★★★

263- बुधवार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल का प्रथम बुधवार

व्रत की अवधि - 5 बुधवार

व्रत की विधि - उपवास पूर्वक

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजन

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व साधुभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - क्लेश निवारक

★★★

264- बुधाष्टमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की बुधवार एव अष्टमी सयोग तिथि

व्रत की अवधि - आठ बुधवार

व्र॰ की विधि - व्रत के दिन उपवास करे।

व्रत की पूजा - श्री महावीर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री महावीरजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - व्यामोह निवारक

★★★

265- बेला व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 2 दिन 2 वर्ष तक
व्रत की विधि - प्रथम दिन दोपहर को एकाशन पश्चात् लगातार दो उपवास और अगले दिन पारणा करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अर्हत्सिद्धाचार्यो उपाध्याय-सर्व साधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - काय बलवर्धक/सयमवर्धक
आ ध अ ग्र पृ - 559 जै व्र वि स पृ -123

★★★

266- भक्तामर व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की अष्टमी
व्रत की अवधि - 1 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें। अष्टमी एव चतुर्दशी को व्रत करते हुए 48 दिन करें।
व्रत की पूजा - भक्तामर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री वृषभनाथ-तीर्थंकराय नम ।
उद्यापन का विधान - भक्तामर विधान

व्रत का फल - सकट प्राकृतिक प्रकोप महामारी असाध्यरोगादि निवारक

जै व्र वि पृ - 10

★★★

267- भयकर्म निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र कृष्ण नवमी

व्रत की अवधि - 9 माह

व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करे।

व्रत की पूजा - श्री मल्लिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री मल्लिनाथ-जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - मनोबल बुद्धिकारक

★★★

268- भयहरण चतुर्दशी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण कृष्ण चतुर्दशी

व्रत की अवधि - 14 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक श्रावण कृष्ण चतुर्दशी को उपवास करे ।

व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

विशेष - सप्तभय निवारण हेतु।

व्रत का फल - अभय प्रदायक

★★★

269- भवदुख निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी
व्रत की अवधि - 1 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक एकादशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - सिद्ध पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत-विद्यायै-श्री सिद्धाधिपतये नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - रागद्वेष निरोधक

★★★

270- भवदुख हराष्टमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी चतुर्दशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादि-चतुर्विंशति-जिनेन्द्रेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - चतुर्गति दु ख निवारक

★★★

271- भव्यानन्द व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कार्तिक, फाल्गुन की कोई एक शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - पञ्चमी, अष्टमी व चतुर्दशी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायमर्वसाधुभ्यो नम ।
द्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - निदा परिणाम निरोधक

★★★

272- भवरोगहराष्टमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 9 तिथि पूर्वक
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करे।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री वृषभादि-चतुर्विंशति-जिनेन्द्रेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अक्षय सुख सम्पत्तिदायक

★★★

273- भवसागर निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी अष्टान्हिका की चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी एव चतुर्दशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादि-चतुर्विंशति-जिनेन्द्रेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - जन्म मरण वेदनानाशक

★★★

274- भावना द्वात्रिंशतिका व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी चतुर्दशी

व्रत की अवधि - 32 उपवास

व्रत की विधि - चतुर्दशी के 16 द्वादशी के 12, चतुर्थी के 4 कुल 32 उपवास करें।

व्रत की पूजा - सरस्वती पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भववाग्वादिनीसरस्वत्यै नम।

उद्यापन का विधान - श्रुतस्कन्ध विधान

व्रत का फल - आत्म एकाग्रतावर्धक

***

275- भावना पच्चीसी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की दशमी

व्रत की अवधि - उत्तम-पच्चीस दिन जघन्य-पचास दिन

व्रत की विधि - इस व्रत की उत्तम एव जघन्य क्री अपेक्षा दो विधियाँ हैं-

उत्तम विधि-पच्चीस उपवास पूर्वक-दश दशमी के 10 पाँच पञ्चमी के 5 आठ अष्टमी के 8 दो पडवा के 2 उपवास करें।

जघन्य विधि-पचास एकाशन पूर्वक उपर्युक्त विधि के अनुसार उपवासों के स्थान पर दुगुने एकाशन करें।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - सद्भावना प्रदायक

आ ध अ ग्र पृ 560 क्रि को पृ - 270
जै व्र वि स पृ 49 जै व्र ति नि पृ - 215

★★★

276- भावनाविधि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 50 दिन
व्रत की विधि - प्रत्येक व्रत की 5-5 भावनाओ के हिसाब से पॉच व्रतो की 25 भावनाओ को भाते हुए एक उपवास एक पारणा के क्रम से 50 दिन मे 25 उपवास करे।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - मानसिक आघात निवारक

आ ध अ ग्र पृ 560 ह पु पृ 273 व्र वि स पृ 50

★★★

277- भाषा पर्याप्ति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख कृष्ण अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - अरहत परमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं भवदुखनिवारक जिनेन्द्रेभ्यो नम

द्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - असत्य अशिष्ट वचन नि॰ धक

★★★

278- भोगान्तराय निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी

व्रत की अवधि - 5 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री सुपार्श्वनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - भोगोपभोग आशक्ति क्षीणकर्ता

★★★

279- मकरसक्रमण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - पौषमास की मकर सक्रमण तिथि

व्रत की अवधि - 12 वर्ष

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री शीतलनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - अशुभ गृहदशा क्षयकारक

★★★

280- मनचिन्ती अष्टमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रशुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 8 वर्ष
व्रत की विधि - उपवास पूर्वक
व्रत की पूजा - श्री पुष्पदन्त पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र / ॐ ह्रीं श्री क्ली अर्हं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - मनोरथ पूर्णकर्ता

व्र वि स पृ - 129

★★★

281- मन पर्याप्ति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख कृष्ण दशमी
व्रत की अवधि - 10 दशमी
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्ह श्री मुनिसुव्रत-जिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - मन पर्याप्ति अभावकर्ता

★★★

282- मनुष्यगति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल चतुर्थी
व्रत की अवधि - 4 माह (कार्तिक तक)
व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्थी को उपवास करे।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - मनुष्य पर्याय क्षयकारक

★★★

283- मनोगुप्ति व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल सप्तमी
व्रत की अवधि - 3 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक शुक्ल सप्तमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - सिद्ध पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री णमोसिद्धाण सर्वसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - मन वशीकरण हेतु

★★★

284- महावीर जयन्ती व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल त्रयोदशी
व्रत की अवधि - 13 वर्ष
व्रत की विधि - उपवास पूर्वक
व्रत की पूजा - श्री महावीर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री महावीर-जिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - प्रशस्त जीवनकारक

जै व्र वि स पृ 104 आ ध अ ग्र पृ 562

★★★

285- महोदय व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल एकादशी

व्रत की अवधि - 11 एकादशी

व्रत की विधि - प्रत्येक एकादशी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री श्रेयासनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - प्रशस्त यश हेतु

***

286- माघमाला व्रत

व्रतारम्भ तिथि - माघ शुक्ल पूर्णिमा

व्रत की अवधि - 1 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक पूर्णिमा को उपवास करें।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का पूजा - ॐ ह्री अर्ह अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-साधुभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - मनोकामना पूरक

***

287- मिथ्यात्वगुणस्थान निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी

व्रत की अवधि - 4 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्दशी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री शान्तिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्लीं अर्हं विश्वशातिकराय श्री शान्तिनाथाय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - विपरीत मान्यता निरोधक

★★★

288- मिथुन सक्रमण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ मास की मिथुन सक्रमण तिथि
व्रत की अवधि - 12 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सभवनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री सभवनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ ग्रहदशा शान्तिकारक

★★★

289- मीनसक्रमण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - फाल्गुन मास की मीन सक्रमण तिथि
व्रत की अवधि - 12 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करे ।
व्रत की पूजा - श्री वासुपूज्य पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ ग्रहदशा शान्तिकारक

★★★

290- मुक्तावली व्रत (वृहत्)

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल सप्तमी

व्रत की अवधि - 62 दिन

व्रत की विधि - 49 उपवास 13 पारणाएँ यथा-

उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1
उपवास 5 पारणा 1 उपवास 6 पारणा 1
उपवास 7 पारणा 1 उपवास 6 पारणा 1
उपवास 5 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास 1 पारणा 1

व्रत की पूजा - श्री वासुपूज्य पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - अप्रशस्त नामकर्म क्षयकारक

आ ध अ प्र पृ 560 ह पु पृ 260 क्रि को पृ 267/270
जै व्र वि स पृ 75 जैन व्र ति नि पृ 166 247
व्र क को पृ 451

★ ★ ★

291- मुक्तावली व्रत(मध्यम)

व्रतारम्भ तिथि - भाद्र पद शुक्ल सप्तमी

व्रत की अवधि - 34 दिन

व्रत की विधि - 25 उपवास एव 9 पारणाएँ लगातार करें

उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1

उपवास 5 पारणा 1, उपवास 4 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास 1 पारणा 1

व्रत की पूजा - श्री वासुपूज्य पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - अप्रशस्त नामकर्म क्षयकारक

★★★

292- मुक्तावली व्रत (लघु)

व्रतारम्भ तिथि - भाद्र पद शुक्ल सप्तमी

व्रत की अवधि - 9 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक वर्ष मे 9 उपवास करे
भाद्रपद शुक्ल 7 असोज कृष्ण 6 एव 13 असोज शुक्ल 11 कार्तिक कृष्ण 12कार्तिक शुक्ल 3 एव 11 मृगशिर कृष्ण 11 मृगशिर शुक्ल 3 इस प्रकार एक वर्ष में नौ उपवास।

व्रत की पूजा - श्री वासुपूज्य पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - अप्रशस्त नामकर्म क्षयकारक

★★★

293- मुकुटसप्तमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल सप्तमी
व्रत की अवधि - 7 वर्ष
व्रत की विधि - उपवास पूर्वक
व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्ह श्री वृषभजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - पारस्परिक सौहार्द्र सदभावना वर्धक

जै प्र ात नि पृ-190 क्रि को पृ 267 जै व्र वि स पृ 91 आ ध अ ग्र पृ 560 व्र क को पृ 444

★★★

294- मुनष्ठी विधान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्र माघ और चैत्र तीनो माह की कृष्ण प्रतिपदा
व्रत की अवधि - 1 वर्ष
व्रत की विधि - कृष्ण एकम् से शुरू होकर शुक्ल पूर्णिमा को एक माह में समाप्त होता है। व्रत के प्रारम्भ मे उपवास तत्पश्चात् एकाशन करे।
व्रत की पूजा - चतुर्विंशति पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - परिणाम विशुद्धिवर्धक

आ ध अ ग्र पृ 560 जै व्र वि स पृ - 42

★★★

295- मुरजमध्य व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 33 दिन

व्रत की विधि - 26 उपवास एव 7 पारणाएँ लगातार यथा-

उपवास 2 पारणा 1 उपवास 3 पारणा 1

उपवास 4 पारणा 1 उपवास 5 पारणा 1

उपवास 5 पारणा 1, उपवास 4 पारणा 1

उपवास 3 पारणा 1

व्रत की पूजा - श्री मल्लिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - परिणाम विशुद्धिवर्धक

आ ध अ ग्र पृ 560 ह पु पृ 259 जै व्र वि स पृ 80

★★★

296- मृदगमध्य व्रत (वृहद)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 98 दिन

व्रत की विधि - 81 उपवास एव 17 पारणाएँ लगातार यथा-

उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1

उपवास 3 पारणा 1, उपवास 4 पारणा 1

उपवास 5 पारणा 1 उपवास 6 पारणा 1

उपवास 7 पारणा 1 उपवास 8 पारणा 1

उपवास 9 पारणा 1 उपवास 8 पारणा 1
उपवास 7 पारणा 1 उपवास 6 पारणा 1
उपवास 5 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास 1 पारणा 1

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - परिणाम विशुद्धिवर्धक
आ ध अ ग्र पृ - 560 ह पु पृ 259 क्रि को पृ 269 जै व्र वि स पृ - 79 80

★★★

297- मृदगमध्य व्रत (लघु)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 1 माह
व्रत की विधि - 23 उपवास एव 7 पारणाएँ लगातार यथा-

उपवास 2 पारणा 1 उपवास 3 पारणा 1
उपवास 4 पारणा 1 उपवास 5 पारणा 1
उपवास 4 पारणा 1 उपवास 3 पारणा 1
उपवास 2 पारणा 1

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व- साधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - परिणाम विशुद्धिवर्धक

क्रि को पृ 269

★★★

298- मृषानन्द निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल सप्तमी

व्रत की अवधि - 6 तिथि

व्रत की विधि - प्रत्येक सप्तमी के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिन धर्म जिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - रौद्रध्यान निवारक

★★★

299- मेघमाला व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भादपद्र कृष्ण प्रतिपदा

व्रत की अवधि - 5 वर्ष

व्रत की विधि - भाद्रपद कृष्ण- 1 8 14 तथा
शुक्ल- 1 8, 14
असोज कृष्ण 1
इन सात तिथियों के प्रतिवर्ष उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - दारिद्र निवारक

क्रि को पृ -253 जै व्र वि स पृ - 84

व्र ति नि पृ - 200 आ ध अ ग्र पृ - 560

★★★

300- मेरुपंक्ति व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 7 माह 10 दिन

व्रत की विधि - 80 उपवास 20 बेला एव 100 पारणाएँ लगातार होती है। भद्रशाल वन के चार चैत्यालय के 4 उपवास और 4 पारणाएँ पश्चात् 1 बेला एव 1 पारणा इस प्रकार चार उपवास एक बेला पारणा पाँच इसी प्रकार-

नन्दन वन के उपवास 4 बेला 1 पारणा 5

सौमनस वन क उपवास 4 बेला 1 पारणा 5

पाण्डुक वन के उपवास 4 बेला 1 पारणा 5

इसी प्रकार कुल मिलाकर-

सुदर्शन मेरु के उपवास 16 बेला 4 पारणा 20

विजय मेरु के उपवास 16, बेला 4, पारणा 20

अचल मेरु के उपवास 16 बेला 4, पारणा 20

मन्दिर मेरु के उपवास 16 बेला 4, पारणा 20

विद्युन्माली मेरु उपवास 16 बेला 4, पारणा 20

व्रत की पूजा - पञ्चमेरु पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं पञ्चमेरुसम्बन्धी अशीति जिनालय जिन- बिम्बेभ्यो नम ।

ॐ ह्रीं सुदर्शन मेरुसम्बन्धिषोडश जिनालय जिन- बिम्बेभ्यो नम ।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसम्बन्धिषोडश जिनालय जिन- बिम्बेभ्यो नम ।

ॐ ह्रीं अचलमेरु सम्बन्धिषोडश जिनालय जिन- बिम्बेभ्यो नम ।

ॐ ह्रीं मन्दिरमेरुसम्बन्धिषोडश जिनालय जिन- बिम्बेभ्यो नम ।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरु सम्बन्धिषोडश जिनालय जिन- बिम्बेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चमेरु विधान

व्रत का फल - अर्हद् भक्ति साधना प्रदायक

ह पु पृ - 268 आ ध अ ग्र पृ - 560

जै व्र वि स पृ - 81 क्रि को पृ - 281

विशेष-अलग-अलग मेरु के व्रत के काल में अलग-अलग जाप भी कर सकते हैं।

★★★

301- मेषसंक्रमण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र मास की मेष सक्रमण तिथि

व्रत की अवधि - 12 वर्ष

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नमः ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ ग्रहदशा शांतिकारक

★★★

302- मोहनीय कर्म निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - अष्टाह्निका की अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी एव चतुर्दशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री अभिनन्दननाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - मोह क्षीणकारक

★★★

303- मोक्षलक्ष्मी निवास व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी एव चतुर्दशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री चन्द्रप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - अनत सुखवर्धक

★★★

304- मोक्षसप्तमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल सप्तमी
व्रत की अवधि - 7 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री पार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - विघ्न विनाशक/सौख्य प्रदायक

आ ध अ ग्र. पृ - 561 जै व्र वि स पृ - 103
व्र क को पृ - 462

★★★

305- मौन व्रत

व्रतारम्भ तिथि - पौष शुक्ल एकादशी
व्रत की अवधि - नित्यमौन की अपेक्षा जीवन पर्यंत, नैमित्तिक की अपेक्षा 1 वर्ष
व्रत की विधि - इस व्रत की दो विधि हैं-

नित्यमौन- भोजन, वमन, स्नान मैथुन मलक्षेपण, सामायिक और जिनपूजा इन सात कार्यों में जीवन पर्यंत मौन रखना।

नैमित्तिक मौन- पौष शुक्ल एकादशी से आरम्भ कर प्रत्येक माह की एकादशी के दिन 16 पहर का उपवास करते हुए 24 उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्ली अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - उद्वेग निवारक

जै व्र वि स पृ 112

★★★

306- मौन एकादशी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - पौष कृष्ण एकादशी
व्रत की अवधि - 11 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक पौषकृष्ण एकादशी को उपवास करें।सोलह पहर मौन से रहे ।
व्रत की पूजा - श्री चन्द्रप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्ली अर्हं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - दारिद्र निवारक

★★★

307- मगलार्णव व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक कार्तिक शुक्ल एकम से पचमी तक उपवास करे।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधुभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अमगल असाता निवारक

★★★

308- मंगलभूषण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - 3 वर्ष
व्रत की विधि - एकम् से तृतीया तक तीन दिन काजी आहार
व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - भक्तामर विधान
व्रत का फल - सुख समृद्धि प्रदायक

★★★

309- मगलसार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन माह का पहला मगलवार
व्रत की अवधि - पाँच मगलवार
व्रत की विधि - प्रत्येक मगलवार को उपवास करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - पाप प्रवृत्ति निरोधक

★★★

310- मगलत्रयोदशी व्रत (धनतेरस)

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी
व्रत की अवधि - 13 वर्ष

व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषधपूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री महावीर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्लीं अर्हं श्री महावीरजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
विशेष - भगवान महावीर ने योगनिरोध धारण किया था।
व्रत का फल - ध्यान साधना सकल्पवर्धक

***

311- यथाख्यात चारित्र व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कृष्ण द्वितीया
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक आषाढ कृष्ण द्वितीया को उपवास करें।
व्रत की पूजा - चारित्रशुद्धि पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्हं अनन्तानन्तसिद्धेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - कषायों का सपूर्ण क्षयकारक

***

312- योगधारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 8 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्दशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री चन्द्रप्रभ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - त्रियोग वशीकरण कारक

★★★

313- रत्नमुक्तावली व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 343 दिन

व्रत की विधि - 284 उपवास 59 पारणा यथा-उपवास क्रम

1 उपवास 1 पारणा 2 उपवास 1 पारणा
1 उपवास 1 पारणा 3 उपवास 1 पारणा
1 उपवास 1 पारणा 4 उपवास 1 पारणा
इस क्रम से 16 उपवास तक वृद्धि करना फिर क्रमश घटते हुए 1 उपवास 1 पारणा करना

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अर्हत्सिद्धाचार्यो उपाध्याय-सर्व- साधुभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - मोक्षमार्ग प्राप्ति भावनावर्धक

ह पु पृ - 261 आ ध अ प्र पृ - 561

★★★

314- रत्नशोक व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल तृतीया
व्रत की अवधि - 9 तिथि पूर्वक
व्रत की विधि - आषाढ की 2 श्रावण की 2 भाद्रपद की 2 आश्विन की 2 एव कार्तिक शुक्ल 3 को प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - रत्नत्रय पूजा।
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्हं सम्यक्रत्नत्रय धर्माय नम ।
उद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान
व्रत का फल - अपयश निवारक

★★★

315- रत्नत्रयभूषण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल नवमी
व्रत की अवधि - 9 तिथि
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - रत्नत्रय पूजा
व्रत का पूजा - ॐ ह्रीं अर्ह सम्यग्दर्शन-ज्ञानचारित्रेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान
व्रत का फल - पच परमेष्ठी पदप्रदायक

★★★

316- रत्नत्रय व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्र माघ एव चैत्र तीनों माह की शुक्ल पक्ष की द्वादशी
व्रत की अवधि - उत्कृष्ट 13वर्ष मध्यम 8वर्ष, जघन्य 5वर्ष एव 3वर्ष

व्रत की विधि - शुक्ल पक्ष की द्वादशी के दिन मध्याह्न भोजन के पश्चात् त्रयोदशी, चतुर्दशी एव पूर्णिमा इन तीन दिन के उपवास की प्रतिज्ञा करें एव प्रतिपदा के दिन पारणा करें।

जघन्य विधि - व्रत के दिनों में एकाशन करें।

व्रत की पूजा - रत्नत्रय पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान

व्रत का फल - मोक्षमार्ग प्रदायक

त्र ति नि पृ 195 आ ध अ ग्र पृ 561 क्रि को पृ 249 जै व्र वि स पृ 40 व्र क को पृ - 494

★ ★ ★

317- रत्नावली व्रत (वृहत्)

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन शुक्ल तृतीया

व्रत की अवधि - 366 दिन

व्रत की विधि - 300 उपवास 66 पारणाएँ लगातार

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधुभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

विधि रत्नावली

उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास 4 पारणा 1 उपवास 5 पारणा 1
उपवास 6 पारणा 1 उपवास 7 पारणा 1
उपवास 7 पारणा 1 उपवास 6 पारणा 1
उपवास 5 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1

उपवास 3 पारणा 1
इसी क्रम मे 6 आवृत्ति पूर्वक व्रत करें।

व्रत का फल - तप बलवर्धक व अतिशय निर्जरा कारक
ह पु पृ 260 व्र क को पृ - 490 क्रि को
पृ - 266 आ ध अ ग्र पृ 561 जै व्र वि स पृ - 73

★★★

318- रत्नावली व्रत (मध्यम)

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन शुक्ल तृतीया

व्रत की अवधि - 1 वर्ष

व्रत की विधि - बहत्तर उपवास पूर्वक
प्रत्येक मास में शुक्लपक्ष की तृतीया पञ्चमी अष्टमी के उपवास एव कृष्ण पक्ष में द्वितीया पञ्चमी अष्टमी के उपवास करे। एक माह मे छह उपवास पूर्वक बारह माह मे बहत्तर उपवास होते है।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र ॐ ह्रा ह्री ह्रु ह्रौ ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व- साधुभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

विशेष - इस व्रत की अन्य विधि भी है- शुक्लपक्ष की पञ्चमी षष्ठी एव एकादशी तथा कृष्णपक्ष की द्वितीया षष्ठी एव द्वादशी इस प्रकार प्रतिमाह छह उपवास पूर्वक बारह मास में बहत्तर उपवास।

व्रत का फल - तप बलवर्धक व अतिशय निर्जराकारक

★★★

319- रत्नावली व्रत (लघु)

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन शुक्ल तृतीया
व्रत की अवधि - 40 दिन
व्रत की विधि - 30 उपवास 10 पारणा लगातार
1 उपवास 1 पारणा, 2 उपवास 1 पारणा
3 उपवास 1 पारणा, 4 उपवास 1 पारणा,
5 उपवास 1 पारणा, 5 उपवास 1 पारणा,
4 उपवास 1 पारणा, 3 उपवास 1 पारणा,
2 उपवास 1 पारणा, 1 उपवास 1 पारणा
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अर्हत्सिद्धाचार्यो उपाध्याय-सर्व-साधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - तप बलवर्धक व अतिशय निर्जरा कारक

★★★

320- रतिकर्म निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र कृष्ण षष्ठी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक षष्ठी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री शान्तिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - आशक्ति कम करने के लिए

★★★

321- रविवार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल का प्रथम रविवार

व्रत की अवधि - 9 वर्ष

व्रत की विधि - 9 वर्ष में 81 रविवार

आषाढ का 1 रविवार श्रावण के 4 रविवार भाद्रपद के 4 रविवार।

इस प्रकार 1 वर्ष में 9 रविवार करे।

दूसरी विधि अनुसार यह व्रत प्रतिवर्ष 9/9 रविवारों मे नौ वर्ष किया जाता है। लगातार नौ रविवारो में नौ लब्धियों से विशिष्ट भगवान पार्श्वनाथ की क्रमश उपासना की जाती है।

प्रथम वर्ष में-नौ रविवारो मे उपवास या शक्ति न हो तो एकाशन करना चाहिए।

द्वितीय वर्ष में-नौ रविवारों में काजिकाहार (माडसहित चावल) अथवा इमली के रस के साथ भात मात्र से एकाशन करना चाहिए।

तीसरे वर्ष में-नमक रहित भोजन से एकाशन करना चाहिए।

चौथे वर्ष में- एक चाटुका प्रमाण भात या खिचडी के आहार से एकाशन करना चाहिए।

पाँचवें वर्ष में- छाछ वा भात से एकाशन करना चाहिए।

छठवें वर्ष में- किसी भी एक अन्न के आहार से एकाशन करना चाहिए।

सातवें वर्ष में- गौरस रहित आहार से एकाशन करना चाहिए।

आठवें वर्ष में- छहों रस रहित भोजन से एकाशन करें।

नौवें वर्ष में- भोजन के समय थाली में एक बार के परोसे भोजन से एकाशन करना चाहिए।

नौ वर्ष की विधि में अलग-अलग ग्रन्थों में भोजन के क्रम में अन्तर मिलता है। अत किसी एक ग्रन्थ का आधार मानकर व्रत सम्पन्न करें।

तीसरी विधि अनुसार 9 वर्ष के प्रत्येक रविवार को अलूने (बिना नमक) भोजन पूर्वक एकाशन करना चाहिए। इसने समुच्चय मन्त्र की जाप की जाएगी। यदि कम समय में करने का भाव है तो एक वर्ष मे 48 रविवार करें।

इस व्रत की चार विधियाँ है-

1 प्रथम विधि- प्रति रविवार को प्रोषधोपवास करना।

2 दूसरी विधि- आमिल (इमली-चावल) से एकाशन।

3 तीसरी विधि- एक बार का परोसा भोजन करना।

4 चतुर्थ विधि- एकाशन करना।
शक्त्यनुसार विधि पूर्वक करें।

व्रत की पूजा - श्रीपार्श्वनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय नम ।

रविव्रत के नौ जाप्य मन्त्र

ॐ ह्रीं क्षायिक-ज्ञान-लब्धि-विभूषताय-चिन्तामणि- पार्श्वनाथाय नम ।

ॐ ह्री क्षायिक-दर्शन-लब्धि-विभूषताय चिन्तामणि पार्श्वनाथाय नम ।

ॐ ह्रीं क्षायिक-सम्यक्त्व-लब्धि विभूषताय चिन्तामणि पार्श्वनाथाय नम ।

ॐ ह्रीं क्षायिक-चारित्र-लब्धि-विभूषताय-चिन्तामणि- पार्श्वनाथाय नम ।

ॐ ह्री क्षायिक-दान-लब्धि-विभूषताय-चिन्तामणि- पार्श्वनाथाय नम ।

ॐ ह्री क्षायिक-लाभ-लब्धि-विभूषताय-चिन्तामणि- पार्श्वनाथाय नम ।

ॐ ह्री क्षायिक-भोग-लब्धि-विभूषताय-चिन्तामणि- पार्श्वनाथाय नम ।

ॐ ह्रीं क्षायिक-उपभोग-लब्धि-विभूषताय-चिन्तामणि- पार्श्वनाथाय नम ।

ॐ ह्री क्षायिक-वीर्य-लब्धि-विभूषताय-चिन्तामणि- पार्श्वनाथाय नम ।

उद्यापन का विधान - रविव्रत विधान

व्रत का फल - मनोवांछित फल प्रदाता
क्रि को पृ - 289 आ ध अ ग्र पृ - 561 जै व्र वि
पृ - 93 व्र वि स पृ - 44 जै व्र ति.नि पृ - 228

***

322- रसपरित्याग व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण कृष्ण प्रतिपदा
व्रत की अवधि - 1 माह
व्रत की विधि - भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा तक षट्रस त्याग पूर्वक एकाशन
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व साधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - इन्द्रिय लोलुपता शामक

***

323- रक्षाबन्धन व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल पूर्णिमा
व्रत की अवधि - 8 वर्ष
व्रत की विधि - उपवास पूर्वक करें एव हाथ में रक्षासूत्र बाँधें।
व्रत की पूजन - रक्षाबन्धन पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री विष्णुकुमारमुनिभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
विशेष - श्रवण नक्षत्र में अकम्पनादि सात सौ मुनियों के ऊपर बलि राजा द्वारा किये महान्

उपद्रव को श्री विष्णुकुमार मुनि ने विक्रिया ऋद्धि के बल से दूर किया। जिनशासन की रक्षा का सकल्प करें। रक्षा सूत्र बॉधकर व्रत किया जाता है।

व्रत का फल - रक्षा सकल्प/ वात्सल्य प्रभावना वर्धक
जै व्र वि स पृ 108 व्र क को पृ 494
आ ध अ ग्र पृ 561

★★★

324- रुक्मणी(रूपाष्टमी) व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल अष्टमी

व्रत की अवधि - 8 वर्ष

व्रत की विधि - प्रतिवर्ष भाद्र माह में 4 उपवास 4 पारणा एव 1 धारणा प्रोषघ यथा- अष्टमी का प्रोषधपूर्वक उपवास नवमीं को पारणा दशमी का उपवास एकादशी को पारणा द्वादशी का उपवास त्रयोदशी को पारणा चतुर्दशी का उपवास पूर्णमासी को पारणा

व्रत की पूजा - श्री चन्द्रप्रभ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - मुनि निदाकृत दोष निवारक
जै व्र वि स पृ - 94 क्रि को पृ - 285
आ ध अ ग्र पृ - 561 व्र क को पृ - 553

★★★

325- रुद्रबसत व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 44 दिन

व्रत की विधि - 35 उपवास 9 पारणाएँ लगातार
उपवास 2 पारणा 1 उपवास 3 पारणा 1
उपवास 4 पारणा 1, उपवास 5 पारणा 1
उपवास 6 पारणा 1, उपवास 6 पारणा 1
उपवास 4 पारणा 1 उपवास 3 पारणा 1
उपवास 2 पारणा 1

व्रत की पूजा - कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय सर्वारिष्ट शान्ति कुरु कुरु।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - कर्म निर्जरा कारक

जै व्र वि स पृ 67 आ ध अ ग्र पृ 561

★★★

326- रूपशील चतुर्दशी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल चतुर्दशी

व्रत की अवधि - 5 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक श्रावण शुक्ल चतुर्दशी के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथाय नम ।

उद्यापन का विधान - भक्तामर विधान
व्रत का फल - शीलवर्धक एव आत्म मलिनता निवारक

★★★

327- रूपातिशय व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 9 तिथि पूर्वक
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सौन्दर्यवर्धक

★★★

328- रूपार्थ वल्लरी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन शुक्ल एकम् या भाद्रपद शुक्ल एकम्
व्रत की अवधि - 9 वर्ष एव 9 माह
व्रत की विधि - आश्विन शुक्ल एकम् से नवमी तक उपवास या एकाशन शक्त्यनुसार करें।
व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अतिशय सौन्दर्यवर्धक

★★★

329- रोटतीज व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल तृतीया
व्रत की अवधि - 3 बारह या चौबीस वर्ष
व्रत की विधि - उपवास या रस त्याग पूर्वक एकाशन शक्तयनुसार।
व्रत की पूजा - रोटतीज व्रत पूजा/चौबीस तीर्थंकर पूजा।
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकर अ सि आ उ सा नम स्वाहा।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - चोरी के परिणाम का अभाव

★★★

330- रोहिणी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - जिस तिथि मे रोहिणी नक्षत्र हो
व्रत की अवधि - 5 वर्ष 9 दिन मे 67 उपवास
व्रत की विधि - रोहिणी नक्षत्र सत्ताइसवे दिन आता है इस तरह सत्ताइसवे दिन उपवास करें।

उत्तम-	81 उपवास
मध्यम-	64 उपवास
जघन्य-	36 उपवास
सामान्य-	27 उपवास

व्रत की पूजा - रोहिणीव्रत पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अतिशोक निवारक एव उल्लासवर्धक

जैन व्र वि स पृ - ३३ व्र ति नि पृ -222 व्र क को पृ 539 क्रि को पृ -279 आ ध अ ग्र पृ - 561

331- रौद्रध्यान निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख कृष्ण त्रयोदशी
व्रत की अवधि - 4 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक वैशाख कृष्ण त्रयोदशी उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री धर्मनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्हं श्री धर्मनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - अशुभ चिता निवारक

★★★

332- लब्धिविधान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद माघ चैत्र शुक्ल तिथि मे
व्रत की अवधि - 3 वर्ष
व्रत की विधि - इस व्रत की तीन विधियॉ मिलती है

प्रथम विधि- अमावस्या का एकाशन कर पडवा दोज एव तृतीया का तेला कर चतुर्थी को पारणा करे।

द्वितीय विधि- भाद्रपद माघ एव चैत्रमास मे शुक्ल पडवा एव तीज का उपवास दोयज एव चतुर्थी को पारणा करें इस प्रकार छह वर्ष करें।

तृतीय विधि- भाद्रपद माघ एव चैत्र माह में शुक्ल पडवा एव तीज का एकासन दोज का उपवास चतुर्थी का एकाशन इस प्रकार दो वर्ष मे व्रत पूर्ण करें।

व्रत की पूजा - श्री महावीर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री महावीरस्वामिने नम ।

उद्यापन का विधान - लब्धि विधान
व्रत का फल - शील बुद्धि प्रदाता
जै व्र ति नि पृ-212 जै व्र वि स पृ-54 व्र क को पृ- 560 क्रि को पृ 251

★★★

333- लक्षणपक्ति व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 408 दिन
व्रत की विधि - 204 उपवास एव 204 पारणाएँ एक उपवास एक पारणा क्रम से लगातार करें।
व्रत की पूजा - अरिहत पूजा (देवपूजा)
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - विशिष्ट कोषवर्धक
जै व्र वि स पृ 102

★★★

334- लक्ष्मी मगल व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन कृष्ण त्रयोदशी
व्रत की अवधि - 5 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक त्रयोदशी को प्रोषध पूर्वक उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री सुमतिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अक्षय कोषवर्धक

★★★

335- लाभान्तराय कर्म निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण दशमी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक ज्येष्ठ कृष्ण दशमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री विमलनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं श्री विमलनाथ-जिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - समृद्धिवर्धक

★★★

336- लोकमंगल व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल चतुर्थी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक शुक्ल चतुर्थी का उपवास करे।
व्रत का पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - जीवदया सकल्पवर्धक

★★★

337- वचनगुप्ति व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - आषाढ शुक्ल प्रतिपदा से कार्तिक की अष्टाह्निका तक लगातार एक वस्तु का त्याग करके एकाशन करें।

व्रत की पूजा - श्री अजितनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अजितनाथतीर्थंकराय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ वचन परिहारक

★★★

338- वनस्पतिकाय निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल दशमी
व्रत की अवधि - पाँच वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास
व्रत की पूजा - शीतलनाथ भगवान
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शीतलनाथ तीर्थंकराय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी
व्रत का फल - वनस्पति पर्याय अभावकर्ता

★★★

339. वर्धमान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल द्वितीया
व्रत की अवधि - 5 वर्ष उत्कृष्ट 5 माह मध्यम 5 दिन जघन्य शक्त्यानुसार उपवास/एकासन करें।
व्रत की विधि - द्वितीया से षष्ठी तक पॉच दिन
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - उत्तरोत्तर चारित्र वर्धक

★★★

340- वस्तु कल्याण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी अष्टाह्निका की अष्टमी

व्रत की अवधि - 8 वर्ष

व्रत की विधि - अष्टमी को एक वस्तु खाकर एकाशन करें एव एक माला करें। नवमी को दो वस्तु से एकासन एव 2 माला दशमी को तीन वस्तु खाकर णमोकार मन्त्र की 4-4 माला फेरें। त्रयोदशी चतुर्दशी और पूर्णिमा को भी क्रमश माला 3 2, 1 और खाने के पदार्थ भी क्रमश घटाते जायें। प्रतिपदा को पूर्वानुसार एकाशन करें।

व्रत की पूजा - देवपूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अष्टोत्तरसहस्रनामसहितश्रीजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - सहस्रनाम विधान

व्रत का फल - मुनिनिदा एव उपसर्ग कृत दोष निवारक

★★★

341- वसुधा भूषण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा

व्रत की अवधि - 4 माह मे 5 पूर्णिमा

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्ह अर्हत्सिद्धाचार्यो उपाध्याय-सर्व साधुभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - उत्कृष्ट पद दायक

★★★

342- वात्सल्यांग व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल सप्तमी
व्रत की अवधि - 8 वर्ष
व्रत की विधि - कार्तिक शुक्ल सप्तमी के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - सोलहकारण पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं वात्सल्यसम्यग्दर्शनांगाय नम ।
उद्यापन का विधान - सोलहकारण विधान
व्रत का फल - करुणा बुद्धिवर्धक

★★★

343- वायुकाय निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल नवमी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक चैत्र शुक्ल नवमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्ली अर्हं श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - वायुकाय अभावकारक

★★★

344- विनय व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक ज्येष्ठ कृष्ण द्वितीया को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री सुमतिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुमतिनाथ- जिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अहकार निवारक

***

345- विनय मिथ्यात्व निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल चतुर्दशी
व्रत की अवधि - पॉच वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करे।
व्रत की पूजा - नव देवता
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्सिद्धावार्योपाध्याय सर्वसाधु-जिन धर्म-जिनागम-जिनचैत्य- चैत्यालयेभ्यो नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - जिनशासन बहुमान सकल्प वर्धक

346- विनय सम्पन्नता व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 7 दिन (चतुर्दशी तक)(16वर्ष)
व्रत की विधि - व्रत के दिन एकाशन करें।
व्रत की पूजा - देव पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनायै नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अहकार निवारक

***

347- विषयानदनिवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल एकादशी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक एकादशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिन धर्म- जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ विचार निग्रहकारक

★★★

348- विद्यामडूक व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक शुक्ल पञ्चमी का उपवास करे।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अज्ञान दशानिवारक

★★★

349- विपरीत नय निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र(दिनभर में 7 माला)

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - नयाभाष अभावकर्ता

★ ★ ★

350- विपरीतमिथ्यात्व निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल त्रयोदशी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक वैशाख शुक्ल त्रयोदशी को उपवास पूर्वक करें
व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिन धर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्या नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - खोटी बुद्धि का अभाव

★ ★ ★

351- विमानपक्ति व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 697 दिन
व्रत की विधि - 1 तेला 63 बेला और 252 उपवास नथा पारणा 1-63-252 कुल 316 लगातार करें। व्रत के प्रारम्भ में 1 तेला करे फिर 1 पारणा कर व्रत आरम्भ करे। प्रथम स्वर्ग के प्रथम पटल की बेला 1 पारणा 1 इसके चारो ओर चारों दिशाओ में अनेक श्रेणीबद्ध जिनालय हैं उन सम्बन्धी चार दिशा के उपवास 4 पारणा 4 । इस प्रकार एक पटल सम्बन्धी बेला 1 उपवास

4 पारणा 5 हुए। इसी क्रम में 63 पटल के बेला 63, उपवास 252 पारणा 316 होत हैं इसमें व्रतारम्भ का तेला एक पारणा एक कुल 381 उपवास 316 पारणा हुए।

व्रत की पूजा - अकृत्रिम चैत्यालय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री त्रिलोकसम्बन्धी-असख्यात-जिन चैत्यालयेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - एक भवावतार स्वर्गादि ऋद्धि प्रदाता
ह पु पृ 268 जै व्र वि स पृ 114 क्रि को पृ 286

★★★

352- वीर्यान्तराय निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी
व्रत की अवधि - 13 तिथि पूर्वक
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - आत्म शक्तिवर्धक

★★★

353- वीर्याचार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक आषाढ शुक्ल अष्टमी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री नेमिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - आचार्य गुण प्राप्ति

★★★

354- वीरशासन जयन्ती व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण कृष्ण प्रतिपदा
व्रत की अवधि - जीवन पर्यन्त/शक्त्यनुसार
व्रत की विधि - उपवास पूर्वक
व्रत की पूजा - श्री महावीर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्ली अर्हं श्री महावीराय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - दिव्य उपदेश प्रदायक

जै व्र वि स पृ 104 आ ध अ ग्र पृ - 562

★★★

355- वृश्चिक सक्रमण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक मास की वृश्चिक सक्रमण तिथि
व्रत की अवधि - 12 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री चन्द्रप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ ग्रहदशा नाशक

★★★

356- वृष संक्रमण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैसाख मास की वृषभ सक्रमण तिथि
व्रत की अवधि - 12 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री अजितनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ ग्रहदशा नाशक

★★★

357- वेदनीय कर्म निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल एकादशी
व्रत की अवधि - 2 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक एकादशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सम्भवनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री सम्भवनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - असाता निवारक

★★★

358- वैक्रियक शरीर निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - फाल्गुन शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 4 माह 8 दिन (9 तिथि पूर्वक)
व्रत की विधि - प्रत्येक पञ्चमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री मल्लिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्ली अर्हं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - अशुभ वैक्रियक शरीरनिवारक

★★★

359- व्यवहारनय व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी

व्रत की अवधि - 4 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक ज्येष्ठ कृष्ण सप्तमी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्रेयासनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री श्रेयासनाथ-जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - नय सापेक्षताकारक

★★★

360- श्वेत पञ्चमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कार्तिक या फाल्गुन किसी एक माह की शुक्ल पञ्चमी

व्रत की अवधि - 5 वर्ष

व्रत की विधि - प्रतिमाह शुक्लपक्ष पञ्चमी के दिन उपवास पूर्वक 65 उपवास करे।

व्रत की पूजा - श्री सुमतिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - परिणाम विशुद्धिकारक

जै व्र वि स पृ - 88 आ ध अ ग्र पृ - 563

★★★

361- शरीर पर्याप्ति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख कृष्ण चतुर्थी

व्रत की अवधि - 6 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक वैशाख कृष्ण चतुर्थी को उपवास करें।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधुभ्यो नमः।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - शरीर परमाणु अभावकारक

★★★

362- शातकुम्भ व्रत (उत्कृष्ठ)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 557 दिन (496 उपवास एव 61 पारणाएँ लगातार)

व्रत की विधि - उपवास 16 पारणा 1 उपवास 15 पारणा 1
उपवास 14 पारण 1 उपवास 13 पारणा 1
उपवास 12 पारणा 1 उपवास 11 पारणा 1
उपवास10 पारणा 1 उपवास 9 पारणा 1
उपवास 8 पारणा 1 उपवास 7 पारणा 1
उपवास 6 पारणा 1 उपवास 5 पारणा 1

उपवास 4 पारणा 1 उपवास 3 पारणा 1
उपवास 2 पारणा 1 उपवास 1 पारणा 1
इसी क्रम में उपवास 15 पारणा 1 उपवास
14 पारणा 1 करते हुए उपवास 2 पारणा
1 उपवास 1 पारणा 1
ऐसी ही तीन आवृत्ति पूर्वक उपवास एव पारणा
करें।

व्रत की पूजा - श्री मल्लिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

विशेष - जो मनुष्य इस विधि के करने में असमर्थ है- वे शक्त्यनुसार आत्महित में प्रवृत्त रहते हुए उपवास बेला तेला के द्वारा भी उपवासो की सख्या पूरी कर सकते है।

व्रत का फल - परिणाम विशुद्धि कारक

जै व्र वि स पृ 56 आ ध अ ग्र पृ 563 ह पु पृ 269

★ ★ ★

363- शातकुम्भ व्रत (मध्यम)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 186 दिन (153 उपवास और 33 पारणाएँ लगातार)

व्रत की विधि - उपवास 9 पारणा 1 उपवास 8 पारणा 1
उपवास 7 पारणा 1 उपवास 6 पारणा 1

उपवास 5 पारणा 1, उपवास 4 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास1 पारणा 1 तथा उपवास 8 पारणा 1
उपवास 7 पारणा 1 उपवास 6 पारणा 1
उपवास 5 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास 1 पारणा 1 की तीन आवृत्ति
पूर्वक उपवास एव पारणा करें।

व्रत की पूजा - श्री मल्लिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - परिणाम विशुद्धि कारक

ह पु पृ 269

★ ★ ★

364- शातकुम्भ व्रत (जघन्य)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 62 दिन (45 उपवास, 17 पारणाएँ लगातार)

व्रत की विधि - उपवास 5 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास1 पारणा 1, तथा उपवास 4 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास 1 पारणा 1 की तीन आवृत्ति
पूर्वक उपवास एव पारणा करें।

व्रत की पूजा - श्री मल्लिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं श्री मल्लिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - परिणाम विशुद्धिकारक

ह पु पृ 269 आ ध अ प्र पृ 563

★★★

365- शान्तिनाथ तीर्थकर, चक्रवर्ती कामदेव व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठकृष्ण चतुर्दशी

व्रत की अवधि - उत्कृष्ठ 5 वर्ष मध्यम 5 माह

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री शान्तिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्ह श्री शान्तिनाथ तीर्थकराय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - सर्वोत्कृष्ट पद प्रदायक

★★★

366- श्रावण द्वादशी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल द्वादशी

व्रत की अवधि - 12 वर्ष

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री वासुपूज्य पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - कफरूपता निवारक
जै व्र वि स पृ - 88 आ ध अ ग्र पृ - 562
जै व्र ति नि पृ - 191 क्रि को पृ - 256

★★★

367- शिवकुमार बेला व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की सप्तमी
व्रत की अवधि - 16 माह
व्रत की विधि - 64 बेला एव 64 पारणाएँ-
प्रत्येक माह की सप्तमी-अष्टमी एव त्रयोदशी चतुर्दशी के बेला नवमी एव पूर्णिमा को पारणा करे। यदि शक्ति विशेष हो तो एक बेला एक पारणा क्रम से एक हजार वर्ष तक करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशति- तीर्थंकरेभ्यो नम।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
विशेष - यह व्रत विदेह क्षेत्र की अपेक्षा वर्णित है।
व्रत का फल - त्यागभाव वृद्धिकारक
जै व्र वि स पृ - 111 आ ध अ ग्र पृ - 562
क्रि को पृ - 277

★★★

368- शील व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल षष्ठी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - उपवासपूर्वक
व्रत की पूजा - श्री अभिनन्दननाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान – पञ्चकल्याणक विधान

विशेष – अभिनन्दननाथ भगवान का मोक्ष कल्याणक का व्रत है।

व्रत का फल – शील भावनावर्धक

जे व्र वि स पृ 89 आ ध अ ग्र पृ 562 क्रि को पृ 260 जे व्र ति नि पृ 261

★ ★ ★

369- शील व्रत

व्रतारम्भ तिथि – किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि – 1 वर्ष मे 360 दिन

व्रत की विधि – एक उपवास एक पारणा पूर्वक 180 उपवास 180 पारणा करे।

व्रत की पूजा – सोलहकारण पूजा

व्रत का जापमन्त्र – ॐ ह्रीं समस्तशीलव्रतमण्डिताय श्री जिनाय नम ।

उद्यापन का विधान – सोलहकारण विधान

4 प्रकार की स्त्री- देवी मनुष्यणी तिर्यंचणी एव अचेतन 5 इन्द्रिय। 3-मनवचन काय 3-कृतकारित अनुमोदना 5X4X3X3+ 180 मन वचन काय की दृष्टि से 88 उपवास होते हैं लघुशील कल्याण नामक व्रत में 18 उपवास 18 पारणा के क्रम से

36 दिन में पूर्ण होता है इसकी शुरूआत मार्गशीर्ष महीने मे करे। व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करें।

व्रत का फल - शील भावनावर्धक

★★★

370- शीलकल्याणक व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - तीन सौ साठ दिन

व्रत की विधि - 180 उपवास एव 180 पारणाएँ लगातार। उपवास 1 पारणा 1 उपवास 1 पारणा 1 अर्थात् एकान्तर पूर्वक करें।

व्रत की पूजा - श्री शान्तिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्री क्ली अर्ह श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - शान्तिनाथ विधान

व्रत का फल - शील भावनावर्धक

जै व्र वि स पृ 68 आ ध अ ग्र पृ - 562
क्रि को पृ 259 ह पु पृ 273

★★★

371- शीलसप्तमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल सप्तमी

व्रत की अवधि - 7 वर्ष

व्रत की विधि - उपवास पूर्वक करें।

व्रत की पूजा - श्री नेमिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - नवकोटि ब्रह्मचर्य सकल्पवर्धक
जै व्र वि स पृ 104

★★★

372- शुक्लध्यान प्राप्ति व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख कृष्ण अमावस्या
व्रत की अवधि - 4 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक वैशाख कृष्ण अमावस्या को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री नमिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री नमिनाथ-जिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - सम्पूर्ण कर्म क्षयकारक

★★★

373- शुक्ललेश्या निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 6 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक वैशाख शुक्ल पञ्चमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - रत्नत्रय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - उत्कृष्ट परिणाम प्रदाता

★★★

374- शुक्रवार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण महीने का शुक्रवार
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषधपूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री पार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सुख समृद्धिदायक

★★★

375- श्रुतकल्याणक व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 25 दिन
व्रत की विधि - प्रथम पाँच दिन के पॉच उपवास दूसरे पाँच दिन के कांजिक आहार पूर्वक एकाशन, अगले पॉच दिन एकाशन अगले पाँच दिन रुक्ष आहार एव अन्तिम पाँच दिन मुनिवृत्ति से नीरस आहार करें।
व्रत की पूजा - सरस्वती पूजा
व्रन का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भववाग्वादिनी-सरस्वत्यै नम।
उद्यापन का विधान - श्रुतस्कन्ध विधान
व्रत का फल - बुद्धि विकासकारक

जै व्र वि स पृ - 69 आ ध अ प्र पृ - 563

★★★

376- श्रुतपञ्चमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - पॉच वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करे।
व्रत की पूजा - सरस्वती पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री जिनमुखोद्भूतवस्याद्वाद-नय-गर्भित द्वादशाग- श्रुतज्ञानाय नम ।
उद्यापन का विधान - श्रुतस्कन्ध विधान
व्रत का फल - ज्ञानवर्धक

जै व्र ति स पृ 101 आ ध अ ग्र पृ 562
व्र क को पृ 383

★★★

377- श्रुतस्कन्ध व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद कृष्ण पतिपदा
व्रत की अवधि - उत्तम मध्यम जघन्य की अपेक्षा क्रमश बत्तीस दिन बीस दिन सोलह दिन।
व्रत की विधि - उत्तम मध्यम जघन्य की अपेक्षा इस व्रत की तीन विधि है

उत्तम विधि- भाद्रपद कृष्ण एकम् से आश्विन कृष्ण एकम एक 32 दिन में 16 उपवास एव 16 पारणा।

मध्यम विधि- भाद्रपद मे बीम दिन मे 10 उपवास एव 10 पारणाऍ।

जघन्य विधि- सोलह दिन मे 8 उपवास एव 8 पारणाएँ।

व्रत की पूजा - सरस्वती पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूत-स्याद्वाद-नयगर्भित द्वादशागश्रुतज्ञानाय नम ।
उद्यापन का विधान - श्रुतस्कन्ध विधान
व्रत का फल - तीक्ष्णबुद्धि प्रदायक

जै व्र वि स पृ - 70-71 आ ध अ ग्र पृ 562
क्रि को पृ - 261

★ ★ ★

378- श्रुतस्कन्ध व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल चतुर्थी
व्रत की अवधि - 14 वर्ष
व्रत की विधि - कार्तिकशुक्ल 4 के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर एव श्रुतस्कन्ध पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - श्रुतस्कन्ध विधान
व्रत का फल - स्वर दोष निवारक

★ ★ ★

379- श्रुतज्ञान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - 6 वर्ष 7 माह
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास (158 उपवास 158 पारणाएँ) मतिज्ञान के 28 प्रतिपदा के 28 उपवास 28पारणा 11 अगों के 11 एकादशी के 11 उपवास 11 पारणा, परिकर्म के 2 दूज के 2 उपवास 2 पारणा, 88 सूत्रों के

88 अष्टमी के 88 उपवास 88 पारणा प्रथमानुयोग का नवमी का 1 उपवास 1 पारणा, 14 पूर्वों के 14 चतुर्दशी के 14 उपवास 14 पारणा 5 चूलिका के 5 पञ्चमी के 5 उपवास 5 पारणा, अवधिज्ञान के 6 षष्टमी के 6 उपवास 6 पारणा मन पर्ययज्ञान के 2 चतुर्थी के 2 उपवास 2 पारणा केवलज्ञान के एक दशमी का 1 उपवास 1 पारणा

व्रत की पूजा - सरस्वती पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूतस्याद्वाद-नय-गर्भित-द्वादशाग- श्रुतज्ञानाय नम ।

उद्यापन का विधान - श्रुतस्कन्ध विधान

व्रत का फल - विशिष्ट ज्ञान प्राप्ति

विशेष - यह व्रत जघन्य की अपेक्षा 12 वर्ष 8 माह में करने का विधान मिलता है।

जै व्र वि स पृ 120 71 आ ध अ ग्र पृ 562 क्रि को पृ 271 सु त पृ 158

★ ★ ★

380- श्रुतज्ञान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की शुक्ल द्वादशी

व्रत की अवधि - 12 वर्ष 8 माह अर्थात् 152 माह

व्रत की विधि - कुल 148 उपवास

प्रतिपदा के 16 तृतीया के 3 चतुर्थी के 4 पचमी के 5 षष्ठी के 6 सप्तमी के 7 अष्टमी के 8 नवमी के 9, दशमी के 10

		एकादशी के 11 द्वादशी के 12, त्रयोदशी के 13 चतुर्दशी के 14, पूर्णिमा के 15,अमावस्या के 15
व्रत की पूजा	-	सरस्वती पूजा
व्रत का जापमन्त्र	-	ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञानाय नम ।
उद्यापन का विधान	-	श्रुतस्कध विधान
व्रत का फल	-	धर्मोपदेश प्रभावनावर्धक

***

381- श्रुतावतार व्रत

व्रतारम्भ तिथि	-	ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि	-	12 वर्ष
व्रत की विधि	-	व्रत के दिन उपवास करे।
व्रत की पूजा	-	पञ्चपरमेष्ठी एव जिनवाणी पूजा
व्रत का जापमन्त्र	-	ॐ हा ह्रीं हू ह्रौं ह अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत-विद्यायै नम ।
उद्यापन का विधान	-	श्रुतस्कध विधान
व्रत का फल	-	जिनशासन प्रभावक

***

382- श्रुति कल्याणक व्रत

व्रतारम्भ तिथि	-	आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि	-	4 माह
व्रत की विधि	-	प्रत्येक अष्टमी एव चतुर्दशी को उपवास करें।
व्रत की पूजा	-	श्री सरस्वती पूजा
व्रत का जापमन्त्र	-	ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भववाग्वादिनीसरस्वत्यै नम ।

उद्यापन का विधान - श्रुतस्कन्ध विधान
व्रत का फल - धर्मोपदेश प्रभावनावर्धक

★★★

383- शुद्धदशमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल दशमी
व्रत की अवधि - 4 माह 8 दिन
व्रत की विधि - प्रत्येक दशमी को उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री पार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अह श्री पार्श्वनाथाय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - शरीरिक विकृतिनिवारक

★★★

384- शोककर्म निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र कृष्ण अष्टमी
व्रत की अवधि - 9 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी को प्रोषधपूर्वक उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री अरनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री अरनाथ-तीर्थंकराय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अतिसक्लेश परिणाम नाशक

★★★

385- षड्कर्म व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल षष्ठी
व्रत की अवधि - 6 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक षष्ठी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री पद्मप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पद्मप्रभतीर्थंकराय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - श्रावकोचित सस्कारवर्धक

★★★

386- षट्रसी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कई भी तिथि
व्रत की अवधि - छह माह
व्रत की विधि - प्रथम माह में दूध दूसरे माह में दही तीसरे माह में घी, चौथे माह में तेल पॉत्त्वे माह में नमक एव छठवें माह में मीठा का त्याग कर भोजन करें।
व्रत की पूजा - चौबीसतीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत-का फल - इन्द्रिय इच्छा निग्रहकारक

जै व्र वि स पृ - 43 आ ध अ ग्र पृ 563
क्रि को पृ - 253

★★★

387- षष्ठी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल षष्ठी
व्रत की अवधि - 6 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री नेमिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सौभाग्यवर्धक

★★★

388- षोडश क्रिया व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 8 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी को शक्त्यनुसार उपवास या एकाशन करें।
व्रत की पू - श्री शान्तिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथतीर्थंकराय नम ।
उद्यापन का विधान - शान्तिविधान
व्रत का फल - सयम सस्कारवर्धक

जै व्र वि स पृ 122 आ ध अ ग्र पृ - 563
व्र ति नि पृ - 36

★★★

389- स्वयभूस्तोत्र व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी तीर्थंकर की कोई भी कल्याणक तिथि

व्रत की अवधि - 143 उपवास पूर्वक 286 दिन

व्रत की विधि - **उत्कृष्ठ**- 1 उपवास 1 पारणा

मध्यम- 1 उपवास 2 पारणा

जघन्य- शक्त्यनुसार

व्रत की पूजा - तीर्थंकर के काव्यानुसार

व्रत का जापमन्त्र - तीर्थंकर के व्रतानुसार

उद्यापन का विधान - पचकल्याणक विधान

व्रत का फल - परिणाम विशुद्धिकारक

विशेष - ऋषभनाथ से महावीर तीर्थंकर पर्यंत जितने पदों में जिन तीर्थंकर की स्तुति की गई है उतने व्रत करते हुए पूर्ण करें।

जै व्र वि स पृ 122 आ ध अ ग्र पृ - 563
व्र ति नि पृ - 36

★★★

390- सकल श्रेयोनिधि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह में शुक्ल पक्ष का प्रथम रविवार

व्रत की अवधि - 9 रविवार

व्रत की विधि - प्रत्येक रविवार को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री पद्मप्रभ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं पद्मप्रभ-जिनेन्द्राय नमः।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - उत्कृष्ट पददायक

★ ★ ★

391- सकल सौभाग्य व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन शुक्ल चतुर्दशी

व्रत की अवधि - 8 वर्ष

व्रत की विधि - प्रत्येक शुक्ल चतुर्दशी के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।

व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - उत्कृष्ट पुण्यवर्धक

★★★

392- सकटहरण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी

व्रत की अवधि - 3 वर्ष

व्रत की विधि - भाद्र माघ और चैत्र माह की अपेक्षा एक वर्ष में तीन बार आता है। शुक्ल त्रयोदशी से प्रारम्भ कर पूर्णिमा तक करें।

व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा सर्वशान्ति कुरु कुरु ह्रीं नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - भूतप्रेत बाधा निवारक

जै व्र वि स पृ - 42 आ ध ज ग्र पृ - 563

★★★

393- सत्यवचन महाव्रत व्रत

व्रतारम्भ तिथि - माघ कृष्ण षष्ठी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक षष्ठी का उपवास
व्रत की पूजा - श्री पद्मप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - वाचनिक शक्तिवर्धक

★★★

394- सप्तर्द्धि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी को प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सुपार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - ऋद्धि सिद्धि प्रदायक

★★★

395- सप्तपरमस्थान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - 7 वर्ष

व्रत की विधि - प्रतिवर्ष श्रावण शुक्ल प्रतिपदा से सप्तमी पर्यन्त सात दिन उपवास करें। शक्ति के अभाव में जल दूध या कोई फल लेकर व्रत करें।

व्रत की पूजा - सप्तपरमस्थान पूजा

व्रत का जापमन्त्र - सातों दिन अलग-अलग मन्त्र का जाप करें।

1 ॐ ह्रीं अर्हं सज्जाति-परमस्थान-प्राप्तये श्रीअभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय नम ।

2 ॐ ह्री अर्हं सद्गृहस्थस्थानप्राप्तये श्रीचन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय नम ।

3 ॐ ह्रीं अर्हं परिव्राज्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय नम ।

4 ॐ ह्री अर्हं सुरेन्द्रपरमस्थानप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नम ।

5 ॐ ह्री अर्हं साम्राज्यपरमस्थानप्राप्तये श्रीशीतलनाथ-जिनेन्द्राय नम ।

6 ॐ ह्री अर्हं अर्हन्तपरमस्थानप्राप्तये श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्राय नम ।

7 ॐ ह्री अर्हं निर्वाणपरमस्थानप्राप्तये श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - उत्तम पद प्राप्ति

जै व्र वि स पृ - 51 आ ध अ ग्र पृ - 563
जैन व्र ति नि पृ - 230 ह पु पृ - 271

★★★

396- सप्तसप्तम तपोव्रत (तपोनिधि व्रत)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 56 दिन

व्रत की विधि - बृहद और लघु के भेद से इस व्रत की दो विधियाँ हैं-

1 **बृहद विधि**- व्रत के प्रथम दिन उपवास दूसरे दिन से एक ग्रास दो ग्रास आदि एक-एक ग्रास वृद्धि क्रम से सातवें दिन सात ग्रास पूर्वक एकाशन करें। तत्पश्चात् आठवें दिन उपवास कर पुन पूर्ववत् क्रम से एक-एक ग्रास की वृद्धि करते हुए ग्रास ग्रहण कर एकाशन करें। इस क्रम में ऐसा 7 बार करें।

2 **लघु विधि**- उपवास के स्थान पर एकाशन करें शेष विधि उपरोक्तानुसार ही है।

व्रत की पूजा - कलिकुण्डपार्श्वनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथाय सर्वारिष्ट शान्ति कुरु कुरु।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

विशेष - सप्तसप्तमतपो विधि के अनुसार ही अष्टअष्टमतपो विधि, नवनवमतपो विधि, दशदशमतपो व्रत, एकादश- एकादशतपो विधि आदि के क्रम से द्वात्रिंशत्द्वा- त्रिंशत्तपो विधि व्रत भी कर सकते हैं।

व्रत का फल - परिणाम विशुद्धि कारक

ह पु पृ - 271 आ ध अ ग्र पृ 553

★★★

397- सम्यक्त्व चतुर्विंशति व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 48 दिन
व्रत की विधि - एक उपवास एक पारणा के क्रम से 24 उपवास 24 पारणा लगातार करे।
व्रत की पूजा - 24 तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री वृषभादिचतुर्विंशति-जिनेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - तीन चौबीसी विधान
व्रत का फल - समीचीन सम्यक्त्व वर्धक

★★★

398- सम्यक्मिथ्यात्व(मिश्र)गुणस्थान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक प्रतिपदा का उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - दर्शन मोहनीय तीक्ष्णकारक

★★★

399- समवसरण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 1 वर्ष
व्रत की विधि - एक वर्ष पर्यन्त प्रत्येक चतुर्दशी को उपवास करते हुए 24 उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री मण्डप पूजा एव व्रत सम्बन्धी तीर्थंकर की पूजा करें।

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री जगदापद्विनाशनाय-सकलगुण-करण्डाय श्रीसर्वज्ञाय अर्हत्परमेष्ठिने नम ।

उद्यापन का विधान - समवसरण विधान

व्रत का फल - अतिशय पुण्य फलदायक

जै व्र वि स पृ - 85 ध अ व्र पृ - 564
जै व्र वि पृ - 100 क्रि को पृ - 255

★★★

400- समवशरण मंगल व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल का प्रथम शुक्रवार

व्रत की अवधि - 5 शुक्रवार

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा चौबीस तीर्थंकर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशति जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - अतिशय पुण्य फलदायक

★★★

401- समकित चौबीसी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - माघ कृष्ण चतुर्दशी

व्रत की अवधि - 48 दिन

व्रत की विधि - एकाशन पूर्वक

व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिचतु-र्विंशति-जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - तीन चौबीसी विधान
व्रत का फल - तीर्थंकर पद प्रदायक
जै व्र वि स पृ - 49

★★★

402- समाधि विधान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष या 5 माह
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करे
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी/गणधर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रु ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - आत्मशक्तिवर्धक

★★★

403- सरस्वती व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 1 वर्ष
व्रत की विधि - 120 उपवास प्रत्येक पञ्चमी अष्टमी एकादशी चतुर्दशी प्रतिपदा का उपवास करें।
व्रत की पूजा - सरस्वती पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं स्याद्वादवाग्वादिनीसरस्वत्यै नम ।
उद्यापन का विधान - श्रुतस्कन्ध विधान
व्रत का फल - उत्कृष्ट ज्ञान प्राप्ति कारक

★★★

404- सर्वथाकृत्य व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आश्विन माह का प्रथम रविवार
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक रविवार
व्रत की पूजा - श्री चन्द्रप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्ली अर्हं श्री चन्द्रप्रभ-जिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक व्रत
व्रत का फल - उत्कृष्ट धर्माचरणवर्धक

★★★

405- सर्वकामित व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल का कोई भी शुक्रवार
व्रत की अवधि - सात शुक्रवार
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री सुपार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - मनोवाछित फल प्रदाता

★★★

406- सर्वतोभद्र व्रत(वृहद्)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 245 दिन
व्रत की विधि - 196 उपवास और 49 पारणा लगातार
उपवास 1 पारणा 1, उपवास 2 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1

उपवास 5 पारणा 1 उपवास 6 पारणा 1
उपवास 7 पारणा 1
ऐसी ही 7 आवृत्ति में 196 उपवास एव 49 पारणाएँ करें।

व्रत की पूजा - सिद्धपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तानन्त-परमसिद्धेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - परिणाम विशुद्धि एव सयमवर्धक
जै व्र वि स पृ 60 आ ध अ ग्र पृ 564
ह पु पृ 257 सु त पृ 159

★★★

407- सर्वतोभद्र व्रत (लघु)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - सौ दिन
व्रत की विधि - 75 उपवास एव 25 पारणा लगातार
उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1
उपवास 5 पारणा उपवास 4 पारणा 4
उपवास 5 पारणा 1, उपवास 1 पारणा 1
उपवास 2 पारणा 1 उपवास 3 पारणा 1
उपवास 2 पारणा 1, उपवास 3 पारणा 1
उपवास 4 पारणा 1 उपवास 5 पारणा 1
उपवास 1 पारणा 1, उपवास 5 पारणा 1
उपवास 1 पारणा 1, उपवास 2 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1, उपवास 4 पारणा 1

उपवास 3 पारणा 1, उपवास 4 पारणा 1
उपवास 5 पारणा 1, उपवास 1 पारणा 1
उपवास 2 पारणा 1

व्रत की पूजा - सिद्ध पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तानन्त-परमसिद्धेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान
व्रत का फल - परिणाम विशुद्धि एव सेयमवर्धक

सु त पृ 159 आ ध अ ग्र पृ 564

★★★

408- सर्वदोष परिहार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 9 तिथि (प्रत्येक माह में शुक्ल पक्ष की अष्टमी)
व्रत की विधि - व्रत के दिन एक अन्न से एकासन
व्रत की पूजा - श्री पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ मान्यता निग्रहकारक

★★★

409- सर्व सम्पतकर व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 9 तिथि पूर्वक
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिचतु-
विंशति- तीर्थंकरेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - अनन्त चतुष्टयदायक

★★★

410- सर्वार्थसिद्धि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल अष्टमी

व्रत की अवधि - 5 वर्ष

व्रत की विधि - अष्टमी से पूर्णमासी तक 8 उपवास एव
पारणा करके 10 दिन में किया जाता है।

व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्ह श्री आदिनाथ-जिनेन्द्राय
नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - मनोवाछित कार्य सिद्धिकारक

जै व्र वि स पृ 89 आ ध अ ग्र पृ - 565
जै व्र ति नि पृ 260 क्रि को पृ 261

★★★

411- सहस्रनाम व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की चतुर्दशी

व्रत की अवधि - 1008 या 11 दिन

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें, व्रत अष्टमी
एव चतुर्दशी के दिन करें। सहस्रनाम का
पाठ अवश्य करें।

व्रत की पूजा - सहस्रनाम पूजा

व्रत का जापमन्त्र - 1 ॐ ह्रीं श्री मदादिशत-नामधारक-श्रीजिनेन्द्राय नम। (100 दिन तक)
2 ॐ ह्रीं श्री दिव्यादिशत-नामधारक-श्रीजिनेन्द्राय नम। (100 दिन तक)
3 ॐ ह्रीं श्री स्थविष्ठादिशत-नामधारक-श्रीजिनेन्द्राय नम। (100 दिन तक)
4 ॐ ह्रीं श्री महाशोकध्वजादिशत-नामधारक-श्रीजिनेन्द्राय नम। (100 दिन तक)
5 ॐ ह्री श्री वृक्षादिशत-नामधारक-श्रीजिनेन्द्राय नम। (100 दिन तक)
6 ॐ ह्रीं श्री महामुन्यादिशत-नामधारक-श्रीजिनेन्द्राय नम। (100 दिन तक)
7 ॐ ह्रीं श्री असस्कृतादिशत-नामधारक-श्रीजिनेन्द्राय नम। (100 दिन तक)
8 ॐ ह्रीं श्री वृहदादिशत-नामधारक-श्रीजिनेन्द्राय नम। (100 दिन तक)
9 ॐ ह्रीं श्री त्रिकालदर्श्यादिशत-नामधारक-श्रीजिनेन्द्राय नम। (100 दिन तक)
10 ॐ ह्रीं श्री दिग्वासाद्यष्टाधिकशत-नामधारक-श्री जिनेन्द्राय नम। (108 दिन तक)

समुच्चय जापमन्त्र- ॐ ह्री श्रीमदष्टाधिकसहस्र-नामधारक-जिनेन्द्राय नम। (11 दिन तक)

उद्यापन का विधान - सहस्रनाम विधान

व्रत का फल - सद्गुण प्रदायक

जै व्र वि पृ - 28 व्र क को पृ - 683

★★★

412- सामायिक चारित्र व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल त्रयोदशी
व्रत की अवधि - 4 माह (9तिथि पूर्वक)
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रा ह्रीं ह्रु ह्रौं ह्र अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व-साधुभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - समता परिणामवर्धक

★★★

413- सारस्वत व्रत

व्रतारम्भ तिथि - मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी या पौष कृष्ण दशमी
व्रत की अवधि 5 दशमी पूर्वक
व्रत की विधि - प्रत्येक कृष्ण दशमी के दिन प्रोषध पृर्वक उपवास करे।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जाप मन्त्र - ॐ ह्रीं अर्ह अ सि आ उ सा पञ्च-कल्याणक-सहित जिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - स्मरण शक्तिवर्धक

★★★

414- सासादन गुणस्थान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण 30
व्रत की अवधि - 9 तिथि पूर्वक
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री अजितनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - दर्शन मोहनीय कर्म क्षयकारक

***

415- सिद्ध व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल का प्रथम रविवार

व्रत की अवधि - 3 वर्ष

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री अर मल्लि, मुनिसुव्रतनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हं श्री अरमल्लिमुनिसुव्रत-रत्नत्रय-तीर्थंकरेभ्यो नमः।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - कार्यसिद्धिकारक

***

416- सिद्ध कांजिका व्रत

व्रतारम्भ तिथि - अष्टाह्निका की अष्टमी

व्रत की अवधि - 4 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी को काजीआहार पूर्वक एकाशन करें।

व्रत की पूजा - श्री सिद्ध पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण-सिद्धपरमेष्ठिने नमः।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - कार्यसिद्धिकारक

***

417- सिद्धचक्र व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कार्तिक व फाल्गुन मे
व्रत की अवधि - उत्कृष्ट 12वर्ष मध्यम 6 वर्ष जघन्य 3 वर्ष
व्रत की विधि - अष्टमी से पूर्णिमा तक लगातार उपवास या एकाशन
व्रत की पूजा - सिद्ध पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा सिद्धचक्राधिपतये नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - सिद्ध गुणदायक

* * *

418- सिह निष्क्रीड़ित व्रत (उत्कृष्ट)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 557 दिन
व्रत की विधि - 496 उपवास और 61 पारणाएँ लगातार
उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास 1 पारणा 1 उपवास 3 पारणा 1
उपवास 2 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 5 पारणा 1
उपवास 4 पारणा 1 उपवास 6 पारणा 1
उपवास 5 पारणा 1 उपवास 7 पारणा 1
उपवास 6 पारणा 1 उपवास 8 पारणा 1
उपवास 7 पारणा 1 उपवास 9 पारणा 1
उपवास 8 पारणा 1 उपवास 10 पारणा1

उपवास 9 पारणा 1 उपवास 11 पारणा1
उपवास 10 पारणा 1, उपवास 12 पारणा1
उपवास 11 पारणा 1 उपवास 13 पारणा1
उपवास 12 पारणा 1, उपवास 14 पारणा1
उपवास 13 पारणा 1 उपवास 15 पारणा1
उपवास 14 पारणा 1, उपवास 15 पारणा1
उपवास 16 पारणा 1 उपवास 15 पारणा1
उपवास 14 पारणा 1 उपवास 15 पारणा1
उपवास 13 पारणा 1, उपवास 14 पारणा1
इसी क्रम में कम करते हुए उपवास 3 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1 उपवास 1 पारणा 1 तक करें।

व्रत की पूजा - सिद्ध पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अनाहतपराक्रमाय-सकलकर्म-विमुक्ताय- अनन्तानन्त-सिद्धपरमेष्ठिभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - तप शक्तिवर्धक

ह पु पृ - 263 आ ध अ ग्र पृ - 565 जै व्र ति नि पृ -236 जै व्र वि स पृ -56 सु त पृ -159 क्रि को पृ - 271

★★★

419- सिहनिष्क्रीड़ित व्रत (मध्यम)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि

व्रत की अवधि - 186 दिन

व्रत की विधि - 153 उपवास एव 33 पारणाएँ लगातार
उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास 1 पारणा 1, उपवास 3 पारणा 1
उपवास 2 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 5 पारणा 1
उपवास 4 पारणा 1 उपवास 6 पारणा 1
उपवास 5 पारणा 1 उपवास 7 पारणा 1
उपवास 6 पारणा 1 उपवास 8 पारणा 1
उपवास 7 पारणा 1 उपवास 8 पारणा 1
उपवास 9 पारणा 1 उपवास 8 पारणा 1
उपवास 7 पारणा 1 उपवास 8 पारणा 1
उपवास 6 पारणा 1 उपवास 7 पारणा 1
उपवास 5 पारणा 1 उपवास 6 पारणा 1
उपवास 4 पारणा 1 उपवास 5 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1
उपवास 2 पारणा 1 उपवास 3 पारणा 1
उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास 1 पारणा 1

व्रत की पूजा - सिद्ध पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अनाहतपराक्रमाय-सकलकर्म-विमुक्ताय-अनन्तानन्त परमसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - तप शक्तिवर्धक

★★★

420- सिंह निष्क्रीड़ित व्रत (जघन्य)

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 80 दिन
व्रत की विधि - 60 उपवास एव 20 पारणाएँ लगातार
उपवास 1 पारणा 1, उपवास 2 पारणा 1
उपवास 1 पारणा 1, उपवास 3 पारणा 1
उपवास 2 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 5 पारणा 1
उपवास 4 पारणा 1, उपवास 5 पारणा 1
उपवास 5 पारणा 1, उपवास 4 पारणा 1
उपवास 5 पारणा 1 उपवास 3 पारणा 1
उपवास 4 पारणा 1, उपवास 2 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 1 पारणा 1
उपवास 2 पारणा 1 उपवास 1 पारणा 1
व्रत की पूजा - सिद्ध पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं अनाहतपराक्रमाय-स्कलकर्म-विमुक्ताय- अनन्तानन्त-परमसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - तप शक्तिवर्धक

***

421- सिंह निष्क्रीड़ित भाद्रवन व्रत

व्रताम्भ तिथि - भाद्रपद माह में कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 200 दिन
व्रत की विधि - 175 उपवास एव 25 पारणा लगातार
उपवास 1 पारणा 1, उपवास 2 पारणा 1

उपवास 3 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1
उपवास 5 पारणा 1 उपवास 6 पारणा 1
उपवास 7 पारणा 1 उपवास 8 पारणा 1
उपवास 9 पारणा 1 उपवास 10 पारणा1
उपवास 11 पारणा 1 उपवास 12 पारणा1
उपवास 13 पारणा 1 उपवास 13 पारणा1
उपवास 12 पारणा 1 उपवास 11 पारणा1
उपवास 10 पारणा 1 उपवास 9 पारणा1
उपवास 8 पारणा 1 उपवास 7 पारणा 1
उपवास 6 पारणा 1 उपवास 5 पारणा 1
उपवास 4 पारणा 1 उपवास 3 पारणा 1
उपवास 2 पारणा 1 उपवास 1 पारणा 1

व्रत की पूजा - सिद्ध पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्ह अनाहतपराक्रमाय-सकलकम-विमुक्ताय-अनन्तानन्त-परमसिद्धपरमेष्ठिभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - चौबीस तीर्थकर विधान/ पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - तप शक्ति वर्धक

★★★

422- सिहसक्रमण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण मास की सिह सक्रमण तिथि

व्रत की अवधि - 12 वर्ष

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करे।

व्रत की पूजा - श्रीसुमतिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ गृह दशा नाशक
जै व्र वि स पृ 58 आ ध अ ग्र पृ - 560

★★★

423- सुखकारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की प्रतिपदा
व्रत की अवधि - 4 माह 15 दिन (68 उपवास)
व्रत की विधि - प्रतिपदा का उपवास, दोयज का पारणा तीज का उपवास चौथ का पारणा इसी क्रम से 4 माह 15 दिन करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - दुश्चिता निवारक
जै व्र वि स पृ 84 आ ध अ ग्र पृ 565
क्रि को पृ 254

★★★

424- सुख चिंतामणि

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 41 दिन
व्रत की विधि - उपवास पूर्वक चतुर्दशी के 14 उपवास एकादशी के 11 उपवास अष्टमी के 8

पञ्चमी के 5 तृतीया के 3 इस प्रकार 41 उपवास करें।

व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर एव पार्श्वनाथ तीर्थंकर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं सर्वदुरितविनाशनाय-चतुर्विंशतितीर्थंकराय नम ।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्व सिद्धिकराय-पार्श्वनाथाय नम ।

उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान

व्रत का फल - इष्ट पदार्थ प्रदाता

जैन व्र ति नि पृ 172

★★★

425- सुखसमाधि व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल प्रतिपदा

व्रत की अवधि - 1 माह

व्रत की विधि - उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 2 इसी क्रम में 1 माह तक उपवास एव पारणा करें।

व्रत की पूजा - श्री कुन्थुनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कुन्थुनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चकल्याणक विधान

व्रत का फल - निर्विकल्प सुख प्रदायक

★★★

426- सुखसम्पत्ति (वृहत) व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - 120 दिन
व्रत की विधि - 120 उपवास पूर्वक-
एक पडवा का 1 उपवास दो दोयज के 2 उपवास नीन तीज के 3 उपवास चार चौथ के 4 उपवास पाँच पञ्चमी के 5 उपवास छह षष्ठी के 6 उपवास, सात सप्तमी के 7 उपवास आठ अष्टमी के 8 उपवास नौ नवमी के 9 उपवास, दश दशमी के 10 उपवास ग्यारह एकादशी के 11 उपवास बारह द्वादशी के 12 उपवास तेरह त्रयोदशी के 13 उपवास चौदह चतुर्दशी के 14 उपवास पन्द्रह पूर्णिमा के 15 उपवास करें।
व्रत की पूजा - सिद्धपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हं अनन्तानन्तपरमसिद्धेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - अनन्त सुख प्रदायक

जै व्र वि स पृ 66 67 68 आ ध अ ग्र पृ 565
जै व्र ति नि पृ 262 क्रि को पृ 262 जै व्र वि पृ 77

★★★

427- सुखसम्पत्ति व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की शुक्ल प्रतिपदा
व्रत की अवधि - 120 उपवास

व्रत की विधि - प्रतिपदा का एक दो द्वितीया के दो,तीन तृतीया के तीन 4 चतुर्थी के 4 5 पञ्चमी को 5,6 षष्ठी के 6 7 सप्तमी के 7 8 अष्टमी के 8, 9 नवमी के 9 10 दशमी के 10 11एकादशी के 11, 12 द्वादशी के 12 13त्रयोदशी के 13 14 चतुर्दशी के 14 एव 15 पूर्णमासी के 15 इस प्रकार 120 उपवास करे।

व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिन-धर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - अनन्त सुख प्रदायक

★★★

428- सुगन्ध दशमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल दशमी

व्रत की अवधि - 10 वर्ष

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास

व्रत की पूजा - श्री शीतलनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - शारीरिक दुर्गंध नाशक

व्र वि स पृ 87 129 आ ध अ ग्र पृ 565 जै व्र ति नि पृ 234 क्रि को पृ 256 जै व्र वि पृ 89 व्र क का पृ 632

★★★

429- सुगन्धदशमी व्रत (मासिक)

व्रतारम्भ तिथि - पौष शुक्ल पञ्चमी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - पञ्चमी से दशमी तक उपवास या एकाशन शक्त्यनुसार करे।
व्रत की पूजा - श्री शीतलनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शीतलनाथ-जिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - शारीरिक दुर्गंध नाशक

***

430- सुगन्ध बन्धुर व्रत

व्रतारम्भ तिथि - श्रावण शुक्ल एकम् से कार्तिक शुक्ल 15 तक
व्रत की अवधि - 105 दिन
व्रत की विधि - व्रत के दिनों मे उपवास या एकाशन शक्त्यानुसार
व्रत की पूजा - श्री पार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - यश कीर्ति प्रदायक

***

431- सुदर्शन तप व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 48 दिन लगातार
व्रत की विधि - एक उपवास एक पारणा के क्रम से 24 उपवास एव चौबीस पारणा करें।
व्रत की पूजा - रत्नत्रय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान
व्रत का फल - सम्यक्त्व सहित तपश्चरण दायक

विशेष- उपशम सम्यक्, क्षयोपशम सम्यक् और क्षायिक सम्यक् ये तीन सम्यक् है एक-एक सम्यक् के 8-8 शकादि दोष हुए। इस प्रकार सम्यक् के चौबीस मल दोष हुए। इनके परिहार के लिए व्रत किया जाता है।

***

432- सुनय व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक तृतीया का उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सम्भवनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय नम
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - समीचीन नयात्मक साधना प्रदायक

***

433- सूतक परिहार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 16, 11, 9 या 5 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्दशी के दिन प्रोषधपूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभादिवीरान्त-चतुर्विंशति- तीर्थंकरेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अशुभ असातानाशक

***

434- सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषधपूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - णमोकार मन्त्र
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - कषायाभाव कारक

***

435- सूक्ष्मसाम्पराय चारित्र व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल षष्ठी
व्रत की अवधि - 10 माह
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री महावीर पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री महावीर-जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - उत्कृष्ट चारित्र प्रदायक

★★★

436- सोलहकारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्र माघ एव चैत्र तीनो मास में कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा।

व्रत की अवधि - उत्तम सोलहवर्ष मध्यम पाँच वर्ष जघन्य एक वर्ष

व्रत की विधि - इस व्रत की उत्तम मध्यम एव जघन्य की अपेक्षा तीन विधियाँ हैं

1 **उत्तम विधि**- कृष्ण पक्ष की एकम से दूसरे माह की कृष्ण एकम तक 31 दिन के 31 उपवास करें।

2 **मध्यम विधि**- 16 उपवास एव 16 पारणा पूर्वक। (क्रमश एक उपवास एक पारणा क्रम से)

3 **जघन्य विधि**- 31 एकाशन। (लगातार)

व्रत की पूजा - सोलहकारण पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - सोलहकारण विधान

विशेष- - किन्हीं ग्रन्थों में एकम् से एकम् तक व्रत

का निर्देश है, चाहे तिथि का क्षय या वृद्धि हुई हो तथा किन्हीं
ग्रन्थों में 16 उपवास एव 16 पारणा का भी कथन मिलता है।

व्रत का फल - तीर्थंकर प्रकृति दायक
व्र वि स पृ 38 आ ध अ ग्र पृ 563 व्र ति नि पृ 101 क्रि को पृ 249

★ ★ ★

437- सौख्य व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की शुक्ल प्रतिपदा

व्रत की अवधि - उत्कृष्ठ-10वर्ष एव लघु-8माह
उत्कृष्ठ-120 उपवास एव लघु-16 उपवास

व्रत की विधि - **उत्कृष्ट-** प्रतिपदा का एक द्वितीया का दो तृतीया का तीन, चतुर्थी का चार इसी क्रम में करते हुए पूर्णिमा के 15 उपवास करें कुल 120 उपवास करें।
लघु- पहले पक्ष में प्रतिपदा, दूसरे पक्ष में द्वितीया,तृतीय पक्ष में तृतीया, चतुर्थ पक्ष में चतुर्थी इसी प्रकार पञ्चम पक्ष में छठे पक्ष में इस प्रकार 15 पक्ष में पूर्णिमा के दिन और 16 वा उपवास अमावस्या के दिन करना चाहिए। यह व्रत 8माह किया जाता है।

व्रत की पूजा - श्री शान्तिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सौख्य प्रदायक

***

438- सौख्य सुत सम्पत्ति व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 8 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषधपूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व-साधुभ्यो नम
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सुख धन धान्य दायक

***

439- सौभाग्यदशमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल दशमी
व्रत की अवधि - 10 वर्ष
व्रत की विधि - उपवासपूर्वक करें।
व्रत की पूजा - श्री शीतलनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्ली अर्हं श्री शीतलनाथ-जिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सौभाग्य वर्धक

जै व वि स पृ 129

***

440- सौभाग्य व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह

व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - चौबीस तीर्थंकर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नम
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - कुल सौभाग्य वर्धक

★★★

441- सयत व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ कृष्ण तृतीया
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री सम्भवनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री सम्भवनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - असयम निरोधक

★★★

442- सयतासयत व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी
व्रत की अवधि - 5 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक कृष्ण चतुर्थी के दिन प्रोषधपूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री अभिनन्दननाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय नम

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सयम भाव वर्धक

★★★

443- सयोग केवली गुणस्थान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल एकादशी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक एकादशी का उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री श्रेयासनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ अर्हं श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अर्हंत अवस्था दायक

★★★

444- सयोग पञ्चमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह में रविवार एव पञ्चमी के योग में
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री पार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - शुभ सकल्प वर्धक

★★★

445- सरक्षणानन्द निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल नवमी
व्रत की अवधि - 1 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक शुक्ल नवमी के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - अभय प्रदायक

★★★

446- सशय मिथ्यात्व गुणस्थान निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल 15
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - रत्नत्रय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान
व्रत का फल - शुद्ध सम्यक्त्व प्रदायक

★★★

447- स्त्रीवेद निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र कृष्ण द्वितीया
व्रत की अवधि - 9 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक कृष्ण द्वितीया को उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री श्रेयासनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं श्रीश्रेयासनाथ-जिनेन्द्रायनम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - काम विकार नाशक

★★★

448- स्तेयानन्द निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक वैशाख शुक्ल अष्टमी को उपवास करें।
व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुजिन धर्म-जिनागमजिनचैत्यचैत्यालयेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - कर्मदहन विधान
व्रत का फल - रौद्र परिणाम निवृत्तिकारक

★★★

449- स्थितिकरणाग व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल षष्ठी
व्रत की अवधि - 6 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक षष्ठी को प्रोषधपूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जाप मन्त्र - ॐ ह्रीं स्थितिकरणाग-सम्यग्दर्शनाय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - एकाग्रतावर्धक

★★★

450- स्नेहनय व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल 15
व्रत की अवधि - 1 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक पूर्णिमा के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री शान्तिनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सयम साधनावर्धक

***

451- हस्तपचमी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - कार्तिक शुक्ल पचमी
व्रत की अवधि - 24 तिथि लगातार
व्रत की विधि - प्रत्येक पचमी को उपवास पूर्वक
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ हा ह्रीं हू ह्रौं ह अ सि आ उ सा पञ्चपरमेष्ठिभ्यो नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - आत्मबलवृद्धिकारक

***

452- हास्य कर्म निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र कृष्ण पञ्चमी
व्रत की अवधि - 5 वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री धर्मनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्ली अर्हं श्री धर्मनाथ-जिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - कषाय क्षय कारक

★★★

453- हिसानन्द निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - वैशाख शुक्ल षष्ठी

व्रत की अवधि - 6 तिथि पूर्वक

व्रत की विधि - व्रत के दिन प्रोषध पूर्वक उपवास करें।

व्रत की पूजा - नवदेवता पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म - जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - हिसक परिणाम शान्ति कारक

★★★

454- क्षमावली व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की दशमी

व्रत की अवधि - 5 माह (10 उपवास पूर्वक)

व्रत की विधि - प्रत्येक दशमी का उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री शीतलनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - अतिक्रोध शामक

★★★

455- क्षमावाणी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - असोज(आश्विन) कृष्ण प्रतिपदा
व्रत की अवधि - 10 वर्ष
व्रत की विधि - उपवास पूर्वक करें।
व्रत की पूजा - क्षमावाणी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - दशलक्षण विधान
विशेष - परस्पर क्षमा-क्षमा कहकर वर्ष के सभी अपराधों को क्षमा करें।
व्रत का फल - क्रोध परिणाम शान्ति कारक

आ ध अ ग्र पृ 551 जै व्र वि स पृ 108
व्र वि स पृ 129जै व्र वि स पृ 129

★★★

456- क्षायिक उपभोग व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक अष्टमी का उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री चन्द्रप्रभ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - केवल लब्धि प्रदाता

★★★

457- क्षायिक दान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्थी का उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री अभिनन्दननाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्लीं अर्हं श्री अभिनन्दन-जिनेन्द्राय नम
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - केवल लब्धि प्रदाता

★★★

458- क्षायिक भोग व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक सप्तमी का उपवास करे।
व्रत की पूजा - श्री सुपार्श्वनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नम।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - केवल लब्धि प्रदाता

★★★

459- क्षायिकमोह/क्षीणमोह/क्षीण कषाय गुणस्थान व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल दशमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक दशमी का उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री शीतलनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शीतलनाथजिनेन्द्राय नम।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - मोह कर्म निवारक

★★★

460- क्षायिक लाभ व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल पचमी

व्रत की अवधि - 4 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक पचमी का उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री सुमतिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सुमतिनाथजिनेन्द्राय नम।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - केवल लब्धि प्रदाता

★★★

461- क्षायिक सम्यक्त्व व्रत

व्रतारम्भ तिथि - ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया

व्रत की अवधि - 10 तिथि पूर्वक

व्रत की विधि - प्रत्येक तृतीया का उपवास करें।

व्रत की पूजा - श्री सम्भवनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सम्भवनाथजिनेन्द्राय नम।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - केवल लब्धि प्रदाता

★★★

462- त्रसकाय निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल एकादशी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक एकादशी के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री श्रेयासनाथ पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री श्रेयासनाथजिनेन्द्राय नमः ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - त्रस पर्याय निवारक

***

463- त्रिकालतृतीया व्रत

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल तृतीया
व्रत की अवधि - 3 वर्ष
व्रत की विधि - प्रत्येक तृतीया के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - त्रिकाल चौबीसी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्ली अर्हं निवार्णादि-द्वासप्तति-त्रिकाल-तीर्थंकरेभ्यो नमः ।
उद्यापन का विधान - तीनचौबीसी विधान
व्रत का फल - त्रिलोक पूज्यता प्रदायक

***

464- त्रिगुणसार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - इक्तालीस दिन
व्रत की विधि - तीस उपवास, ग्यारह पारणा लगातार उपवास एक पारणा एक उपवास एक पारणा एक

उपवास दो पारणा एक, उपवास तीन पारणा एक
उपवास चार पारणा एक उपवास पाँच पारणा एक
उपवास चार पारणा एक उपवास चार पारणा एक
उपवास तीन पारणा एक उपवास दो पारणा एक
उपवास एक पारणा एक।

व्रत की पूजा - रत्नत्रय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान
व्रत का फल - रत्नत्रय प्रदायक

आ ध अ ग्र पृ 554 जै व्र वि स पृ 59

★★★

465- त्रिभुवन तिलक व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल चतुर्दशी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक चतुर्दशी के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नम स्वाहा।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - शारीरिक विकृति निवारक

★★★

466- त्रिलोकतीज

व्रतारम्भ तिथि - भाद्रपद शुक्ल तृतीया
व्रत की अवधि - तीन वर्ष
व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - अकृत्रिम चैत्यालय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री त्रिलोक-सम्बन्धि-अकृत्रिम-जिनचैत्यचैत्या-लयेभ्यो नम ।
उद्यापन का विधान - त्रैलोक्य जिनालय विधान
व्रत का फल - शोक निवारक

आ ध अ ग्र पृ 554 जै ग्र वि स पृ 106

***

467- त्रिलोक भूषण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - पौष शुक्ल तृतीया
व्रत की अवधि - 32 माह
व्रत की विधि - प्रत्येक शुक्ल तृतीया के दिन उपवास करें।
व्रत की पूजा - श्री महावीर पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्री क्ली अर्हं श्री महावीरजिनेन्द्राय नम ।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - सिद्धावस्था प्रदायक

***

468- त्रिलोकसार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 41 दिन

व्रत की विधि - 30 उपवास 11 पारणाएँ लगातार यथा-
उपवास 5 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1, उपवास 2 पारणा 1
उपवास 1 पारणा 1 उपवास 2 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1 उपवास 4 पारणा 1
उपवास 3 पारणा 1, उपवास 2 पारणा 1
उपवास 1 पारणा 1

व्रत की पूजा - अकृत्रिम चैत्यालय पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्री त्रिलोकसम्बन्धि-कृत्रिमाकृत्रिम-चैत्यचैत्या- लयेभ्यो नम ।

उद्यापन का विधान - त्रैलोक्य जिनालय विधान

व्रत का फल - उत्कृष्टपद प्रदाता

आ ध अ ग्र पृ 554 ह पु पृ 258

★★★

469- त्रीन्द्रिय-जाति निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - चैत्र शुक्ल तृतीया

व्रत की अवधि - 4 माह

व्रत की विधि - प्रत्येक तृतीया के दिन उपवास करे।

व्रत की पूजा - श्री सम्भवनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री सम्भवनाथजिनेन्द्राय नम ।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - त्रीन्द्रिय जाति निवारक

★★★

470- त्रेपन्न क्रिया व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 53 माह उत्कृष्ट 27 माह मध्यम 53 दिन जघन्य
व्रत की विधि - उपवास पूर्वक करें।
व्रत की पूजा - श्री शान्तिनाथ भगवान
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथाय नमः ।
उद्यापन का विधान - शान्तिनाथ विधान।
व्रत का फल - श्रावकोचित क्रिया वर्धक

★★★

471- ज्ञानतप व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की कोई भी तिथि
व्रत की अवधि - 158 दिन (एक वर्ष में)
व्रत की विधि - वर्ष में कभी भी 158 उपवास एव पारणा लगातार करें।
व्रत की पूजा - रत्नत्रय पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः ।
उद्यापन का विधान - रत्नत्रय विधान
व्रत का फल - चारित्र निर्दोषता कारक

★★★

472- ज्ञान पच्चीसी व्रत

व्रतारम्भ तिथि - किसी भी माह की शुक्ल चतुर्दशी
व्रत की अवधि - पच्चीस दिन (उत्कृष्ट 12 वर्ष जघन्य 1 वर्ष

व्रत की विधि - चौदह चतुर्दशी के चोदह उपवास एव ग्यारह
एकादशी के ग्यारह उपवास
व्रत की पूजा - सरस्वती पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशाग-श्रुतज्ञानाय नम ।
उद्यापन का विधान - श्रुतस्कन्ध विधान
विशेष - चौदह पूर्व, ग्यारह अग
व्रत का फल - श्रुतज्ञान क्षयोपशम प्रदायक
आ ध अ ग्र पृ - 552 जै व्र ति नि पृ - 215
जै व्र वि स पृ - 73 क्रि को पृ 254

★★★

473- ज्ञान साम्राज्य व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह
व्रत की विधि - 4 माह तक प्रतिदिन केवल एक-एक रस छोडकर एकाशन करें।
व्रत की पूजा - पञ्चपरमेष्ठी पूजा
व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नम स्वाहा।
उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान
व्रत का फल - केवलज्ञान प्रदायक

★★★

474- ज्ञानाचार व्रत

व्रतारम्भ तिथि - आषाढ शुक्ल अष्टमी
व्रत की अवधि - 4 माह (8 अष्टमी पूर्वक)

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास

व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम।

उद्यापन का विधान - पञ्चपरमेष्ठी विधान

व्रत का फल - सम्यग्ज्ञान कारक

* * *

475- ज्ञानावरणी कर्म निवारण व्रत

व्रतारम्भ तिथि - अष्टाह्निका की अष्टमी

व्रत की अवधि - 5 अष्टाह्निका की अष्टमी

व्रत की विधि - व्रत के दिन उपवास करे।

व्रत की पूजा - श्री आदिनाथ पूजा

व्रत का जापमन्त्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय नम।

उद्यापन का विधान - भक्तामर विधान

व्रत का फल - ज्ञानावरण कर्म क्षयकारक

* * *

परिशिष्ट

विशिष्ट जाप मन्त्र

कर्मदहन व्रतस्य जाप्य मंत्राः

चतुर्थी के 7 उपवासों के 7 जाप्य मत्र

ॐ ह्री मिथ्यात्व-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री सम्यगमिथ्यात्व-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री सम्यक्प्रकृति-मिथ्यात्व मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री अनन्तानुबन्धीक्रोध-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री अनन्तानुबन्धीमान मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री अनन्तानुबन्धीमाया-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री अनन्तानुबन्धीलोभ-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

सप्तमी के 3 उपवासों के 3 जाप्य मत्र

ॐ ह्री नरकायुष्कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री तिर्यगायुष्कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री मनुष्यायुष्कर्मरहित सिद्धाय नम ।

नवमी के 36 उपवास के 36 मत्र

ॐ ह्रीं निद्रानिद्रा-दर्शनावरण-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री प्रचलाप्रचला-दर्शनावरण-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि-दर्शनावरण-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री नरकगति-नामकर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं तिर्यग्गतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वीनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं तिर्यग्गत्यानुपूर्वीनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं एकेन्द्रियनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रियनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री चतुरिन्द्रियनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं स्थावरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं आतपनाम-कर्मरहित गिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं उद्योतनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री परघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानाऽवरणक्रोध-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानाऽवरणमान-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री प्रत्याख्यानाऽवरणमाया-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री प्रत्याख्यानाऽवरणलोभ-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानाऽवरणक्रोध-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानाऽवरणमान-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानाऽवरणमाया-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यानाऽवरणलोभ-मोहनीय-कर्मरहिन सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं नपुसकवेद-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं पुरुषवेद-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं हास्य-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं रति-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं अरति-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं शोक-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं भय-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं जुगुप्सा-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं सज्वलन-क्रोध-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री सज्वलन-मान-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री सज्वलन-माया-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

दशमी में उपवास का 1 मत्र

ॐ ह्री सज्वलन-लोभ-मोहनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

बारस के 16 उपवासों के 16 जाप्य मत्र

ॐ ह्री निद्रा-दर्शनाऽवरण-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री प्रचला-दर्शनाऽवरण-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री मतिज्ञानाऽवरण-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री श्रुतज्ञानाऽवरण-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री अवधिज्ञानाऽवरण-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री मन पर्यय ज्ञानाऽवरण-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री केवलज्ञानाऽवरण-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री चक्षुदर्शनाऽवरण-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री अचक्षुदर्शनाऽवरण-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री केवलर्शनाऽवरण-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री दानान्तराय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं लाभान्तराय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री भोगान्तराय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं औदारिक शरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

चौदश के 85 उपवासों के 85 जाप्य मत्र

ॐ ह्रीं वैक्रियक-शरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं आहारक-शरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं तैजस-शरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं कार्माण-शरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं औदारिक-बन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं वैक्रियक-बन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं आहारक-बन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं तैजस-बन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री कार्माण-बन्धननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं औदारिक-सघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं वैक्रियक-सघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं आहारक-सघातनाम-केर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं तैजस-सघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं कार्माण-सघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं औदारिकागोपागनाम-कर्मरहित मिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं वैक्रियकआगोपागनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं आहारकआगोपागनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं समचतुरस्रसस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमडलसस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं स्वातिसस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री वामनसस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं कुब्जकसस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं हुण्डकसस्थाननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं बज्रवृषभनाराचसहनननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं बज्रनाराचसहनननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं नाराचसहनननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं अर्धनाराचसहनननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं कीलकसहनननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री असप्राप्तासृपाटिकासहनननाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं श्यामवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री नीलवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री पीतवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री अरूणवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री श्वेतवर्णनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री तिक्तरसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री कटुकरसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं मधुररसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री आम्लरसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री कषायलरसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं मृदुस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री कठोरस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं शीतस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं उष्णस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं रूक्षस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं स्निग्धस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं गुरुस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री लघुस्पर्शनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री सुगधनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री दुर्गन्धनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री देवगत्यानुपूर्वीनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्वीनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं प्रत्येकशरीरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री साधारणशरीर नाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री पर्याप्तिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री अपर्याप्तिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं दुर्भगनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री सुभगनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री आदेयनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री अनादेयनाम कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री अगुरुलघुनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री उपघातनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री उच्छ्वासनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री शुभविहायोगति नाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं अशुभविहायोगति नाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री स्थिरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री अस्थिरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्री शुभनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं अशुभनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं सुस्वरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं दु स्वरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

ॐ ह्रीं अयश कीर्तिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री यश कीर्तिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं निर्माणनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं देवगतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री मनुष्यगतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री पञ्चेन्द्रियजातिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री त्रसनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं वादरनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री सूक्ष्मनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं तीर्थकरप्रकृतिनाम-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री असातावेदनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री सातावेदनीय-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री देव आयु-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री नीचगोत्र-कर्मरहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री उच्चगोत्र-कर्मरहित सिद्धाय नम ।

अष्टमी के 8 उपवास के 8 मत्र

ॐ ह्री अनतसम्यक्त्व-गुणसहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री अनतदर्शन-गुणसहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री अनतज्ञान-गुणसहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री अनतवीर्य-गुणसहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री सूक्ष्मत्व-गुणसहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं अमूर्तिकत्व-गुणसहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्री अगुरुलघुत्व-गुणसहित सिद्धाय नम ।
ॐ ह्रीं अव्याबाधत्व-गुणसहित सिद्धाय नम ।

चारित्र शुद्धि व्रतस्य जाप्य मत्रा

अहिसा महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-वादर-पर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ही मनसा कारित्त-वादर-पर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-वादर-पर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत वादर-पर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ही वचसा कारित-वादर-पर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोपधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-वादर-पर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-वादर-पर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ही वपुषा कारित-वादर-पर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ही वपुषा अनुमोदित-वादर-पर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अहिसा महाव्रतस्य प्रथम प्रकार ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-वादरापर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-वादरापर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-वादरापर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-वादरापर्याप्तैकेंद्रिय-हिंसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-वादरापर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-वादरापर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-वादरापर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-वादरापर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-वादरापर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अहिसा महाव्रतस्य द्वितीय प्रकार ।।2।।

ॐ ह्री मनसा कृत-सूक्ष्म-पर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-सूक्ष्म-पर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-सूक्ष्म-पर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्री वचसा कृत-सूक्ष्म-पर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-सूक्ष्म-पर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-सूक्ष्म-पर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्री वपुषा कृत-सूक्ष्म-पर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-सूक्ष्म-पर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-मूक्ष्म-पर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।9।

इति अहिसा महाव्रतस्य तृतीय प्रकार ।।3।।

ॐ ह्री मनसा कृत-सूक्ष्मापर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित सूक्ष्मापर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-सूक्ष्मापर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्री वचसा कृत सूक्ष्मापर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-सूक्ष्मापयाप्तैकेद्रिय-हिमा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-सूक्ष्मापर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-सूक्ष्मापर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-सूक्ष्मापर्याप्तैकेद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-सूक्ष्मापर्याप्तैकेंद्रिय-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।9।

इति अहिसा महाव्रतस्य चतुर्थ प्रकार ।।4।।

ॐ ह्री मनसा कृत-द्वींद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-द्वींद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-द्वीद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-द्वींद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-द्वींद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-द्वीद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-द्वींद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-द्वींद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-द्वीद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अहिसा विरति महाव्रतस्य पचम प्रकार ।।5।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-द्वींद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-द्वींद्रियापर्याप्त-िसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-द्वीद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-द्वीद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-द्वींद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ही वचसा अनुमोदित-द्वीद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-द्वींद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-द्वींद्रियापयाप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ही वपुषा अनुमोदित-द्वीद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अहिसा महाव्रतस्य षष्ठ प्रकार ।।6।।

ॐ ही मनसा कृत त्रीद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-त्रींद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ही मनसा अनुमोदित-त्रींद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नभ ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-त्रींद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-त्रींद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-त्रीद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-त्रींद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधाद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-त्रींद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-त्रीद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अहिसा महाव्रतस्य सप्तम प्रकार ।।7।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-त्रींद्रिय-अपर्याप्त हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-त्रीद्रिय-अपर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-त्रींद्रिय-अपर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-त्रींद्रिय-अपर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-त्रीद्रिय-अपर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-त्रींद्रिय-अपर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-त्रींद्रिय-अपर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-त्रीद्रिय-अपर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-त्रीद्रिय-अपर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अहिसा महाव्रतस्य अष्ठम प्रकार ।।8।।

ॐ ह्री मनसा कृत-चतुरिद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-चतुरिद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-चतुरिद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्री वचसा कृत-चतुरिद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-चतुरिद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-चतुरिद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्री वपुषा कृत-चतुरिद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-चतुरिद्रिय पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-चतुरिद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अहिसा महाव्रतस्य नवम प्रकार ।।9।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-चतुरिंद्रियापर्याप्त-हिंसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-चतुरिद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-चतुरिंद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-चतुरिंद्रियापर्याप्त-हिंसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-चतुरिद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदिन-चतुरिंद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-चतुरिंद्रियापर्याप्त-हिंसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ही वपुषा कारित-चतुरिद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-चतुरिंद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अहिसा महाव्रतस्य दशम प्रकार ।।10।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-सज्ञिपचेंद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-सज्ञिपचेंद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।2।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-संज्ञिपचेंद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्री वचसा कृत-सज्ञिपचेंद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-सज्ञिपर्चेद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-सज्ञिपर्चेद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्री वपुषा कृत-सज्ञिपचेद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-सज्ञिपर्चेद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-सज्ञिपर्चेद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।9।

इति अहिसा महाव्रतस्य एकादश प्रकार ।।11।।

ॐ ह्री मनसा कृत-मज्ञिपचेद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-सज्ञिपर्चेद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-सज्ञिपर्चेद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्री वचसा कृत-सज्ञिपचेद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-सज्ञिपर्चेद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-संज्ञिपर्चेद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-सज्ञिपचेंद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-सज्ञिपचेंद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-संज्ञिपचेंद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।9।

इति अहिसा विरति महाव्रतस्य द्वादशः प्रकारः।।12।।

ॐ ह्री मनसा कृतासज्ञिपचेंद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारितासज्ञिपचेंद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदितासज्ञिपचेंद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्री वचसा कृतासज्ञिपचेंद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारितासज्ञिपचेंद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदितासंज्ञिपचेंद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्री वपुषा कृतासज्ञिपचेंद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितासंज्ञिपचेंद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदितासंज्ञिपचेंद्रिय-पर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।9।

इति अहिसा महाव्रतस्य त्रयोदश प्रकार ।।13।।

ॐ ह्री मनसा कृतासज्ञिपचेद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितासज्ञिपचेद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदितासज्ञिपचेंद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्री वचसा कृतासज्ञिपचेद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारितासज्ञिपचेद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदितासज्ञिपचेंद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधाद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्री वपुषा कृतासज्ञिपचेद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्राषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारितासज्ञिपचेद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदितासज्ञिपचेद्रियापर्याप्त-हिसा-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।9।

इति हिसा विरति महाव्रतस्य चर्तुदश प्रकार ।।14।।

सत्य महाव्रतस्य जाप्य मत्र

ॐ ह्रीं मनसा कृताभिख्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारिताभिख्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदिताभिख्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृताभिख्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारिताभिख्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदिताभिख्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृताभिख्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारिताभिख्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदिताभिख्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति सत्य महाव्रतस्य प्रथम प्रकार ।।15।।

ॐ ह्री मनसा कृत-स्वपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-स्वपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-स्वपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-स्वपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-स्वपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-स्वपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-स्वपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-स्वपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-स्वपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति सत्य महाव्रतस्य द्वितीय प्रकार ।।16।।

ॐ ह्री मनसा कृत-परपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-परपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-स्वपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-परपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-परपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-परपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-परपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-परपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-परपक्षासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति सत्य महाव्रतस्य तृतीय प्रकारः।।17।।

ॐ ह्रीं मनसा-कृत-पैशुन्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा-कारित-पैशुन्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-पैशुन्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ही वचसा-कृत-पैशुन्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा-कारित-पैशुन्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-पैशुन्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ही वपुषा-कृत-पैशुन्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा-कारित-पैशुन्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-पैशुन्यासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति सत्य महाव्रतस्य चतुर्थः प्रकारः।।18।।

ॐ ह्रीं मनसा-कृत-क्रोधासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा-कारित-क्रोधासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-क्रोधासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा- कृत-क्रोधासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा-कारित-क्रोधासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-क्रोधासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा-कृत-क्रोधासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा-कारित क्रोधासत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-क्रोधामत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति सत्य महाव्रतस्य पचम प्रकार ।।19।।

ॐ ह्रीं मनमा-कृन-लोभासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा-कारित-लोभासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-लोभासत्य-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा-कृत-लोभासत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्यातनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा-कारित-लोभासत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-लोभासत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा-कृत-लोभासत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा-कारित-लोभासत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-लोभासत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति सत्य महाव्रतस्य षष्ठ प्रकार ।।20।।

ॐ ह्रीं मनसा कृतात्म-प्रशम्साऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ही मनसा कारितात्म-प्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदितात्म-प्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ही वचसा कृतात्म-प्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितात्म-प्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदितात्म-प्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ही वपुषा कृतात्म-प्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितात्म-प्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदितात्म-प्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति सत्य महाव्रतस्य सप्तमः प्रकार ।।21।।

ॐ ह्रीं मनसा कृतपराप्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितपराप्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदितपराप्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतपराप्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ही वचसा कारितपराप्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदितपराप्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतपराप्रशसाऽसत्य विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ही वपुषा कारितपराप्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदितपराप्रशसाऽसत्य-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति सत्य महाव्रतस्य अष्टम प्रकार ।।22।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-ग्रामादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-ग्रामादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-ग्रामादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-ग्रामादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-ग्रामादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-ग्रामादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-ग्रामादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ही वपुषा कारित-ग्रामादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्यातनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-ग्रामादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अचौर्य महाव्रतस्य प्रथम प्रकारः।।23।।

ॐ ह्रीं मनसा कृतारण्यादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितारण्यादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदितारण्यादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतारण्यादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितारण्यादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदितारण्यादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतारण्यादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारितारण्यादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुण अनुमोदितारण्यादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अचौर्य व्रतस्य द्वितीय प्रकार ।।24।।

ॐ ह्री मनसा कृत-खलादत्त ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-खलादत्त-ग्रहण-विरति महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-खलादत्त-ग्रहण-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-खलादत्त ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-खलादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित खलादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-खलादत्त ग्रहण-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-खलादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-खलादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अचौर्य महाव्रतस्य तृतीय प्रकार ।।25।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-काताऽदत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितकाताऽदत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ही मनसा अनुमोदित-काताऽदत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतकाताऽदत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-काताऽदत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमादितकाताऽदत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधाद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ही वपुषा कृतकाताऽदत्त-ग्रहण-विरनि-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ही वपुषा कारितकाताऽदत्त ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदितकाताऽदत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अचौर्य महाव्रतस्य-चतुर्थ प्रकार ।।26।।

ॐ ह्रीं मनसा कृतान्यत्रादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितान्यत्रादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदितान्यत्रादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतान्यत्रादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितान्यत्रादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदितान्यत्रादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतान्यत्रादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितान्यत्रादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदितान्यत्रादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अचौर्य महाव्रतस्य पचम प्रकार ।।27।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-पानादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-पानादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-पानादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-पानादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-पानादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-पानादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-पानादत्त ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-पानादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-पानादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अचौर्य महाव्रतस्य षष्ठ प्रकार ।।28।।

ॐ ही मनसा कृताहारादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारिताहारादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदिताहारादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ही वचसा कृताहारादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारिताहारादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदिताहारादत्त-ग्रहण-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृताहारादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारिताहारादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदिताहारादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अचौर्य महाव्रतस्य सप्तम प्रकार ।।29।।

ॐ ह्रीं मनसा कृतापृच्छादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारितापृच्छादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदितापृच्छादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृतापृच्छादत्त-ग्रहण विरति-महाव्रत-प्रो॰॰धोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितापृच्छादत्त-ग्रहण विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदितापृच्छादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतापृच्छादत्त-ग्रहण विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारितापृच्छादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदितापृच्छादत्त-ग्रहण-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अचौर्य महाव्रतस्य अष्टम प्रकार ।।30।।

ब्रह्मचर्य व्रतस्य जाप्यमत्रा

ॐ ह्री मनसा कृत-नर-स्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-नर-स्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-नर-स्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-नर-स्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-नर-स्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-नर-स्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्री वपुषा कृत-नर-स्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-नर-स्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-नर-स्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य प्रथम भेद ।।31।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-नर-स्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-नर-स्त्री रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-नर-स्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-नर-स्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-नर-स्त्री रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-नर-स्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-नर-स्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-नर-स्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-नर-स्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य द्वितीय प्रकार ।।32।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-नर-स्त्री-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-नर-स्त्री-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-नर-स्त्री-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत नर-स्त्री-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-नर-स्त्री-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-नर-स्त्री घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-नर-स्त्री-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-नर-स्त्री-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधाद्योतनाय नम ।8।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-नर-स्त्री-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।9।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य तृतीय प्रकार ।।33।।

ॐ ह्री मनसा कृत-नर-स्त्री-चक्षुरिद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।1।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-नर-स्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।2।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-नर-स्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-नर-स्त्री-चक्षुरिद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।4।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-नर-स्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-नर-स्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्री वपुषा कृत-नर-स्त्री-चक्षुरिद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।7।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-नर-स्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-नर-स्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य चतुर्थः प्रकार ।।34।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-नर-स्त्री-कर्णेन्द्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-नर-स्त्री-कर्णेन्द्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।2।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-नर-स्त्री-कर्णेन्द्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्री वचसा कृत-नर-स्त्री-कर्णेन्द्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-नर-स्त्री-कर्णेन्द्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।5।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-नर-स्त्री-कर्णेन्द्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्री वपुषा कृत-नर-स्त्री-कर्णेन्द्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-नर-स्त्री-कर्णेन्द्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।8।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-नर-स्त्री-कर्णेन्द्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।9।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य पचम प्रकार ।।35।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-देवस्त्री-स्पर्शनेद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-देवस्त्री-स्पर्शनेद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत- प्रोषधोद्योतनाय नम ।2।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-देवस्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्री वचसा कृत-देवस्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधाद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-देवस्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-देवस्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-देवस्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ही वपुषा कारित-देवस्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।8।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-देवस्त्री-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।9।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य षष्ठ प्रकार ।।36।।

ॐ ह्री मनसा कृत-देवस्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-देवस्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।2।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-देवस्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-देवस्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-देवस्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।5।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-देवस्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ही वपुषा कृत-देवस्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-देवस्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।8।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमादित-देवस्त्री-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य सप्तम प्रकार ।।37।।

ॐ ह्री मनसा कृत-देवस्त्री-घ्राणेद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-देवस्त्री-घ्राणेद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।2।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-देवस्त्री-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-देवस्त्री-घ्राणेद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-देवस्त्री-घ्राणेद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।5।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-देवस्त्री-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-देवस्त्री-घ्राणेद्रिय-विषयाब्रह्म-विरतिमहाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-देवस्त्री-घ्राणेद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।8।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-देवस्त्री-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य अष्ठम प्रकार ।।38।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-देवस्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-देवस्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।2।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-देवस्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रन-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्री वचसा कृत-देवस्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-देवस्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।5।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-देवस्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-देवस्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-देवस्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।8।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-देवस्त्री-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य नवमः प्रकार ।।39।।

ॐ ह्री मनसा कृत-देवस्त्री-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-देवस्त्री-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-देवस्त्री-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-देवस्त्री-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-देवस्त्री-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।5।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-देवस्त्री-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-देवस्त्री-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-देवस्त्री-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-देवस्त्री-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य दशम प्रकारे ।।40।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-तिर्य्यग्नारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-तिर्य्यग्नारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-तिर्य्यग्नारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-तिर्य्यग्नारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-तिर्य्यग्नारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-तिर्य्यग्नारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-तिर्य्यग्नारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-तिर्य्यग्नारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-तिर्य्यग्नारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य एकादशः भेद ।।41।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-तिर्य्यग्नारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-तिर्य्यग्नारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-तिर्य्यग्नारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-तिर्य्यग्नारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-तिर्य्यग्नारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-तिर्य्यग्नारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-तिर्य्यग्नारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-तिर्य्यग्नारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-तिर्य्यग्नारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य द्वादश प्रकार ।।42।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-तिर्य्यग्नारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-तिर्य्यग्नारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-तिर्य्यग्नारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-तिर्य्यग्नारी-घ्राणेंद्रिय विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-तिर्य्यग्नारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-तिर्य्यग्नारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ही वपुषा कृत-तिर्य्यग्नारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-तिर्य्यग्नारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-तिय्यग्नारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य त्रयोदश प्रकारः।।43।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-तिर्य्यग्नारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-तिर्य्यग्नारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-तिर्य्यग्नारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-तिर्य्यग्नारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-तिर्य्यग्नारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-तिर्य्यग्नारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-तिर्य्यग्नारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरनि-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-तिर्य्यग्नारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-तिर्य्यग्नारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य चतुर्दश प्रकार ।।44।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-तिर्य्यग्नारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-तिर्य्यग्नारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-तिर्य्यग्नारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-तिर्य्यग्नारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-तिर्य्यग्नारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचमा अनुमोदित-तिर्य्यग्नारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-तिर्य्यग्नारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-तिर्य्यग्नारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-तिर्य्यग्नारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य पचदश प्रकार ।।45।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-चित्रिणी नारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-चित्रिणीनारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-चित्रिणीनारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय न्म ।3।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-चित्रिणीनारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-चित्रिणीनारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-चित्रिणीनारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत- प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-चित्रिणीनारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-चित्रिणीनारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-चित्रिणीनारी-स्पर्शनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत- प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य षोडश प्रकारः।।46।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-चित्रिणीनारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-चित्रिणीनारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-चित्रिणीनारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-चित्रिणीनारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-चित्रिणीनारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-चित्रिणीनारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-चित्रिणीनारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-चित्रिणीनारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-चित्रिणीनारी-रसनेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य सप्तदशः प्रकारः।।47।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-चित्रिणीनारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-चित्रिणीनारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-चित्रिणीनारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत चित्रिणीनारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-चित्रिणीनारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-चित्रिणीनारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-चित्रिणीनारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-चित्रिणीनारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-चित्रिणीनारी-घ्राणेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य अष्टादश प्रकार ।।48।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-चित्रिणीनारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-चित्रिणीनारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-चित्रिणीनारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत- प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-चित्रिणीनारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-चित्रिणीनारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-चित्रिणीनारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत- प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-चित्रिणीनारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-चित्रिणीनारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-चित्रिर्णानारी-चक्षुरिंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति ब्रह्मचर्य महाव्रतस्य एकोनविंश प्रकार ।।49।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-चित्रिणीनारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-चित्रिणीनारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-चित्रिणीनारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-चित्रिणीनारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-चित्रिणीनारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-चित्रिणीनारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-चित्रिणीनारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-चित्रिणीनारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-चित्रिणीनारी-कर्णेंद्रिय-विषयाब्रह्म-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति ब्रह्मचर्य व्रतस्य विशति प्रकार ।।50।।

अथ परिग्रहविरति महाव्रतस्य जाप्यमत्रा

ॐ ह्रीं मनसा कृत-क्रोधाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-क्रोधाभ्यतर परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-क्रोधाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-क्रोधाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-क्रोधाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमादित-क्रोधाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-क्रोधाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-क्रोधाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-क्रोधाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य प्रथम प्रकारः।।51।।

ॐ ह्री मनसा कृत-मानाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-मानाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-मानाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-मानाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-मानाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-मानाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-मानाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-मानाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-मानाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य द्वितीय प्रकार ।।52।।

ॐ ह्री मनसा कृत-मायाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-मायाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-मायाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-मायाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-मायाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-मायाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-मायाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-मायाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-मायाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य तृतीय प्रकार ।।53।।

ॐ ह्री मनसा कृत-लोभाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-लोभाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-लोभाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-लोभाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-लोभाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाथ नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-लोभाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-लोभाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-लोभाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-लोभाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य चतुर्थ प्रकारः।।54।।

ॐ ह्री मनसा कृत-हास्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-हास्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-हास्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-हास्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-हास्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-हास्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-हास्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-हास्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-हाम्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य पचम प्रकार ।।55।।

ॐ ह्री मनसा कृत रत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-रत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-रत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-रत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-रत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधाद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमादित-रत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-रत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-रत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-रत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य षष्ठ प्रकार ।।56।।

ॐ ह्रीं मनसा कृतारत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारितारत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदितारत्यभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृतारत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारितारत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदितारत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतारत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारितारत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदितारत्याऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य सप्तम प्रकार ।।57।।

ॐ ह्री मनसा कृत-शोकाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-शोकाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-शोकाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-शोकाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-शोकाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-शोकाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-शोकाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-शोकाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-शोकाऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य अष्टम प्रकार ।।58।।

ॐ ह्री मनसा कृत-भयाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-भयाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-भयाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-भयाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-भयाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-भयाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-भयाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-भयाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-भयाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-?प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य नवमः प्रकारः।।59।।

ॐ ह्री मनसा कृत-जुगुप्साऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-जुगुप्साऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-जुगुप्साऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-जुगुप्साऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-जुगुप्साऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-जुगुप्साऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-जुगुप्साऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-जुगुप्साऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-जुगुप्साऽभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य दशम प्रकारः।।60।।

ॐ ही मनसा कृत-स्त्रीवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ही मनसा कारित-स्त्रीवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ही मनसा अनुमोदित-स्त्रीवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-स्त्रीवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-स्त्रीवेदाभ्यतर-पग्रिह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ही वचसा अनुमोदित-स्त्रीवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ही वपुषा कृत-स्त्रीवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ही वपुषा कारित-स्त्रीवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ही वपुषा अनुमोदित-स्त्रीवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य एकादश प्रकार ।।61।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-पुवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ही मनसा कारित-पुवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ही मनसा अनुमोदित-पुवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-पुवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-पुवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ही वचसा अनुमोदित-पुवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-पुवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-पुवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ही वपुषा अनुमोदित-पुवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य द्वादश प्रकार ।।62।।

ॐ ही मनसा कृत-नपुसकवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ही मनसा कारित-नपुसकवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-नपुसकवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ही वचसा कृत-नपुसकवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ही वचसा कारित-नपुसकवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-नपुसकवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्री वपुषा कृत-नपुसकवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-नपुसकवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-नपुसकवेदाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य त्रयोदश प्रकार ।।63।।

ॐ ह्री मनसा कृत-मिथ्यात्वाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-मिथ्यात्वाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-मिथ्यात्वाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-मिथ्यात्वाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-मिथ्यात्वाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-मिथ्यात्वाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-मिथ्यात्वाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-मिथ्यात्वाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-मिथ्यात्वाभ्यतर-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य चतुर्दश प्रकार ।।64।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-द्विपद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतन नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-द्विपद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-द्विपद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-द्विपद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतन नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-द्विपद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-द्विपद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-द्विपद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतन नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-द्विपद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-द्विपद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य पचदशः प्रकार ।।65।।

ॐ ह्री मनसा कृत-चतुष्पद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-चतुष्पद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-चतुष्पद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ही वचसा कृत-चतुष्पद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ही वचसा कारित-चतुष्पद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ही वचसा अनुमोदित-चतुष्पद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्राषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ही वपुषा कृत-चतुष्पद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ही वपुषा कारित-चतुष्पद-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ही वपुषा अनुमोदित-चतुष्पद-बाह्य-परिग्रह-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य षोडश प्रकार ।।66।।

ॐ ही मनसा कृत-क्षेत्र-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ हीं मनसा कारित-श्वत्र-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ही मनसा अनुमोदित-क्षेत्र-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ हीं वचसा कृत-क्षेत्र-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योननाय नम ।।4।।

ॐ हीं वचसा कारित-क्षेत्र-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ही वचसा अनुमोदित-क्षेत्र-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-क्षेत्र बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-क्षेत्र-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-क्षेत्र-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य सप्तदश प्रकार ।।67।।

ॐ ह्री मनसा कृत-धन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-धन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-धन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-धन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-धन-बाह्य-परिग्रह-विरति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-धन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-धन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-धन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-धन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य अष्टादश प्रकार ।।68।।

ॐ ह्री मनसा कृत-कुप्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-कुप्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-कुप्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-कुप्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-कुप्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-कुप्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-कुप्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-कुप्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-कुप्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य एकोनविशति प्रकार ।।69।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-भाड-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-भाड-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-भाड-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-भाड-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-भाड-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-भाड-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-भाड-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-भाड-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-भाड-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य विशति प्रकार ।।70।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-धान्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-धान्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-धान्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-धान्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-धान्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-धान्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-धान्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-धान्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-धान्य-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य एकविशति प्रकार ।।71।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-यान-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-यान-बाह्य परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-यान-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-यान-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-यान-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-यान-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-यान-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-यान-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-यान-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य द्वाविशति प्रकार ।।72।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-शयन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-शयन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-शयन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-शयन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-शयन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-शयन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-शयन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-शयन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-शयन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रह विरति व्रतस्य त्रयाविशति प्रकार ।।73।।

ॐ ह्री मनसा कृताशन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारिताशन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदिताशन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृताशन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारिताशन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदिताशन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृताशन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारिताशन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदिताशन-बाह्य-परिग्रह-विरति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिग्रहविरति महाव्रतस्य चतुर्विंशति प्रकार ।।74।।

अथ रात्रि भोजन विरति अणुव्रतस्य जाप्य मत्रा

ॐ ह्रीं मनसा कृत-रात्रि भोजन-विरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-रात्रि भोजन-विरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-रात्रि भोजन-विरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-रात्रि भोजन-विरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-रात्रि भोजन-विरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-रात्रि भोजन-विरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-रात्रि भोजन-विरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारित-रात्रि भोजन-विरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।
ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-रात्रि भोजन-विरत्यणुव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति रात्रि भोजनस्य अणुव्रतस्य मन्त्राः ।।75।।

अथ मनोगुप्ति महाव्रतस्य जाप्य मन्त्रा

ॐ ह्री मनसा कृत-मनोगुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।
ॐ ह्री मनसा कारित-मनोगुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।
ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-मनोगुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।
ॐ ह्री वचसा कृत-मनोगुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।
ॐ ह्री वचसा कारित-मनोगुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।
ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-मनोगुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।
ॐ ह्री वपुषा कृत-मनोगुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।
ॐ ह्री वपुषा कारित-मनोगुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।
ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-मनोगुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति मनोगुप्ति महाव्रतस्य मन्त्रा ।।76।।

अथ वचनगुप्ति महाव्रतस्य-जाप्य-मन्त्रा

ॐ ह्रीं मनसा कृत-वाग्गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।
ॐ ह्रीं मनसा कारित-वाग्गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।
ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-वाग्गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।
ॐ ह्रीं वचसा कृत-वाग्गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।
ॐ ह्रीं वचसा कारित-वाग्गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।
ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-वाग्गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-वाग्गुप्ति-महाव्रत-प्राषधोद्योतनाय नम ।।7।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारित-वाग्गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।
ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-वाग्गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।
इति वचनगुप्ति महाव्रतस्य जाप्य मन्त्रा ।।77।।

अथ कायगुप्ति महाव्रतस्य-जाप्य-मन्त्रा

ॐ ह्रीं मनसा कृत-काय-गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।
ॐ ह्रीं मनसा कारित-काय-गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।
ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-काय-गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।
ॐ ह्रीं वचसा कृत-काय-गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।
ॐ ह्रीं वचसा कारित-काय-गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।
ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-काय-गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृत-काय-गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारित-काय-गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।
ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-काय-गुप्ति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।
इति कायगुप्ति व्रतस्य जाप्य मन्त्रा ।।78।।

अथ ईर्यासमिति महाव्रतस्य-जाप्य-मन्त्रा

ॐ ह्रीं मनसा कृतीर्य्या-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।
ॐ ह्रीं मनसा कारितीर्य्या-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।
ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदितीर्य्या-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।
ॐ ह्रीं वचसा कृतीर्य्या-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।
ॐ ह्रीं वचसा कारितीर्य्या-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।
ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदितीर्य्या-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।
ॐ ह्रीं वपुषा कृतीर्य्या-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।
ॐ ह्रीं वपुषा कारितीर्य्या-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।
ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदितीर्य्या-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।
इतीर्य्यासमिति व्रतस्य जाप्य मन्त्राः।।79।।

अथ भाषा समिति महाव्रतस्य-जाप्य-मत्रा

ॐ ह्रीं मनसा कृत-भावि-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-भावि-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसाऽनुमोदित-भावि-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-भावि-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-भावि-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसाऽनुमोदित-भावि-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-भावि-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-भावि-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-भावि-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति भाषा समिति महाव्रतस्य प्रथम प्रकार ।।80।।

ॐ ह्री मनसा कृतोपमा-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारितोपमा-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदितोपमा-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृतापमा-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारितोपमा-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदितोपमा-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृतोपमा-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारितोपमा-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदितोपमा-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति भाषा समिति महाव्रतस्य द्वितीय प्रकार ।।81।।

ॐ ह्री मनसा कृत-व्यवहार-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-व्यवहार-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-व्यवहार-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-व्यवहार-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-व्यवहार-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-व्यवहार-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-व्यवहार-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषाधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-व्यवहार-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषाऽनुमोदित-व्यवहार-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति भाषा समिति महाव्रतस्य तृतीय प्रकार ।।82।।

ॐ ही मनसा कृत-प्रतीति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ही मनसा कारित-प्रतीति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-प्रतीति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ही वचसा कृत-प्रतीति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ही वचसा कारित-प्रतीति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-प्रतीति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ही वपुषा कृत-प्रतीति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ही वपुषा कारित-प्रतीति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-प्रतीति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति भाषा समिति महाव्रतस्य चतुर्थ प्रकार ।।83।।

ॐ ह्री मनसा कृत-सभावना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-सभावना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-सभावना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-सभावना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-सभावना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-सभावना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-सभावना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-सभावना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-सभावना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति भाषा समिति महाव्रतस्य पचम प्रकार ।।84।।

ॐ ह्री मनसा कृत-जनपद-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-जनपद-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-जनपद-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-जनपद-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-जनपद-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-जनपद-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-जनपद-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-जनपद-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-जनपद-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति भाषा समिति महाव्रतस्य षष्ठ प्रकार ।।85।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-सवृति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-सवृति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-सवृति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-सवृति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-सवृति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-सवृति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-सवृति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-सवृति-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-सवृति-मत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति भाषा समिति महाव्रतस्य सप्तम प्रकार ।।86।।

ॐ ह्री मनसा कृत-नाम-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-नाम-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-नाम-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-नाम-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-नाम-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-नाम-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-नाम-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-नाम-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-नाम-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति भाषा समिति महाव्रतस्य अष्टमः प्रकार ।।87।।

ॐ ह्री मनसा कृत-स्थापना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-स्थापना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-स्थापना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-स्थापना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-स्थापना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-स्थापना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-स्थापना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-स्थापना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-स्थापना-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति भाषा समिति महाव्रतस्य नवम प्रकार ।।88।।

ॐ ह्री मनसा कृत-रूप-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-रूप-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-रूप-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचमा कृत-रूप-मत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-रूप-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-रूप-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-रूप सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-रूप-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्राषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-रूप-सत्य-भाषा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति भाषा समिनि महाव्रतस्य दशम प्रकार ।।89।।

अथ एषणा समिति महाव्रतस्य-जाप्यमत्रा

ॐ ह्री मनसा कृत-धात्रि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-धात्रि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-धात्रि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-धात्रि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-धात्रि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ही वचसा अनुमोदित-धात्रि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-धात्रि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-धात्रि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-धात्रि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति धात्रि-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्राः।।90।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-दूत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ही मनसा कारित-दूत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ही मनसा अनुमोदित-दूत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-दूत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-दूत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-दूत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-दूत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-दूत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-दूत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति दूत-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।91।।

ॐ ह्री मनसा कृत-निमित्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-निमित्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-निमित्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-निमित्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-निमित्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-निमित्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-निमित्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रल-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-निमित्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-निमित्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति निमित्त-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मंत्राः।।92।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत आजीवक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत आजीवक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित आजीवक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत आजीवक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित आजीवक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित आजीवक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत आजीवक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित आजीवक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित आजीवक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति आजीवक दोष रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मंत्रा ।।93।।

ॐ ह्री मनसा कृत-वनीपक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-वनीपक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-वनीपक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-वनीपक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-वनीपक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-वनीपक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-वनीपक-दोष रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-वनीपक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-वनीपक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति वनीपक-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।94।।

ॐ ह्री मनसा कृत-चिकित्सा-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-चिकित्सा-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-चिकित्सा-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-चिकित्सा-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-चिकित्सा-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-चिकित्सा-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-चिकित्सा-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-चिकित्सा-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-चिकित्सा-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति चिकित्सा-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मन्त्रा ।।95।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-क्रोध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-क्रोध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-क्रोध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधाद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-क्रोध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-क्रोध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-क्रोध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-क्रोध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-क्रोध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-क्रोध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति क्रोध-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।96।।

ॐ ह्री मनसा कृत-मान-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-मान-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-मान-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-मान-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-मान-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-मान-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-मान-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-मान-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-मान-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति मान-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मन्त्राः।।97।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-माया-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-माया-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-माया-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-माया-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-माया-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-माया-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-माया-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-माया-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-माया-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति माया-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मन्त्राः।।98।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-लोभ-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-लोभ-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-लोभ-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-लोभ-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-लोभ-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-लोभ-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-लोभ-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-लोभ-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-लोभ-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति लोभ-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्राः।।99।।

ॐ ह्री मनसा कृत-पूर्वस्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-पूर्वस्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-पूर्वस्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-पूर्वस्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-पूर्वस्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-पूर्वस्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-पूर्वस्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-पूर्वम्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-पूर्वस्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति पूर्वस्तुति-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।100।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-पश्चात्-स्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-पश्चात्-स्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-पश्चात्-स्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।3।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-पश्चात्-स्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-पश्चात्-स्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-पश्चात्-स्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।6।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-पश्चात्-स्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-पश्चात्-स्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।8।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-पश्चात्-स्तुति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति पश्चात्स्तुति-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।101।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-विद्या-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ही मनसा कारित-विद्या-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ही मनसा अनुमोदित-विद्या-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-विद्या-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ही वचसा कारित-विद्या-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-विद्या-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-विद्या-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-विद्या-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-विद्या-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति विद्या-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मन्त्रा ।।102।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-मन्त्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-मन्त्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-मन्त्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-मन्त्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-मन्त्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-मन्त्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-मन्त्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-मन्त्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-मन्त्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति मन्त्र-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मन्त्राः।।103।।

ॐ ह्री मनसा कृत-चूर्णयोग-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-चूर्णयोग-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-चूर्णयोग-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-चूर्णयोग-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-चूर्णयोग-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-चूर्णयोग-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-चूर्णयोग-दोष-रहितषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-चूर्णयोग-दोष रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधाद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-चूर्णयोग-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति चूर्णयोग-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।104।।

ॐ ह्री मनसा कृत-मूलकर्म-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-मूलकर्म-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-मूलकर्म-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ही वचसा कृत-मूलकर्म-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-मूलकर्म-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-मूलकर्म-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ही वपुषा कृत-मूलकर्म-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ही वपुषा कारित-मूलकर्म-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-मूलकर्म-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति मूलकर्म-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।105।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-शंकित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ही मनसा कारित-शकित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-शकित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-शंकित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-शकित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-शकित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-शंकित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-शकित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-शकित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति शकित-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।106।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-म्रक्षित-दोष-रहितैषणा समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-म्रक्षित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-म्रक्षित-दोष-रहितैषणा समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-म्रक्षित-दोष-रहितैषणा-समिनि-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-म्रक्षित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-म्रक्षित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-म्रक्षित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-म्रक्षित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-म्रक्षित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति म्रक्षित-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।107।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-निक्षिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-निक्षिप्त दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-निक्षिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-निक्षिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-निक्षिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-निक्षिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-निक्षिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-निक्षिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-निक्षिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति निक्षिप्त-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।108।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-पिहित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-पिहित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-पिहित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-पिहित दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-पिहित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-पिहित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-पिहित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्यातनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-पिहित-दोष-रहितेषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-पिहित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति पिहित-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।109।।

ॐ ह्री मनसा कृत-व्यवहरण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित व्यवहरण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-व्यवहरण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-व्यवहरण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-व्यवहरण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-व्यवहरण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-व्यवहरण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-व्यवहरण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-व्यवहरण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति व्यवहरण-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।110।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-दायक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-दायक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-दायक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-दायक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-दायक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-दायक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-दायक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-दायक-दोष रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-दायक-दोष रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति दायक-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।111।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-विमिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-विमिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-विमिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-विमिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-विमिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-विमिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-विमिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-विमिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-विमिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति-विमिश्र दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।112।।

ॐ ह्रीं मनसा कृतापरिणत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारितापरिणत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदितापरिणत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतापरिणत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारितापरिणत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदितापरिणत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतापरिणत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारितापरिणत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदितापरिणत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अपरिणत-दोष-रहितैष्णा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।113।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-लिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ही मनसा कारित-लिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनमा अनुमोदित-लिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत लिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-लिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-लिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-लिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-लिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-लिप्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति लिप्त-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।114।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-छोटित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-छोटिल-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-छोटित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-छोटित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ही वचसा कारित-छोटित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-छोटित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नग ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-छोटित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-छोटित-दोष रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-छोटित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति छोटित-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्राः ।।115।।

ॐ ह्रीं मनसा कृतौद्देशिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारितौद्देशिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदितौद्देशिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृतौद्देशिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारितौद्देशिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदितौद्देशिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृतौद्देशिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारितौद्देशिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदितौद्देशिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति औद्देशिक-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।116।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-साधिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-साधिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-साधिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-साधिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-साधिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-साधिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-साधिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-साधिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-साधिक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति साधिक-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।117।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-पूति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-पूति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-पूति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-पूति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-पूति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-पूति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-पूति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-पूति-दोष-रहिनैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-पूति-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति पूति-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्राः।।118।।

ॐ ही मनसा कृत-प्राभृतक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधौद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ही मनसा कारित-प्राभृतक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ही मनसा अनुमोदित-प्राभृतक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ही वचसा कृत-प्राभृतक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ही वचसा कारित-प्राभृतक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-प्राभृतक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ही वपुषा कृत-प्राभृतक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-प्राभृतक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-प्राभृतक-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति प्राभृतक-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।119।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-मिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-मिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-मिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-मिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-मिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-मिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-मिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-मिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-मिश्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति मिश्र-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मन्त्राः ।।120।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-बलि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-बलि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-बलि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-बलि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-बलि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-बलि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-बलि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-बलि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-बलि-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति बलि-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।121।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-न्यस्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित न्यस्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-न्यस्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-न्यस्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-न्यस्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-न्यस्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-न्यस्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ही वपुषा कारित-न्यस्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-न्यस्त-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति न्यस्त-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।122।।

ॐ ही मनसा कृत-प्रादुष्कार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-प्रादुष्कार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-प्रादुष्कार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-प्रादुष्कार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-प्रादुष्कार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-प्रादुष्कार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।

ॐ ह्री वपुषा कृत-प्रादुष्कार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-प्रादुष्कार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-प्रादुष्कार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति प्रादुष्कार-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मन्त्रा ।।123।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-क्रीत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-क्रीत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-क्रीत-दोष-रहितैषणा समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-क्रीत-दोष-रहितैषणा समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-क्रीत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-क्रीत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-क्रीत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-क्रीत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-क्रीत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।।

इति क्रीत-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।124।।

ॐ ह्री मनसा कृत-प्रामित्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-प्रामित्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदित-प्रामित्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-प्रामित्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-प्रामित्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-प्रामित्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-प्रामित्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-प्रामित्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-प्रामित्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति प्रामित्य-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्राः ।।125।।

ॐ ह्री मनसा कृत-परिवर्तित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-परिवर्तित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-परिवर्तित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-परिवर्तित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-परिवर्तित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-परिवर्तित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-परिवर्तित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-परिवर्तित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-परिवर्तित-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति परिवर्तित-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।126।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-निषिद्ध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-निषिद्ध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-निषिद्ध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-निषिद्ध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-निषिद्ध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-निषिद्ध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-निषिद्ध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-निषिद्ध-दोष रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-निषिद्ध-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति निषिद्ध-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।127।।

ॐ ह्री मनसा कृत-अभिहृत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-अभिहृत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-अभिहृत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-अभिहृत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-अभिहृत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-अभिहृत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-अभिहृत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-अभिहृत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-अभिहृत-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अभिहृत-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।128।।

ॐ ह्री मनसा कृत-उदिभन्न-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-उद्भिन्न-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-उद्भिन्न-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-उद्भिन्न-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-उद्भिन्न-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-उद्भिन्न दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-उद्भिन्न-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-उद्भिन्न-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-उद्भिन्न-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति उद्भिन्न-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।129।।

ॐ ह्री मनसा कृत-अच्छेद्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-अच्छेद्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्यातनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-अच्छेद्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-अच्छेद्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-अच्छेद्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-अच्छेद्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-अच्छेद्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-अच्छेद्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रन-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-अच्छेद्य-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अच्छेद्य-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मन्त्रा ।।130।।

ॐ ह्री मनसा कृत-मालारोहण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-मालारोहण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-मालारोहण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-मालारोहण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषाधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-मालारोहण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-मालारोहण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-मालारोहण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-मालारोहण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-मालारोहण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति माला-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मन्त्रा ।।131।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-अगार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित अगार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-अगार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-अगार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-अगार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-अगार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-अगार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योननाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-अगार-दोष-रहितैषणा-समिनि-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-अगार-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति अगार-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मन्त्राः।।132।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-धूम्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-धूम्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-धूम्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्रीं वचसा कृत-धूम्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-धूम्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-धूम्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-धूम्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्रीं वपुषा कारित-धूम्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ही वपुषा अनुमोदित-धूम्र-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति धूम्र-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मन्त्रा ।।133।।

ॐ ही मनसा कृत-सयोजना-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ही मनसा कारित-सयोजना-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-सयोजना-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ही वचसा कृत-सयोजना-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोष्धोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-सयोजना-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-सयोजना-दोष-रहितैषणा समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-सयोजना-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-सयोजना-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-सयोजना-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति सयोजना-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।134।।

ॐ ह्रीं मनसा कृत-प्रमाणातिक्रमण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्रीं मनसा कारित-प्रमाणातिक्रमण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्रीं मनसा अनुमोदित-प्रमाणातिक्रमण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनायनम ।3।

ॐ ह्री वचसा कृत-प्रमाणातिक्रमण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्रीं वचसा कारित-प्रमाणातिक्रमण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्रीं वचसा अनुमोदित-प्रमाणातिक्रमण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्रीं वपुषा कृत-प्रमाणातिक्रमण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-प्रमाणातिक्रमण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदित-प्रमाणातिक्रमण-दोष-रहितैषणा-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति प्रमाणातिक्रमण-दोष-रहितैषणा समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।135।।

अथ आदान निक्षेपण समिति महाव्रतस्य-जाप्यमत्रा

ॐ ह्री मनसा कृतादाऽननिक्षेपण-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारिताऽदाननिक्षेपण-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमोदिताऽदाननिक्षेपण-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृताऽदाननिक्षेपण-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारिताऽदाननिक्षेपण-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदिताऽदाननिक्षेपण-समिनि-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृताऽदाननिक्षेपण-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारिताऽदाननिक्षेपण-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्रीं वपुषा अनुमोदिताऽदाननिक्षेपण-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति आदान-निक्षेपण समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्राः।।136।।

अथ प्रतिष्ठापन समिति महाव्रतस्य-जाप्यमत्रा

ॐ ह्री मनसा कृत-प्रतिष्ठापन-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।1।।

ॐ ह्री मनसा कारित-प्रतिष्ठापन-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।2।।

ॐ ह्री मनसा अनुमादित-प्रतिष्ठापन-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।3।।

ॐ ह्री वचसा कृत-प्रतिष्ठापन-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।4।।

ॐ ह्री वचसा कारित-प्रतिष्ठापन-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।5।।

ॐ ह्री वचसा अनुमोदित-प्रतिष्ठापन-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्यो तनाय नम ।।6।।

ॐ ह्री वपुषा कृत-प्रतिष्ठापन-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।7।।

ॐ ह्री वपुषा कारित-प्रतिष्ठापन-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।8।।

ॐ ह्री वपुषा अनुमोदित-प्रतिष्ठापन-समिति-महाव्रत-प्रोषधोद्योतनाय नम ।।9।

इति प्रतिष्ठापन समिति महाव्रतस्य जाप्य मत्रा ।।137।।

चौसठ ऋद्धि जाप्य मन्त्रा

1 ॐ ह्रीं केवलज्ञान-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
2 ॐ ह्रीं मन पर्ययज्ञान-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
3 ॐ ह्रीं अवधिज्ञान-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
4 ॐ ह्री कोष्ठस्थधान्योपम-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
5 ॐ ह्री बीजबुद्धि-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
6 ॐ ह्री सभिन्नसश्रोतृत्व-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
7 ॐ ह्री पदानुसारणी-बुद्धिऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
8 ॐ ह्री दूरस्पर्शन-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
9 ॐ ह्री दूरश्रवण ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
10 ॐ ह्री दूरास्वादन-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
11 ॐ ह्री दूरघ्राण-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
12 ॐ ह्री दूरावलोकन-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
13 ॐ ह्री प्रज्ञाश्रमणत्व ऋद्धिधारक मुनीन्द्रभ्यो नम ।
14 ॐ ह्री प्रत्येकवुद्धि-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
15 ॐ ह्री दशपूर्वत्व-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
16 ॐ ह्री चतुर्दशपूर्वत्व-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
17 ॐ ह्री प्रवादित्व ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
18 ॐ ह्री अष्टागमहानिमित्त-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
19 ॐ ह्रीं जघाचारण-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
20 ॐ ह्री अग्निशिखाचारण-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
21 ॐ ह्री श्रेणीचारण-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
22 ॐ ह्री फलचारण-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
23 ॐ ह्री जलचारण-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
24 ॐ ह्री तन्तुचारण-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
25 ॐ ह्रीं पुष्पचारण-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।

26 ॐ ह्रीं बीजांकुरचारण-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
27 ॐ ह्रीं नभचारण-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
28 ॐ ह्रीं अणिमा-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
29 ॐ ह्रीं महिमा-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
30 ॐ ह्रीं लघिमा-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
31 ॐ ह्रीं गरिमा-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
32 ॐ ह्रीं मनोबल-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
33 ॐ ह्रीं वचनबल-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
34 ॐ ह्रीं कायबल-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
35 ॐ ह्री कामरूपित्व-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
36 ॐ ह्री वशित्व-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
37 ॐ ह्री ईशत्च-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
38 ॐ ह्री प्राकाम्य-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
39 ॐ ह्री अन्तर्धान-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
40 ॐ ह्री आप्ति-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
41 ॐ ह्री अप्रतिघात-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
42 ॐ ह्रीं दीप्ति-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
43 ॐ ह्री तप्त-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
44 ॐ ह्री महोग्रतप-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
45 ॐ ह्री घोरतप-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
46 ॐ ह्री घोरपराक्रम-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
47 ॐ ह्री महाघोर-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
48 ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचर्य-ऋद्धि धारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
49 ॐ ह्रीं आमर्शौषधि-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
50 ॐ ह्रीं सर्वौषधि-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
51 ॐ ह्रीं आशीविष-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
52 ॐ ह्रीं दृष्टिविष (दृष्टिनिर्विष)-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
53 ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।

54 ॐ ही विडौषधि-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
55 ॐ हीं जल्लौषधि-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
56 ॐ हीं मलौषधि-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
57 ॐ हीं आशीविषरस-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
58 ॐ हीं दृष्टिविषरस-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
59 ॐ ही क्षीरस्रावी-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
60 ॐ हीं घृतस्रावी-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
61 ॐ ही मधुस्रावी-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
62 ॐ ही अमृतस्रावी-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
63 ॐ ही अक्षीणसवास-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।
64 ॐ ही अक्षीणमहानस-ऋद्धिधारक मुनीन्द्रेभ्यो नम ।

जिनगुण सपत्तिव्रतस्य जाप्य मत्रा

षोडश कारण भावना

ॐ ह्रा ही हू हौ ह अ सि आ उ सा दर्शन-विशुद्धि-भावनायै जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।1।।

ॐ ह्रा ही हू हौ ह अ सि आ उ सा विनय-सपन्नता-भावनायै जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।2।।

ॐ ह्रा ही हू हौ ह अ सि आ उ सा शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।3।।

ॐ ह्रा ही हू हौ ह अ सि आ उ सा अभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग-भावनायै जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।4।।

ॐ ह्रा ही हू हौ ह अ सि आ उ सा सवेग-भावनायै जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।5।।

ॐ ह्रा हीं हू हौं ह अ सि आ उ सा शक्तितस्त्याग-भावनायै जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।6।।

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा शक्तितस्तपोभावनायै जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।7।।

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा साधुसमाधि-भावनायै जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।8।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा वैयावृत्यकरण-भावनायै जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।9।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा अर्हद्भक्ति-भावनायै जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।10।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा आचार्य-भक्ति-भावनायै जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।11।।

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा बहुश्रुत-भक्ति-भावनायै जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।12।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा प्रवचन-भक्ति-भावनायै जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।13।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा आवश्यकापरिहाणि-भावनायै जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।14।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा मार्गप्रभावना-भावनायै जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।15।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा प्रवचन-वत्सलत्व-भावनायै जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।16।।

पचकल्याणकार्थ पच जाप्य मत्रा

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा गर्भकल्याणक जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।1।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा जन्मकल्याणक जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।12।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा परिनिष्क्रमणकल्याणंक जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।3।।

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा केवलज्ञानकल्याणक जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।4।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा निर्वाणकल्याणक जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।5।।

अष्ट प्रातिहार्यार्थ अष्ट जाप्य मत्रा

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा अशोकवृक्ष-महाप्रातिहार्य जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।1।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा सुरपुष्पवृष्टि-महाप्रातिहार्य जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।2।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा दिव्यध्वनि-महाप्रातिहार्य जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपाये नम ।।3।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ मा चतुष्षष्टिचमर-महाप्रातिहार्य जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपाये नम ।।4।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा सिहासन-महाप्रातिहार्य जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।5।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा भामडल-महाप्रातिहार्य जिनगुणसपद-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।6।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा देवदुदुभि-महाप्रातिहार्य जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।7।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा छत्रत्रय-महाप्रातिहार्य जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।8।।

जन्मातिशयार्थ दश जाप्य मत्रा

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा नि स्वेदत्व-सहजातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।1।।

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा निर्मलत्व-सहजातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।2।।

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा क्षीरगौररुधिरत्व-सहजातिशय जिनगुणसपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।3।।
ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा समचतुरस्रसस्थान-सहजातिशय जिनगुणसपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।4।।
ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा सौरूप्य-सहजातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।5।।
ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा सौगन्ध्य-सहजातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।6।।
ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा सौलक्षण्य-सहजातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।7।।
ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा अप्रमितवीर्य-सहजातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।8।।
ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा प्रियहितवचनत्व-सहजातिशय जिनगुणसपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।9।।

केवलज्ञानातिशयार्थ दश जाप्य मत्रा

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा गव्यूतिशतचतुष्टय-सुभिक्षत्व-घातिक्षयजातिशय जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।1।।
ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा गगन गमनत्व-घातिक्षयजातिशय जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।2।।
ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा अप्राणिवधत्व-घातिक्षयजातिशय जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।3।।
ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा भुक्त्याभाव-घातिक्षयजातिशय जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।4।।
ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा उपसर्गाभाव-घातिक्षयजातिशय जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।5।।
ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा चतुर्मुखदर्शत्व-घातिक्षयजातिशय जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।6।।

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा सर्वविद्येश्वरत्व-घातिक्षयजातिशय जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।7।।

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा अच्छायत्व-घातिक्षयजातिशय जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।8।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा अपक्ष्मस्पदत्व-घातिक्षयजातिशय जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।9।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा सम-प्रसिद्ध-नखकेशत्व-घातिक्षयजातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।10।।

देवकृत अतिशयार्थ चतुर्दश जाप्य मत्रा

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा सर्वार्धमागधीयभाषा-देवोपनीतातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नम ।।1।।

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा सर्नभूतमैत्रीभाव-देवोपनीतातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।2।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा सर्वऋतुफलादिशोभित तरु-देवोपनीतातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।3।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा दर्पणतलवत्रत्नमयी-पृथ्वी-देवोपनीतातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।4।।

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा मदसुगधितपवनत्व-देवोपनीतातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।5।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा सर्वजन-परमानन्दत्व-देवोपनीतातिशय जिनगुणसपदे-'मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।6।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा वायुकुमारोपशमित-धूलि कटककादि-देवोपनीतातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।7।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा मेघकुमारकृत-गन्धोदकवृष्टि-देवोपनीतातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।8।।

ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा पादन्यस्तहेमपद्मानि-देवोपनीतातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।9।।

ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा फलभारनम्रशालि-जिनविहरणत्व-देवोपनीतातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।10।।
ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा शरत्कालवन्निर्मल-गगनत्व-देवोपनीतातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।11।।
ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा सर्वदशदिशि-निर्मलत्व-देवोपनीतातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।12।।
ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौं ह्र अ सि आ उ सा जयजयरव-गुञ्जायमान-आकाश-देवोपनीतातिशय जिनगुणसपदे-मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।13।।
ॐ ह्रा ह्रीं ह्रू ह्रौ ह्र अ सि आ उ सा धर्मचक्र-चतुष्टय-देवोपनीतातिशय-जिनगुणसपदे मुक्तिपद-कारणस्वरूपायै नम ।।14।।

श्रुतस्कध व्रत जाप्य मत्रा·

मतिज्ञान के 28 मत्र

ॐ ही अर्हं मानस-अवग्रह-मतिज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं मानस-ईहा-मतिज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं मानस-अवाय-मतिज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं मानस-धारणा-मतिज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज-ईहा-मतिज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज-अवाय-मतिज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज-धारणा-मतिज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-ईहा-मतिज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-अवाय-मतिज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-धारणा-मतिज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-ईहा-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-अवाय-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-धारणा-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष-अवग्रह-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष-ईहा-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष-अवाय-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्री अर्हं चाक्षुष-धारणा-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्री अर्हं श्रोत्रज-ईहा-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्री अर्हं श्रोत्रज-अवाय-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्री अर्हं श्रोत्रज-धारणा-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्री अर्हं स्पर्शनेन्द्रिय-व्यजन-अवग्रह-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्री अर्हं रसनेन्द्रिय-व्यजनावग्रह-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्री अर्हं घ्राणेन्द्रिय-व्यजनावग्रह-मतिज्ञानाय नम

ॐ ह्री अर्हं श्रोत्रेन्द्रिय-व्यजनावग्रह-मतिज्ञानाय नम

11 अगरूप श्रुतज्ञान के 11 मंत्र

ॐ ह्री अर्हं आचाराग-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्री अर्हं सूत्रकृताग-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्री अर्हं स्थानाग-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं समवायाग-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्री अर्हं व्याख्याप्रज्ञप्ति-अग-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्री अर्हं ज्ञातृधर्मकथाग-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं उपासकाध्ययन-अग-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं अतकृत-दशाग-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तरौपपादिक-दशाग-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं प्रश्नव्याकरणाग-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं विपाकसूत्राग-श्रुतज्ञानाय नम

परिकर्म के 2 भेद के 2 मत्र

ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिवाद-प्रथम-अवयवपरिकर्मणे नम

ॐ ही अर्हं परिकर्म-अतर्गत-चद्रप्रज्ञप्ति-जबूद्वीपप्रज्ञप्ति- द्वीपसागर-प्रज्ञप्ति-व्याख्याप्रज्ञप्तिनाम-पचविध-परिकर्म- श्रुतज्ञानेभ्यो नम

सूत्र के 88 भेद के 88 मत्र

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपाप-कर्तृत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपाप-फलभोक्तृत्व-प्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ही अर्हं सर्वगतत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ही अर्हं चेतनत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ही अर्ह अमूर्तत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्ह मूर्तत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ही अर्ह अशब्दत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ही अर्हं अगधत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं अरूपत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं अस्पर्शत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं अरसत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं जीवहेतुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं स्वीकृतदेह-प्रमाणत्व-प्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ही अर्हं अससारत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं ऊर्ध्वगतिशीलत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं परिणामिकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं बहिरात्मप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अतरात्मप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं पचब्रह्ममयत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिरूपत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं उपयोगधर्म-प्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं उपयोगित्व-प्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं त्रैरूप्यधर्म-प्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं जीवास्तित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं जीवानास्तित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं नीवैकत्व-प्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं जीवानेकत्व-प्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं जीवनित्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं जीवानित्यप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्ह वाच्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं अवाच्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं हेतुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं अहेतुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं कार्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं अकार्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं वस्तुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं अवस्तुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम्
ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अद्रव्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं बधत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अबधत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तत्त्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अमुक्तत्त्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं भव्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अभव्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं प्रमेयत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं प्रमाणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमाणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं प्रमातृत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमातृत्वप्रकाशक सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं प्रमितित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमितित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं कर्तृत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अकर्तृत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं कर्मत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अकर्मत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं करणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं अकरणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं सप्रदानत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं असप्रदानत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अपादानत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अनपादानत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं सबधत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं असबधत्वप्रकाशक-सुत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अधिकरणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अनधिकरणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं क्रियात्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अक्रियात्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं विशेषणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अविशेषणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं विशेष्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अविशेष्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं भावस्य भावशक्तित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्ह भावस्याभावशक्तित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं भूत कार्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्री अर्हं अव्यापकत्वनिषेधप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्री अर्हं व्यापकत्वनिषेधप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्री अर्हं अचेतनत्वनिषेधप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्री अर्ह अगुष्ठमात्रकत्वनिषेधप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्री अर्ह श्यामकप्रमाणनिषेधकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थत्वप्रमाणनिषेधकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं निरन्वय-क्षणिकनिषधकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अद्वैत एकान्त-निषेधकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं असर्वज्ञत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्री अर्हं क्रम-अक्रम-अनेकातप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नम

प्रथमानुयोग का एक मत्र

ॐ ह्रीं अर्हं प्रथमानुयोग-श्रुतज्ञानाय नम

चौदह पूर्व के 14 मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं उत्पादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अग्रायणीयपूर्व-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं वीर्यानुप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अस्ति-नास्तिपूर्व-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं सत्यप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं आत्मप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं कर्मप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्याख्यानपूर्व-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं विद्यानुवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं कल्याणानुप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ही अर्हं प्राणावायपूर्व-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं क्रियाविशालपूर्व-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं लोकबिदुसारपूर्व-श्रुतज्ञानाय नम

पाँच चूलिका के 5 मत्र

ॐ ह्रीं अर्हं जलगताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं स्थलगताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं मायागताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं रूपगताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं आकाशगताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नम

अवधिज्ञान के 6 मत्र

ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमान-अवधिज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं हीयमान-अवधिज्ञानाय नम

ॐ ह्रीं अर्हं अवस्थितमान-अवधिज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अनवस्थित-अवधिज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अनुगामी-अवधिज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं अननुगामी-अवधिज्ञानाय नम

मन पर्याय के 2 मत्र

ॐ ह्रीं अर्हं ऋजुमतिमन पर्ययज्ञानाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं विपुलमतिमन पर्ययज्ञानाय नम

केवलज्ञान का एक मत्र

ॐ ही अर्हं केवलज्ञानाय नम

पाँच ज्ञानों के पृथक-पृथक मत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविशति मतिज्ञानेभ्यो नम
ॐ ह्रीं अर्हं द्विविधपरिकर्मभ्यो नम
ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाशीतिसूत्रेभ्यो नम
ॐ ही अर्हं प्रथमानुयोगाय नम
ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वेभ्यो नम
ॐ ही अर्हं पचचूलिकाभ्यो नम
ॐ ह्रीं अर्हं षिड्वध-अवधिज्ञानेभ्यो नम
ॐ ह्रीं अर्हं द्विविधमन पर्ययज्ञानेभ्यो नम
ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानाय नम

सोलहकारण भावना मंत्राः

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शन-विशुद्धि-भावनायै नम
ॐ ह्रीं अर्हं विनय-सपन्नता-भावनायै नम
ॐ ह्रीं अर्हं शीलव्रतेष्वनतिचार-भावनायै नम
ॐ ह्रीं अर्हं अभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग-भावनायै नम
ॐ ह्रीं अर्हं सवेग-भावनायै नम
ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्त्याग-भावनायै नम
ॐ ह्री अर्हं शक्तितस्तपोभावनायै नम
ॐ ह्री अर्हं साधुसमाधि-भावनायै नम
ॐ ह्रीं अर्हं वैयावृत्यकरण-भावनायै नम
ॐ ह्री अर्हं अर्हद्भक्ति-भावनायै नम
ॐ ह्री अर्हं आचार्य-भक्ति-भावनायै नम
ॐ ह्री अर्हं बहुश्रुत-भक्ति-भावनायै नम
ॐ ह्री अर्हं प्रवचन-भक्ति-भावनायै नम
ॐ ह्री अर्हं आवश्यकापरिहाणि-भावनायै नम
ॐ ह्री अर्ह मार्गप्रभावना-भावनायै नम
ॐ ह्री अर्हं प्रवचन-वत्सलत्व-भावनायै नम

सदर्भ ग्रन्थ सूची

1 कृति अक्षय निधि कथा पूजा
प्रकाशक आर्यिका धर्ममति राजमति पुस्तकालय दि जैन मंदिर प लूणकरण सिह रास्ता ठाकुर पचेवर जयपुर-3

2 कृति आचार्य धर्मसागर अभिनदन ग्रन्थ
प्रकाशक श्री दि जैन नवयुवक मडल कलकत्ता सन् 1982 ई

3 कृति आरोग्य आपका

4 कृति आष्टाह्निक व्रतोद्यापन
लेखक श्री कल्याण कुमार जैन शशि
प्रकाशक सरल जैन ग्रन्थ भण्डार जबलपुर वी स 2508

5 कृति कर्मदहन विधान
प्रकाशक सेठी बधु श्री वीर पुस्तक मदिर महावीर जी (राज)

6 कृति कर्म निर्झर व्रत पूजा
लेखक गुलाबचन्द्र जैन दर्शनाचार्य
प्रकाशक वीर पुस्तक भण्डार जयपुर स 2039

7 कृति क्रिया कोश
लेखक श्री कवि किशन सिह
प्रकाशक श्री परमयुत प्रभावक मडल अगास वि स 2041

8 कृति कुदरती उपचार

9 कृति काजिका द्वादशी व्रतोद्यापन
प्रकाशक वीर पुस्तक भण्डार मनिहारो का रास्ता जयपुर-3

10 कृति गणधर वलय विधान
लेखक आर्यिकारत्न ज्ञानमति
प्रकाशक दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध सस्थान हस्तिनापुर (मेरठ) उ प्र वी नि स 2525

11 कृति चतुर्विंशति विधान
लेखक कवि रामचन्द्र जी
प्रकाशक नेमिचन्द्र बाकलीवाल किशनगढ (राज)

12 कृति चारित्र शुद्धि विधान
प्रकाशक आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थमाला जैन मदिर गुलाब वाटिका लोनी रोड गाजियावाद (उ प्र)

13 कृति चारित्र सार
लेखक प लालाराम जी
प्रकाशक नेमचन्द्र सर्राफ बड़ौत (मेरठ)
14 कृति चौसठ ऋद्धि विधान
प्रकाशक दिगम्बर जैन पुस्तकालय गाधी चौक सूरत (अहमदाबाद)
15 कृति जैन पूजा पाठ सग्रह
प्रकाशक जैन पुस्तक भवन कलकत्ता
16 कृति जैन पूजा पाठ सग्रह
प्रकाशक दि जैन मंदिर गोपालवाडी जयपुर (राज)
17 कृति जैनेन्द्र कथा कोश
लेखक प वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री
18 कृति जैन व्रत कथा सग्रह
सपादक स्व प वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री
प्रकाशक मदन मजरी वर्धमान शास्त्री सोलापुर-3 सन 1983 ई
19 कृति जैन व्रत विधान सग्रह
सकलन प बारेलाल जैन राजवैद्य टीकमगढ
प्रकाशक सिघई भगवानदास कुदनलाल जैन अटारी वाले वी नि स 2478
20 कृति जैन व्रत विधान सग्रह
प्रकाशक शैलेष भाई डाह्या भाई कापडिया विजय जैन प्रिटिग प्रेस गाधी चौक सूरत सवत 2047
21 कृति जैन व्रत विधि
प्रकाशक श्रीमती निर्मला जन प्ला न 9335 गोविन्द पथ किसान मार्ग वरकत नगर जयपुर सन 1993 ई
22 कृति जैनेन्द्र सिद्धात कोश
लेखक क्षु जिनेन्द्र वर्णी
प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली सन 1988 ई
23 कृति दशलक्षण मडल विधान
प्रकाशक वीर पुस्तक भण्डार जयपुर मनिहारों का रास्ता जयपुर-3 भाद्रपद स 2038
24 कृति The Hygenic system

25 कृति नदीश्वर द्वीप पूजन विधान
लेखक स्व श्री रविलाल
प्रकाशक शाति सेवा सघ श्री 1008 दि जैन सिद्ध क्षेत्र बडागाव (धसान) टीकमगढ (म प्र) वि स 2048 वी नि स 2517
26 कृति णमोकार पैंतीसी विधान
प्रकाशक जैन साहित्य सदन लाल मदिर दिल्ली वीर नि स 2508
27 कृति णमोकार मत्र का माहात्म्य तथा जिनगुण सपत्ति मत्र
प्रकाशक श्री सेठ मगलचन्द्र पाडया हैदराबाद।
28 कृति पचकल्याणक विधान
प्रकाशक जैन पुस्तक भवन कलकत्ता
29 कृति पचपरमेष्ठी विधान
प्रकाशक जैन पुस्तक भवन कलकत्ता
30 कृति पातजलि योगदर्शन
लेखक श्री पातजलि
31 कृति पुरुषार्थसिदध्युपाय
लेखक आचार्य अमृतचन्द्र स्वामी
प्रकाशक भारतीय अनेकात विद्वत परिषद सन 1995 ई
32 कृति Fasting can save your life
33 कृति भगवान महावीर और उनका तत्त्वदर्शन
प्रकाशक श्री पारस दास श्रीपाल जैन मोटर वाले श्यामा प्रसाद मुखर्जी मार्ग दिल्ली-6 सितम्बर 1973 ई
34 कृति महावीर कीर्तन
सपादक प भैरव लाल सेठी न्यायतीर्थ
प्रकाशक **गजेन्द्र ग्रन्थमाला** 2578 धर्मपूरा दिल्ली-110006
35 कृति रत्नकरण्डक श्रावकाचार
लेखक आचार्य समतभद्र हिन्दी- प सुखदास जैन
प्रकाशक जैन पुस्तक भवन कलकत्ता
36 कृति रत्नत्रय विधान
प्रकाशक वीर पुस्तक भण्डार मनिहारों का राम्ता जयपुर-3
37 कृति रविवार व्रत विधान
प्रकाशक दिगम्बर जैन पुस्तकालय गाधी चौक सूरत (अहमदावाद)

38 कृति लब्धि विधान
लेखक कवि श्रीचन्द्र
प्रकाशक वीर पुस्तक भण्डार मनिहारों का रास्ता जयपुर-3
39 कृति वर्धमान पुराण
लेखक कविवर श्री नवलशाह
40 कृति व्रत कथा कोष
अनु सग्रह गणधराचार्य कुथुसागर
प्रकाशक श्री दि जैन कुथु विजय ग्रथमाला समिति जयपुर(राज)
41 कृति व्रत तिथि निर्णय
लेखक डॉ नेमिचन्द्र शास्त्री ज्योतिषाचार्य
प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ बनारस सन 1956 ई
42 कृति व्रत विधि एव पूजा
लेखक आर्यिका ज्ञानमति
प्रकाशक दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध सस्थान हस्तिनापुर (मेरठ) उ प्र वी नि स 2516
43 कृति वसुनन्दि श्रावकाचार
लेखक आचार्य वसुनन्दि
प्रकाशक अनेकात विद्वत परिषद सन 1989-90 ई
44 कृति वृन्दावन चौबीसी पाठ
प्रकाशक जैन पुस्तक भवन महात्मागाधी रोड कलकत्ता
45 कृति श्रावकाचार सग्रह
स व अनु प हीरालाल जी
प्रकाशक जैन सस्कृति सरक्षक सघ सोलापुर (महा) सन 1976 ई
46 कृति शिखर सम्मेद विधान
प्रकाशक सेठी बधु श्री वीर पुस्तक मदिर महावीर जी (राज)
47 कृति सन्मार्ग दैनिक 4 अगस्त 1989 व्रत पर्व त्योहार विशेषाक
प्रकाशक सन्मार्ग दैनिक कार्यालय वाराणसी
48 कृति समवशरण विधान
प्रकाशक मोहन लाल जी शास्त्री जवाहरगज जबलपुर
49 कृति सर्वार्थ सिद्धि
लेखक आचार्य पूज्यपाद स्वामी सपा -प फूलचन्द्र जी
प्रकाशक भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली सन् 1983 ई

50 कृति सर्वोदयी जैन तत्र
लेखक डॉ नदलाल जैन
प्रकाशक पोतदार ट्रस्ट टीकमगढ (म प्र)
51 कृति सागार धर्मामृत
लेखक प आशाधर जी अनु - आर्यिका सुपार्श्वमति
प्रकाशक भारतीय अनेकात विद्वत् परिषद सोनागिर सन 1990 ई
52 कृति सस्कृत वागमय शब्द कोश परिच्छेद खण्ड पूर्वार्द्ध
53 कृति सुगध दशमी व्रत कथा
प्रकाशक जैन साहित्य सदन श्री दि० जैन लाल मदिर दिल्ली
54 कृति सुदृष्टि तरगणी
सकलन प टेकचन्द्र जी
प्रकाशक श्रीमती सतोष वाला जैन 1 सी/ 47 न्यू रोहतक रोड नई दिल्ली-5 सन 1998 ई
55 कृति हरिवश पुराण
लेखक आचार्य जिनसेन सपा व अनु - डॉ पन्नालाल जैन
प्रकाशक जैन साहित्य सदन चादनी चौक दिल्ली सन 1994 ई
56 कृति त्रिलोक तीज व्रत पूजा तीन चौबीसी
प्रकाशक वीर पुस्तक भण्डार मनिहारों का रास्ता जयपुर 3

सक्षिप्तिका

आ ध अ ग्र	आचार्य धर्मसागर अभिनदन ग्रन्थ
क्रि को	क्रियाकोश
व्र वि स	व्रत विधान सग्रह
जै व्र वि स	जैन व्रत विधान सग्रह
व्र क को	व्रत कथा कोश
जै व्र ति नि	जैन व्रत तिथि निर्णय
स वा श को परि ख पू	सस्कृत वागमय शब्द कोश परिच्छेद खण्ड पूर्वार्द्ध
ह पु	हरिवश पुराण
सु त	सुदृष्टि तरगणी
जै व्र वि	जैन व्रत विधि